द्वितीय अंक | वर्ष 2023-24

नागकेसर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी),
त्रिपुरा, अगरतला

हरा शाही कबूतर

हरा शाही कबूतर (ग्रीन इम्पीरियल पिजन) त्रिपुरा का राजकीय पक्षी है। यह एक बड़ा वन कबूतर है। इसकी पीठ, पंख और पूँछ धात्विक हरे रंग के होते हैं। पक्षी की आवाज़ गहरी होती है और गूँजती भी है।

यह वन प्रजाति है। जोकि नेपाल और भारत से पूर्व इण्डोनेशिया तक उष्णकटिबंधीय दक्षिणी एशिया में व्यापक रूप से निवास करने वाला एक प्रजनन पक्षी है। इसकी कई उप-प्रजातियाँ हैं, जिनमें विशिष्ट सेलेब्स फॉर्म, चेस्टनट-नेप्ड शाही कबूतर (ड्रुकुला एनेया पॉलिना) शामिल हैं। यह एक पेड़ पर पर्णवृंतों का घोंसला बनाता है।

नागकेसर

द्वितीय अंक | वर्ष 2023-24

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला

नागकेसर

द्वितीय अंक

प्रधान संरक्षक

श्री हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार

मुख्य संरक्षक

श्री राहुल कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
श्री पी. वी. चन्द्रशेखर, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
श्री ललित कुमार विमल, उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

संपादन परामर्शदाता

श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती अनिंदिता धर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मण्डल

श्री ऊदल सिंह सोलंकी, हिन्दी अधिकारी
श्री अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
श्री कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ छायाचित्र

पार्थसारथी चक्रवर्ती

संपादकीय

राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्त्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला की संयुक्त हिन्दी गृह-पत्रिका 'नागकेसर' का द्वितीय अंक (मार्च 2024) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'नागकेसर' पत्रिका के आवरण पृष्ठ और पार्श्व पृष्ठ राज्य की सांस्कृतिक विरासत, कला और नृत्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की झलकियाँ प्रदर्शित करते हैं और इनसे संबंधित महत्वपूर्ण संक्षिप्त विवरण भी दर्शाते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर जहाँ विचारों की सहज और सुन्दर अभिव्यक्तियों से युक्त रचनायें हैं तो वहीं दूसरी ओर वात्सल्य, त्याग, स्नेह और प्रेरणा की प्रतिमूर्ति हम सब की प्यारी माँ का सजीव चित्रण है। अगरतला का अनुभव, राजस्थान, धनुषकोडी, मेघालय और बिहार के राजगृह के वर्णन अत्यंत सजीव बन पड़े हैं। अस्तित्ववाद, अब क्या करें, चिंता और चिंतन, जीवन की

दो सीख इत्यादि लेख जीवन दर्शन के द्योतक हैं। मेरी ख़ुशीः खिड़की पर दस्तक जैसा लेख प्रकृति से जुड़े रहकर बहुत कुछ सीखने एवं हर स्थिति में प्रसन्नचित्त रहते हुए जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देता है।

संपादक मण्डल और संरक्षक मण्डल दोनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनायें अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी 'नागकेसर' पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन कर राजभाषा के विकास में अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	जीवन की दो सीख	अनिन्दिता धर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	लेख	1-3
2.	अगरतला का मेरा प्रथम अनुभव	अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	लेख	4-12
3.	नन्हा-मुन्ना राही हूँ	अमर आनंद मिंज, कनिष्ठ अनुवादक	लेख	13-16
4.	नॉन-वेज के प्रति आकर्षण	अमित गौरव, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	17-19
5.	माँ	आशीष कुमार गुप्ता, एमटीएस	लेख	20-23
6.	चिंता और चिंतन	आशीष वर्मा, लेखाकार	लेख	24-25
7.	भारतीय भाषाओं की लिपियाँ	ऊदल सिंह सोलंकी, हिन्दी अधिकारी	लेख	26-28
8.	अस्तित्ववाद	कुलदीप, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	29-32
9.	अब क्या करें!	कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	लेख	33-36
10.	मेरी रेल यात्रा	गौतम कुमार, लेखाकार	लेख	37-40
11.	धनुषकोडीः एक परित्यक्त शहर	गौतम सरकार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	41-43
12.	मेघालय की यात्रा	नवदीप राय, एमटीएस	लेख	44-46
13.	विश्व परिप्रेक्ष्य में भारत में बर्डवॉचिंग का इतिहास	पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	निबंध	47-51
14.	राजस्थान और पर्यटन	प्रधान चौधरी, एमटीएस	निबंध	52-56

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
15.	जब अम्मा बीमार होती हैं	प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	कविता	57-58
16.	भारतीय नारी	बिपाशा सरकार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	59-61
17.	संगीतीय उपचार पद्धति	बिल्टू साहा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	62-64
18.	उद्यमशीलताः समय की आवश्यकता	राकेश चंद्र श्रीवास्तव, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	65-66
19.	बदलते परिवेश में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की भूमिका	राजीव कुमार, लेखाकार	लेख	67-69
20.	बचपन की यादें	रोहित कुमार, एमटीएस	लेख	70-72
21.	बुढ़ापे की विपदा	विशाखा, लेखाकार	कविता	73-74
22.	चैट जीपीटी	शान्तनु कुमार, डीईओ	लेख	75-82
23.	राजस्थान के मंदिर	सुनिल बगड़िया, लिपिक	लेख	83-88
24.	शिक्षा का उद्देश्य	सूरज किशोर, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	89-90
25.	कुशल मंगल	स्वाती कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	91-96
26.	मेरी ख़ुशीः खिड़की पर दस्तक	हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार	लेख	97-100
27.	राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान			101-106
28.	जाने वो कौन सा देस, जहाँ तुम चले गए	प्रियदर्शिनी सिंह, हिन्दी अधिकारी	लेख	107-110
29.	भावभीनी श्रद्धांजलि			111-115
30.	कार्यालय में आयोजित पिकनिक की झलकियाँ			116-118

अस्वीकरणः 'नागकेसर' पत्रिका की रचना राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से की गयी है। इसमें निहित लेख, कविताओं इत्यादि में अभिव्यक्त विचार, सुझाव मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय अथवा संपादक मण्डल इनसे सहमत हो।

संपादन सहयोग

श्रीमती स्वाती कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला

श्री आशीष वर्मा, लेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला

श्री शान्तनु कुमार, डीईओ, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला

जीवन की दो सीख

अनिन्दिता धर,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

यूरोप का एक देश जो विश्व में सबसे ज्यादा खुश रहने वाले देश के तौर पर माना जाता है, वहाँ के बारे में जानकर मुझे एक बेहतरीन अहसास हुआ। उस देश का नाम है- नार्वे। यह वहाँ के एक रेस्टोरेन्ट की कहानी है।

रेस्टोरेन्ट के काउन्टर पर एक आदमी आया और बोला "एक कॉफी और सस्पेन्शन" उसके बाद उन्होंने टेबल पर बैठकर एक कॉफी पी और चले गये। थोड़ी देर बाद एक सज्जन और आये तथा दो लंच पैकेट {दो सस्पेन्शन} के लिए ऑर्डर किया और दो लंच पैकेट लेकर चले गये। उसके पश्चात् एक पुरुष और महिला काउन्टर पर जाकर बोले "दो कॉफी दो स्प्रिंगरोल और दो सस्पेन्शन" वे दोनों भी एक-एक स्प्रिंग रोल खाकर और कॉफी पीकर चले गए। थोड़ी देर बाद एक बुजुर्ग आए और काउन्टर पर जाकर पूछा- क्या आज कोई लंच सस्पेन्शन में है? काउन्टर वाले ने तुरंत उन्हें एक लंच का पैकेट और एक पानी की बोतल दे दी, इसके बाद एक आदमी ने आकर काउन्टर पर पूछा कि क्या आज सस्पेन्शन में कॉफी है? काउन्टर से बोला गया 'बिल्कुल है' और उन्हें गरमागरम कॉफी दी गयी। ये सिलसिला पूरे दिन चलता रहा। कुछ लोग अपने रोजगार से कुछ बेरोजगारों के खिलाने के लिए पैसा भर रहे थे और कुछ गरीब लोग बिना पैसे के खाना खाकर जी रहे थे लेकिन कोई एक दूसरे से परिचित नहीं था न देने वाला और न ही खाने वाला। देनेवाला सिर्फ ये चाहता है कि कुछ भूखे और जरुरतमंद की भूख और प्यास मिट जाए और वह भी किसी के जाने बगैर। नार्वे की दिखाई गयी ये मानसिकता की महान सीख यूरोप के दूसरे

देश भी अपनाने लगे हैं। उम्मीद है कि एक दिन हमारे देश में भी ऐसा दृश्य देखने को मिलेगा। यह चित्र नार्वे के हर होटल और रेस्टोरेंट का है।

दूसरा अनुभव

एक दिन मैं दमदम से हावड़ा जाने वाली थी, तो बस में चढ़ गयी लेकिन इतनी अधिक भीड़ देखकर बहुत ही घबरा गई। एक भी सीट खाली नहीं थी, लग रहा था कि इतनी दूर खड़े होकर ही जाना पड़ेगा। इतने में एक आदमी के उठ जाने से एक सीट खाली हो गयी, उस सीट के बगल में एक आदमी खड़ा था, वह आसानी से उस सीट पर बैठ सकता था। पर वह खुद न बैठकर उसने उस सीट को मुझे दे दिया, फिर मैंने दिल से उनको धन्यवाद दिया। मुझे यह भी लगा कि मैं एक औरत हूँ, इसलिए उसने मुझे सीट दे दी कुछ देर बाद एक सीट और खाली हो गयी और इस बार भी उसने बिल्कुल पास होने के बावजूद भी उस सीट को किसी और को दे दिया जबकि भीड़ में कोई और महिला भी नहीं थी। मैंने उसको गौर से देखा, देखने से वह एक साधारण मजदूर लग रहा था। इसके बाद और दो बार ऐसा ही हुआ कि वे पास थे लेकिन सीट खाली होने पर खुद न बैठकर वह सीट किसी अन्य को दे रहे थे। यह देखकर मुझे उनसे पूछे बिना नहीं रहा गया। मैंने पूछ ही लिया कि जब भी आपको बैठने का मौका मिल रहा था तो आप वह सीट दूसरों को क्यों दे रहे थे। आपका भी तो सफर लम्बा है फिर आप ऐसा क्यों कर रहे हैं। उन्होंने हँस कर कहा कि मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूँ इसलिए ज्यादा जानता भी नहीं हूँ।

मेरे पास ज्यादा पैसा भी नहीं है ताकि मैं किसी को दे सकूँ। पर यह मेरे बस में है, जो मैं हर रोज कर सकता हूँ। मैं मजदूर हूँ इसीलिए मैं लम्बे सफर में भी बैठे बिना सहन कर सकता हूँ। मैंने आपके लिए सीट छोड़ दी और आपने मुझे धन्यवाद दिया। इससे मुझे एक संतुष्टि मिली कि मैं किसी के लिए कुछ कर सका। कई लोग तो कुछ बोलते भी नहीं, फिर भी मुझे

संतुष्टि मिलती है। मैं रोज यह करता हूँ और संतुष्टि के साथ सहज होकर घर लौटता हूँ। मेरी जुबान पर उसके लिए कोई शब्द नहीं था।

किसी दूसरे के लिए रोज कुछ न कुछ करना यह ही एक तरह से विशेष है। यह काम सही मायने में अनमोल है। इस अनजान व्यक्ति ने मुझे समझा दिया कि कितनी आसानी से आदमी अपने आप को धनी और सुखी बना सकता है जो सुख कोई उससे छीन नहीं सकता है। लोग पैसा, बंगला, महंगी गाड़ी से अमीर तो बन सकते हैं, लेकिन किसी को कुछ देने से ही सच्ची संतुष्टि मिलती है।

गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर सेवानिवृत्त कार्मिकों द्वारा ध्वजारोहण की कुछ झलकियाँ

अगरतला का मेरा प्रथम अनुभव

अनिल कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

मुख्यालय, नई दिल्ली से मेरे स्थानांतरण की सूचना जैसे ही प्राप्त हुई कि मेरा स्थानांतरण अगरतला हो गया है, यह सुनकर मेरे ऊपर मानो वज्रपात हो गया हो, क्योंकि मुझे इस प्रकार इतने सुदूर स्थान पर स्थानांतरण की बिल्कुल आशा नहीं थी। अगरतला, त्रिपुरा राज्य की राजधानी है और पूर्वोत्तर राज्यों में सुदूर स्थल पर स्थित है। हालांकि पूर्व में वायु सेना में सेवा करते हुए मैंने पूर्वोत्तर राज्यों में भी अपनी सेवायें दी थी, और इन राज्यों के वातावरण से भलीभाँति परिचित था, परंतु अगरतला का अनुभव पहली बार होने जा रहा था। मेरे स्थानांतरण की सूचना पूरे कार्यालय में दावाग्नि की तरह फैल गई। लोग आपस में फुसफुसाहट करने लगे कि अगरतला सुरक्षित जगह नहीं है, यह सबसे खराब जगह है, आए दिन नक्सलवादियों के हमले होते रहते हैं और ऐसी जगह मेरा स्थानांतरण होना एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य था, जबकि मेरी सर्विस के सिर्फ अंतिम चार वर्ष ही बचे थे। मेरे मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार उमड़-घुमड़ रहे थे और सोच रहा था क्या किया जाए। इस समय मेरे परिवार की कई जिम्मेदारियों का निर्वहन करना मेरे लिए अत्यंत आवश्यक है। मैंने अपना स्थानांतरण कहीं अन्यत्र कराने के लिए काफी मिन्नतें कीं लेकिन सब व्यर्थ साबित हुई। उधर जैसे ही परिवार को मेरे स्थानांतरण की सूचना मिली तो वे सभी लोग अलग तनाव में आ गए क्योंकि पिछले छह वर्षों से परिवार के सभी सदस्य एक-एक दिन गिनकर मेरे आने का इंतज़ार कर रहे थे परंतु मेरे दुर्भाग्य ने यहाँ पर भी मेरा साथ नहीं छोड़ा।

कहते हैं समय ऐसा मरहम है जो गहरे से गहरे घाव को भी भर देता है। मैंने अपने आप में साहस जुटाया और अगरतला जाने के लिए अपनी मनःस्थिति बना ली और इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई दूसरा रास्ता ही न था। मुझे कोई न कोई तो निर्णय लेना ही था।

समय पंख लगाकर उड़ता गया और 12 मई को मुझे कार्यालय से विदाई दे दी गई। मुंबई छोड़ने का दुःख बहुत था जहाँ 6 साल मैंने गुजारे और वहाँ की खट्टी-मीठी यादों को अपने दिल और कैमरे में कैद कर रखा था। मुझे 12 मई की रात 11:00 बजे मुंबई को भारी मन से अलविदा कहना पड़ा। मैं दिल्ली अपने गृह नगर में 12 दिन का अवकाश समाप्त करने के पश्चात् 24 मई 2023 को इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुँचा जहाँ से मुझे अगरतला की फ्लाइट पकड़नी थी। फ्लाइट का समय सुबह 11:50 बजे था, मैं 10:00 बजे ही एयरपोर्ट पहुँच गया और वहाँ की सारी औपचारिकतायें जैसे चेक इन, सुरक्षा जाँच, बोर्डिंग पास लेना आदि को पूरा करने के पश्चात् एयरपोर्ट में प्रवेश कर गया। मैं वहाँ वेटिंग लाउंज में खाना खाने के पश्चात् बोर्डिंग का इंतजार करने लगा। मैं इंतजार करते हुए विचारों की दुनिया में खो गया और अगरतला के काल्पनिक चित्र मेरे मानस पटल पर उभरने लगे और सोचने लगा कि पता नहीं कैसा होगा वहाँ का मौसम, वहाँ के लोग, वहाँ का खान-पान, कार्यालय स्टाफ और इन सब के बारे में मेरा दृष्टिकोण नकारात्मक ही था। इसी बीच फ्लाइट अटेंडेन्ट के अनाउंसमेंट से मेरी तंद्रा टूट गई और मैं वास्तविक दुनिया में लौट आया। सभी लोग बोर्डिंग की तैयारी में लगे थे और सभी लाइन में लगकर गेट पर अपना बोर्डिंग पास तथा सुरक्षा जाँच करवा कर हवाई जहाज में प्रवेश कर गए, उनमें से एक मैं भी था। मैंने लगेज बूथ में अपना बैग रखा और अपनी सीट पर चुपचाप बैठ गया। अब विमान के उड़ने का समय हो चुका था। एयरक्राफ्ट ने रनवे पर दौड़ लगाई और रनवे छोड़ दिया तथा आसमान की

ऊँचाई पर चढ़ने लगा। मैं खिड़की से नीचे देख रहा था सब कुछ छोटा होता हुआ धूमिल नजर आ रहा था। धीरे-धीरे हवाई जहाज आकाश में ऊँचाई पर पहुँच कर बादलों में विलीन हो गया अब बाहर श्वेत ही श्वेत नजर आ रहा था। बीच में कभी-कभी सूरज की किरणें हवाई जहाज के अंदर अठखेलियाँ कर जाती थी।

हवाई जहाज के अंदर का माहौल कुछ और ही था, कुछ लोग नींद में ऊँघने लगे थे, कुछ पढ़ने में मसगूल थे, कोई हेडफोन लगाए संगीत का आनंद ले रहा था और कुछ तो निंद्रा देवी के आगोश में जा चुके थे। एयर होस्टेस यात्रियों को खाने-पीने की वस्तुएं परोस रही थी और लोग बेफिक्र होकर खाने का आनंद ले रहे थे, उनके चेहरे पर एक अलग ही खुशी झलक रही थी शायद वे अपने गृह नगर वापस जा रहे थे और अपनों से मिलने की खुशी उनके चेहरे पर स्पष्ट झलक रही थी, पर मेरी मनःस्थिति इसके बिल्कुल विपरीत थी। बीच-बीच में पायलट का अनाउंसमेन्ट भी होता रहता था। इसी बीच पायलट का अनाउंसमेंट हुआ कि अब हम अगरतला की सीमा के करीब उड़ रहे हैं और थोड़ी ही देर में अगरतला हवाई अड्डे पर उतरने वाले हैं। मेरी उत्सुकता बढ़ी और मैं खिड़की के नीचे देखने लगा, पूर्वोत्तर राज्य के घने जंगलों से आच्छादित पहाड़ अपना सिर उठाए मानो मेरा स्वागत करने के लिए उत्सुक हों, बीच-बीच में नदियों की पतली सी लकीरें दिखाई दे रही थी। जैसे-जैसे मेरा हवाई जहाज नीचे उतर रहा था मुझे हरे-भरे चौकोर खेत जिनको मानो किसी कलाकार ने एक लाइन में बना रखा हो, दिखाई दे रहे थे। कई छोटी-छोटी पहाड़ियों पर इक्के-दुक्के मकान नजर आ रहे थे। धीरे-धीरे मकानों के झुंड जिनके ऊपर टीन पड़ी थी, नजर आने लगे थे। हम बस एयरपोर्ट पर उतरने वाले ही थे, अगरतला की सीमा में प्रवेश कर चुके थे, सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे रहा था और अंत में दोपहर 2:25 बजे हवाई जहाज एयरपोर्ट पर उतर गया,

एयरपोर्ट ज्यादा बड़ा नहीं था और न ही मुंबई और दिल्ली जैसी भीड़-भाड़ क्योंकि यहाँ से बहुत कम फ्लाइट आती-जाती हैं। एयरपोर्ट स्टाफ तो जैसे हमारी फ्लाइट का ही इंतजार कर रहा था। वहाँ से एयरपोर्ट के आगमन (arrival) पर आ गए और अपना सामान लेकर एयरपोर्ट के बाहर आ गए। वहाँ से ऑटो लेकर अपने गंतव्य स्थल जीपीआरए (GPRA) रेज़िडेन्शियल कॉम्प्लेक्स गांधी ग्राम पहुँच गए। जब मैं ऑटो से आ रहा था तो अगरतला शहर को देख रहा था जिसे देखकर मैं हतप्रभ रह गया। त्रिपुरा की सुंदर वादियों के बीच बसा हुआ यह शहर जहाँ शानदार पक्की सड़कें, बीच में सफ़ेद और काले रंग से पुते हुये डिवाइडर पर लगे नारियल के पेड़ सुंदर लग रहे थे। सफ़ेद वर्दी में ट्रैफिक पुलिस के मुस्तैद सिपाही हर चौराहे पर तैनात थे और ट्रैफिक नियमों का बहुत अच्छा प्रबंधन कर रहे थे, किसी भी नियम का उल्लंघन नहीं हो रहा था। इस शहर के बारे में मेरे मन में जो नकारात्मक विचार थे यह सब देखकर वे काफ़ूर हो गए। मैंने अपने मानस पटल पर अगरतला की जो नकारात्मक छवि बना रखी थी वास्तव में उसके बिल्कुल विपरीत पाया।

अगले दिन 25 मई 2023 को मुझे कार्यालय में रिपोर्ट करनी थी। मैं सुबह तैयार होकर अपने सहकर्मी प्रणव कुमार के साथ बाइक पर गांधीग्राम से कार्यालय की तरफ रवाना हुआ। रास्ते में दोनों तरफ हरा-भरा जंगल, ऑक्सीजन पार्क जिसका मुख्य द्वार घास से मनुष्य के फेफड़ों के आकार का बना हुआ था। पार्क के अंदर त्रिपुरा राज्य के आदिवासियों के रहन-सहन, उनके खान-पान से संबंधित संग्रहालय, व्यायाम तथा योग स्थल, जंगली जीवन से संबंधित वस्तुओं की प्रदर्शनी थी। यहाँ पर पेड़ों की प्रजाति के आधार पर स्थानों के नाम दिये गये हैं जैसे कि साल बागान, खजूर बागान, लीची बागान इत्यादि। आगे बढ़ने पर जैसे ही अगरतला शहर में प्रवेश किया एकदम साफ-सुथरा वीआईपी रोड है जिसके दोनों ओर

पेड़ तथा डिवाइडर पर लगे नारियल के वृक्ष ऐसे लग रहे थे मानो बाहें फैलाए स्वागत कर रहे हों। जगह-जगह चौराहों पर एलईडी स्क्रीन जो कि अगरतला पर्यटन विभाग द्वारा लगायी गयी थी जिसमें पूरे त्रिपुरा राज्य के दर्शनीय स्थलों की सूचनाएं दिखाई जा रही थी। जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए सड़क के दोनों ओर सरकारी कार्यालयों की सुंदर इमारतें खूबसूरत नजर आ रही थीं। अंत में हम सर्किट हाउस होते हुए अपने कार्यालय में पहुँच गए।

हमारा कार्यालय छोटे से टीले पर बना हुआ था जहाँ ऑडिट तथा अकाउंट के कार्यालय थे। पूरा दिन कार्यालय में बिताने के बाद शाम को 6:00 बजे कार्यालय से वापस गांधीग्राम आते हुए रात हो चुकी थी। पूर्वोत्तर राज्यों में अँधेरा जल्दी हो जाता है। रात में रंग-बिरंगी रोशनी से पूरा शहर नहा रहा था। सड़क के किनारे के पेड़ों पर विभिन्न रंगों की रोशनी डाली गई थी जो बहुत ही सुंदर लग रही थी बिजली के खंभों पर तिरंगे रंगों की लड़ियाँ लपेटी गई थी जो अति सुंदर जगमगा रही थी। सचिवालय के चौराहे पर लगा राष्ट्रीय तिरंगा शान से लहरा रहा था। मुझसे यह सब देख कर रहा नहीं गया और मैंने वह सारा दृश्य मोबाइल के कैमरे में कैद कर लिया। पूर्वोत्तर राज्य अधिकतर बंगाली बाहुल्य क्षेत्र है इसलिए यहाँ की मुख्य भाषा बंगाली है और यहाँ पर माँ काली की उपासना की जाती है। सुबह जब भी मैं उठता तो मुझे पूजा की घंटियों की धुन तथा 'उलूक ध्वनि' जो यहाँ उपासक अपने मुख से निकालते हैं, सुनाई देती हैं। उस समय मन में अत्यधिक शांति का अनुभव होता है। मुझे दुर्गा पूजा महोत्सव देखने का अवसर मिला जो कि यहाँ का महत्वपूर्ण त्योहार है। इस अवसर पर पूरे अगरतला में बड़े-बड़े पंडाल बनाए गए थे, जिनके अंदर बड़ी ही खूबसूरती से माँ दुर्गा तथा माँ काली की मूर्तियों को सजाया गया था। हम लोगों ने पाँच-छह सहकर्मियों का एक ग्रुप तैयार किया और शहर में पंडाल देखने निकल पड़े। पंडालों

की सजावट की खूबसूरती को देखकर तो मैं दंग रह गया। शांतिपारा स्थित एक पंडाल पर मधुर संगीत की ध्वनि के साथ लेजर लाइट शो बहुत ही अच्छा लगा, एक पंडाल में एक बहुत बड़ी शिव मूर्ति की स्वचालित भाव भंगिमाएँ तथा शिव तांडव का संगीत लेजर लाइट के साथ प्रस्तुत किया गया था जो मुझे बहुत ही लुभावना लगा। इसी प्रकार ऊषा बाज़ार स्थित पंडाल में एक भव्य मंदिर बनाया गया था जिस पर रंग-बिरंगी रोशनी डाली जा रही थी जिससे मंदिर का दृश्य भव्य तथा खूबसूरत दिखाई देता था। इस तरह हम सब लगातार इन दृश्यों का नज़ारा तीन-चार रातों तक देखते रहे।

कुछ समय पश्चात् मैंने त्रिपुरा में स्थित कुछ दर्शनीय स्थलों को देखने की योजना बनायी। मुझे उज्जयंता महल देखने का अवसर मिला। यह एक बहुत ही प्रसिद्ध सफ़ेद रंग के पत्थर से बना महल है, जो सभी पर्यटकों को आकर्षित करता है। महल के अंदर एक लाइट एंड साउंड कार्यक्रम भी होता है। इसके अतिरिक्त, एक म्यूजियम है। महल का बाहरी प्रांगण बहुत ही खूबसूरत है जिसको देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया। रात्रि के समय रोशनी में नहाया हुआ यह महल बहुत ही मनोहारी लगता है। कहा जाता है कि पहले यह महल विधान भवन के रूप में प्रयोग किया जाता था परंतु अब इसे एक संग्रहालय का रूप दे दिया गया है। महल के बाहरी प्रांगण में सुंदर तरीके से बनाया गया गार्डन तथा बीच में बहुत ही ऊँचा तिरंगा लहरा रहा था।

उज्जयंता महल के पास में ही स्थित शेरोंवाली रेस्टोरेंट में हमने शुद्ध शाकाहारी भोजन किया, कहा जाता है अगरतला शहर में यही एकमात्र शुद्ध शाकाहारी भोजनालय है। यहाँ पर अधिकतर लोग माँसाहारी हैं, शाकाहारी लोग बहुत ही कम हैं। इसीलिए शाकाहारी भोजनालय भी कम है। इसके पश्चात् मैं हेरिटेज पार्क देखने गया जहाँ पर त्रिपुरा राज्य के मुख्य दर्शनीय स्थलों के मॉडल बनाए गए हैं, जिससे उनके संबंध में पूरी जानकारी मिली।

तत्पश्चात् कुमारी टीला झील पर गया वहाँ देखा लंबी झील के चारों ओर सुबह की सैर के लिए रास्ता बनाया गया है। झील के बीच में फव्वारे लगाए गए हैं जो रंग-बिरंगी रोशनी से अपनी छटा बिखेरते हैं। इस प्रकार की कई झीलों के दर्शन हुए जो अगरतला नगरपालिका द्वारा मेंटेन की गई हैं जिनके चारों ओर सुंदर नारियल के वृक्ष लगाए गए हैं। चारों तरफ बैठने के लिए बेंच लगायी हैं जहाँ शाम के समय नव विवाहित जोड़े, वृद्ध तथा बच्चे बैठ कर अपना समय खुशी से बिताते हैं। कुछ समय पश्चात् हम लोगों ने ऊनाकोटि जाने का प्रोग्राम बनाया और सभी साथी ट्रेन तथा टैक्सी से ऊनाकोटि पहुँचे। यह एक पहाड़ी क्षेत्र की तलहटी में स्थित है। आसपास घना जंगल है। ऊनाकोटि का मतलब है एक करोड़ से एक कम। एक पौराणिक कथा के अनुसार एक बार भगवान शिव एक करोड़ देवी-देवताओं के साथ काशी जा रहे थे। रात हो जाने की वजह से बाकी के देवी-देवताओं ने शिवजी से ऊनाकोटि में रुककर विश्राम करने की प्रार्थना की। शिवजी मान गए, लेकिन साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि सूर्योदय से पहले ही सभी को यह स्थान छोड़ देना होगा। लेकिन सूर्योदय के समय केवल भगवान शिव ही जाग पाए, बाकी के सारे देवी-देवता सो रहे थे। यह देखकर भगवान शिव क्रोधित हो गए और श्राप देकर सभी को पत्थर का बना दिया। इसी वजह से यहाँ 99 लाख 99 हजार 999 मूर्तियाँ हैं, यानी एक करोड़ से एक कम (भगवान शिव को छोड़कर)। ऊनाकोटि में चट्टानों पर देवी-देवताओं जैसे गणेश, पार्वती, शिवजी तथा अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उकेरी गईं हैं। इन चट्टानों पर उकेरी गई देवी-देवताओं की मूर्तियों के रहस्य को अभी तक कोई नहीं जान पाया। ये ऊनाकोटि की चट्टानें पहाड़ों की तलहटी में थीं जहाँ जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। हम सभी ने इन उकेरी गई मूर्तियों को समीप से देखा। ऊनाकोटि देखने के पश्चात् वापस आ रहे थे तो रास्ते में हरे-भरे चाय के बागान दिखाई दिये। हम सभी ने उन चाय के बागानों में

विभिन्न मुद्राओं (पोज) में तस्वीरें खिचवायीं और अंततः हम वापस अगरतला आ गए।

अगरतला के खाने की बात की जाए तो यह एक बंगाली बाहुल्य क्षेत्र है इसलिए यहाँ पर माँसाहारी भोजन की बाहुल्यता है। शाकाहारी भोजन बहुत ही कम लोग पसंद करते हैं। **मुई बोरोक** त्रिपुरा का एक पारंपरिक भोजन है। इसमें कई तरह की सब्जियों जैसे टमाटर, आलू, प्याज, लौकी, करेला सबको काट कर उसे दो मछलियों के साथ उबाला जाता है और नमक डाल कर परोसा जाता है। इसी तरह दूसरी डिश **मोंसडेंग सेरमा** जो एक तरह का सॉस है या यूँ कहें कि ये सेजवान सॉस का इंडियन वर्जन है। **गुडोक** जिसमें आलू को मछली के साथ पकाया जाता है। त्योहारों में इस डिश को बड़े चाव से खाया जाता है। इसी प्रकार **चुआक** चावल से बनने वाली बीयर है जिसको चावल को सड़ा कर बनाया जाता है, इसे खाने के साथ परोसा जाता है।

अगरतला के परिधानों की बात करें तो महिलाओं के लिए निर्मित त्रिपुरी पोशाक को दो भागों में बांटा जा सकता है। महिलाओं के शरीर के निचले हिस्से की पोशाक को त्रिपुरी में **रिग्राई** कहा जाता है। शरीर के ऊपरी हिस्से के कपड़े को पुनः दो भागों में बाँटा जा सकता है, जिसे **रिसा और रिकुटु** कहा जाता है। इसमें से रिसा छाती के हिस्से को ढँकता है और रिकुटु शरीर के पूरे ऊपरी हिस्से को ढँकता है। पुराने समय में महिलाएँ इन कपड़ों को सूती धागे से बुनती थीं, लेकिन आजकल ये पोशाक बाजार से खरीदी जाती हैं। पुरुष त्रिपुरी पोशाक को पहनावे के आधार पर दो भागों में बाँटा जा सकता है। पुरुष कमर के लिए **दुति बोरोक** नामक पहनावा और शरीर के ऊपरी हिस्से के लिए **कामचव्लवी बोरोक** नामक पहनावा पहनते हैं, लेकिन वर्तमान समय में त्रिपुरा के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले और कामकाजी पुरुषों को छोड़कर बहुत कम पुरुष ये पोशाक पहनते हैं।

यहाँ अगरतला में सुबह जब मैं जागता हूँ तो चारों ओर से चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई देती हैं। यहाँ पर सूर्योदय जल्दी हो जाता है यह सुबह का खुशनुमा मौसम मुझे बरबस अपनी ओर आकर्षित करने लगता है और मैं सुबह की ठंडी हवा में सैर के लिए निकल जाता हूँ तथा प्रकृति के सान्निध्य का आनंद लेता हूँ। इस तरह से हम कह सकते हैं कि पूर्वोत्तर राज्यों में त्रिपुरा राज्य का यह अगरतला शहर बहुत ही सुंदर है। मेरा इस शहर का अनुभव बहुत ही आनंददायक रहा।

हिन्दी गृह पत्रिका के प्रकाशन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अगरतला द्वारा दोनों कार्यालयों (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी) को राजभाषा शील्ड एवं प्रशंसा पत्रों द्वारा पुरस्कृत किये जाने की छवि

नन्हा-मुन्ना राही हूँ

अमर आनंद मिंज,
कनिष्ठ अनुवादक

हवाई जहाज़ के इस एक घंटे के सफ़र में अपने मन के अथाह सागर में गोते लगाकर कुछेक पन्नों में समेटना आसान नहीं है। कोलकाता की तपती धरती में मन को सुकून देती ये मोती रूपी बूँदें आज न जाने क्या कहानी लिखेंगी। असंख्य विचारों, घटनाओं, कहानियों का स्रोत मन आज काफ़ी शांत है। "If life gives you lemons, make it lemonade." यदि जीवन आपको नींबू देता है, तो इसे नींबू पानी बना लें। 'गूगल ट्रांसलेट' द्वारा अर्थ का अनर्थ करने के बाद, इसका सही अर्थ ढूँढने निकल पड़ा हूँ मैं।

घर से सब आयेंगे कोलकाता घूमने, मेरा नन्हा-सा तीन साल का भतीजा भी। साथ ही मेरा अनुवाद प्रशिक्षण भी पूरा हो जाएगा। हिन्दी और अंग्रेज़ी के अक्षरों का ज्ञान है उसे। कभी-कभार मेरे लैपटॉप पर अपना नाम भी टाईप कर लेता है। घर में एक कमरा है जिसे माँ ने म्यूजियम बना रखा है। मेरे बचपन के अधिकांश खिलौने हैं इसमें। जैसे क्रिकेट बैट, बॉल, कंचे, कार, लट्टू, दीपावली में बाजारों में मिलने वाली पिस्टल, ट्रंप कार्ड, ब्रिक गेम जिससे मिथुन दा फिल्म में खलनायकों की गाड़ियाँ उड़ा देते थे इत्यादि। लगता है अब मेरे रिक्त स्थान की पूर्ति हो गई है। अब वह ही म्यूजियम का उत्तराधिकारी है।

बचपन के एक-एक खिलौने के साथ मेरी यादें जुड़ी हैं। क्रिकेट बैट जिसका भी होता था उसे कम से कम तीन बार आउट करना पड़ता था। बॉल तो कभी किसी की बाउंड्री के अंदर तो कभी छत पर टकराती। कई बार मुहल्ले में इसी वज़ह से झगड़े होते, पर कुछ देर बाद, सचिन फिर मैदान में, रोक सको तो रोक लो। सब लोग पैसे इकट्ठे कर बॉल खरीदते थे।

कभी-कभी तो पुराने अख़बार, लोहे, टिन आदि कबाड़ी को बेचकर पड़ोस मुहल्ले की टीम से मैच के लिए पैसे इकट्ठे करते थे। 21 रुपये का मैच भी हमारे लिए किसी जंग से कम नहीं था। स्कूल से लौटे, बस्ता रखा, खाना बाद में, पहले मैदान में, यही थी दिनचर्या। शाम होते, चिड़ियों के अपने घोंसले में लौटने से पहले हम घर में होते। जो लेट गया, वह मार से न बैठ पाएगा, न ही लेट पाएगा। एक अजीब खतरनाक डर के साथ-साथ सम्मान भी था माता-पिता के लिए। मुहल्ले में ठंड के दिनों में मुहल्ले की औरतें स्वेटर बुनती थी। मेरी शिशु अवस्था का स्वेटर अब मेरा भतीजा पहन रहा है। पूछने पर माँ कहती कि छोटे बच्चों को पुराने स्वेटर ही पहनाना अच्छा होता है, क्योंकि उनकी त्वचा काफ़ी मुलायम होती है।

अब घर के आस-पास देखता हूँ तो यक़ीन ही नहीं होता कि मेरा बचपन यहीं बीता था। मैदान में न कोई सचिन है, न ही अब कोई मैदान है, न आम के पेड़ हैं, न चिड़ियों का घोंसला। सभी घरों की दीवारें इतनी ऊँची हैं कि अब न झगड़े होते हैं, न ही झगड़े सुलझते हैं। 21 और 51 रुपये का मैच बच्चे अब ड्रीम 11 में खेलते हैं। स्कूल से लौटे, बस्ता फेंका बेड पे, खाना बाद में, पहले मोबाइल में, यही है दिनचर्या। अब देर से घर जाने का कोई टेंशन नहीं, बस फ़ोन घुमाया, आ रहा हूँ माँ, नोट्स लेने आया हूँ कहा, काम खत्म। एक अजीब खतरनाक डर है माता-पिता के मन में बच्चों के प्रति; कहीं बच्चे को कुछ कहा तो आत्महत्या न कर ले। हम तो इतने ढीठ थे कि मौत को छूकर भी उसके मुँह से टक से वापस चले आते थे।

फ्लाइट लैंड हो चुकी है मेरी कोलकाता में। प्रशिक्षण के 45 दिन तो यूँ ही बीत जाएंगे। ऐसा लगता है कि कल ही मैं 20 साल का था। आलोचक नहीं हूँ मैं, बस परिवर्तन ही संसार का नियम है, कभी-कभी भूल जाता हूँ।

यादों के भँवर में खो जाना फिर निकलना काफ़ी मुश्किल होता है। यकीन ही नहीं होता कि मेरे कार्यकाल के तीन वर्ष बीत गये त्रिपुरा में

और अब मेरा स्थानांतरण मेरे शहर राँची में हो गया है। कभी-कभी ऐसा समय आता है जीवन में जब आप स्वयं को अकेला महसूस करते हैं; टूट जाते हैं; लोग आकर सांत्वना देते हैं, फिर चले जाते हैं, फिर आप अकेले हो जाते हो। जीवन में सब स्थिर हो जाता है बस ऊपर पंखा चलता रहता है। यह नर्सरी राइम "ऊपर पंखा चलता है, नीचे मुन्ना सोता है" से प्रेरित है जिसे अक्सर मेरा भतीजा मोबाइल पर सुनता रहता था। लेकिन भय यही रहता है कि कहीं फ़ोन के स्क्रीन पर मुन्ना भैया न आ जाये। अब राँची में स्थानांतरण के बाद मैंने ठान लिया कि अब न ही ऊपर पंखा चलेगा न ही मुन्ना नीचे सोयेगा। मुन्ना बस वही करेगा जो मुन्ने के भविष्य के लिये अच्छा होगा। आजकल की विडंबना यही है कि बच्चों को कलम, नोटबुक, खिलौने से पहले फ़ोन की लत लगती जा रही है और अगर फ़ोन न दिया जाये तो बच्चे की रोने की आवाज़ और लाउडस्पीकर में यह भेद करना मुश्किल हो जायेगा कि किसकी आवाज़ तेज़ है।

समय चक्र बदल-सा गया है अब। हमारे ज़माने में हम तो ऐसा करते थे, वैसा करते थे; अब यह सब कहने का कोई मतलब नहीं है। शायद डायनासोर ने भी यही सोचा या कहा होगा और अब वह कहाँ है, सब जानते हैं। ऐसे न जाने कितने माता-पिता या अभिभावक हैं जो डायनासोर बनने की राह पर निकल पड़ते हैं। ठीक है मैं मानता हूँ कि मेरे या आपके ज़माने में "सारा ज़माना हसीनों का दीवाना" जैसी संगीत की मिठास थी, लेकिन आज के जमाने में ऐसे संगीत की समझ इस पीढ़ी को होगी, यह उम्मीद करना समझदारी नहीं है। हमसे भी यह उम्मीद की जाएगी कि हम आधुनिक संगीत को समझें। यह तो बस एक उदाहरण मात्र है। यह हमारे जीवन के अन्य पहलुओं पर भी लागू होती है। हमें चाहिये कि हम पुरानी पीढ़ी या नयी पीढ़ी से वही ग्रहण करें जो समकालीन परिदृश्य में सही है। अब वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो मेरे भतीजे की पढ़ाई की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है, जिसकी मनःस्थिति को ध्यान में रखकर ही पढ़ाना होगा।

अब कुछ दिन पहले की ही बात है, वह मेरा फोन चुपके से लेकर पैटर्न लॉक ओपन करने की कोशिश करने लगा। मैं सब देख रहा था और उसको हारता देखकर मजे ले रहा था। इतने में मेरा फ़ोन उसने हवा में उछाल दिया। अब बच्चे को कैसे समझाया जाये कि बॉल और फोन में फर्क होता है। अब क्रिकेट खेले बहुत समय बीत गया है तो फोन लपकने में देर हो गयी। दोषी कौन? मैं या वो? मैं ही हूँ दोषी, वो तो मासूम बच्चा है। लेकिन जब उस घटना का बारीकी से विश्लेषण करता हूँ तो लगता है कि उसे फोन देने में कुछ ग़लत नहीं था; बच्चे कच्ची मिट्टी के समान ही होते हैं, जैसा आकार दो वैसा ही रूप बनेगा। फोन में वो क्या देखता है, कितना समय देखता है, यह ट्रैक करना जरूरी था। एक बात और भी है कि अगर आप बारीकी से देखोगे तो ज्ञात होगा कि चंचल और उद्दण्ड होने में काफी फर्क होता है, यह शायद कम ही लोग जानते हैं। फोन तो मिलेगा उसे पर कुछ समय के लिये बस। अनुशासन की नींव ही उसके भविष्य का आधार बनेगी। स्थिति तनावपूर्ण भले ही हो जाये पर नियंत्रण में होनी चाहिए।

अब कुछ दिनों से काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। अब नए "मुन्ना" ने पहले के "मुन्ना" और "पंखे" का स्थान ले लिया है। कुछ देर के लिये ही उसे मोबाइल मिलता है वह भी किसी न किसी के पर्यवेक्षण में। अब अभिनय गीत, जिसे अंग्रेजी में एक्शन साँग कहते हैं, सीखने लगा है। इस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वह प्ले स्कूल में अभिनय गीत प्रस्तुत करेगा:-

नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ,
बोलो मेरे संग, जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद...॥

नॉन-वेज के प्रति आकर्षण

अमित गौरव,
सहायक लेखा अधिकारी

हम मानव भी कितने अजीब होते हैं न! पल भर में किसी अनजाने को अपना बना लेते हैं और पल भर में अपनों से दूर हो जाते हैं। प्रकृति ने बहुत सहेजकर हम मानवों की रचना की है जिसमें प्रेम, करुणा, दया आदि भावों को समाहित किया है। ये भाव ही तो हैं जो हम मानवों को पशुओं से भिन्न करते हैं। वर्तमान समय में मानवों में इन भावनाओं की लगातार कमी होती जा रही है। वहीं इसके इतर ईर्ष्या, द्वेष, गुस्सा, आलस्य आदि भावों की वृद्धि हो रही है।

हम जश्न मनाने और पार्टी करने के नाम पर न जाने कितने पक्षियों और पशुओं की हत्या कर देते हैं। फिर चाहे नववर्ष हो, होली हो, बकरीद हो, जन्मदिन की पार्टी हो या फिर शादी की पार्टी इन सभी में नॉन-वेज खाने का खूब प्रचलन है। आलम तो यह है कि सामान्य दिनों में भी लोग नॉन-वेज खाने के आदी हो चुके हैं। अगर सप्ताह में किसी एक दिन भी नॉन-वेज न मिले तो लोगों को लगता है कि उन्हें कमजोरी हो गई है। नॉन-वेज का नाम सुनते ही लोगों के मुँह से लार टपकने लगती है। इसके प्रति इतना झुकाव किसी नशे से कम है क्या? हम शराब, धूम्रपान, ड्रग्स, पान-गुटखा आदि को तो नशे की कैटेगरी में रख देते हैं तो क्या नॉन-वेज नशे की कैटेगरी में नहीं आता है? यह विवाद का विषय हो सकता है। लोग इसके प्रति भिन्न-भिन्न तर्क देंगे। वे कहेंगे इसमें प्रोटीन, विटामिन और मिनरल पाए जाते हैं जो शरीर के लिए लाभदायक हैं। हाँ यह बात सही है किन्तु ये सारी चीजें फलों और सब्जियों में भी तो पाए जाते हैं। नॉन-वेज खाने के प्रति इतना झुकाव हमें अपने मानवीय प्रवृत्ति से दूर कर रहा है। यह कहाँ तक सही है कि हम अपने स्वाद के लिए किसी का जीवन समाप्त कर दें। यदि हम

मनुष्य किसी को जीवन नहीं दे सकते हैं तो हमें किसी को मारने का भी हक नहीं है। हम दूसरों की भावनाओं की कद्र करना भूलते जा रहे हैं। हम कितने खुश होकर नॉन-वेज की दुकानों पर जाते हैं कि आज तो नॉन-वेज खाएंगे, मजा आएगा। किन्तु हम अपने मजे के चक्कर में यह नहीं सोच पाते कि अब किसी का जीवन समाप्त होगा। जब आप नॉन-वेज खरीदने के लिए दुकानों पर जाते हैं तो क्या कभी भी उन दुकानों के सामने खड़े मासूम बकरों और मुर्गों पर ध्यान दिया? उनकी जगह स्वयं को रखकर सोचें, कैसा लग रहा होगा उन्हें? जब अगली बारी आपकी आनी वाली हो और आपको काटा जाना हो। यह सोचकर कितना भयावह लगता है न। फिर उन पर क्या बीतती होगी जो अपनी आँखों के सामने अपने माता-पिता, भाई-बहन, दोस्तों और संबंधियों को बोटी-बोटी कटते हुए देखते होंगे और लोगों को शौक से उनके माँस घर ले जाते हुए देखते होंगे। कभी उनके प्रति करुणा भाव रखकर देखिए। शायद आप उन्हें महसूस कर पाएंगे।

हमारे परिवार के किसी सदस्य को थोड़ी-सी चोट लग जाने पर हमें कितना दुःख होता है न। किसी अपने प्रियजन की मृत्यु होने पर ऐसा लगता है, मानो पूरी दुनिया ही उजड़ गई हो। फिर उन मासूम जीवों का क्या होता होगा, कभी सोचा? मुझे याद है बचपन में स्कूल जाने के रास्ते में जो बूचड़खाने की दुकान थी उस दुकान के पास से गुजरते समय मैं दौड़कर निकलता था। काट कर टाँगे हुए उन पशुओं को देखकर ऐसा लगता कि यदि मैं उस कसाई के पकड़ में आ गया तो वह मुझे भी काटकर टाँग देगा। और यदि वहाँ से गुजरते वक्त वह किसी पशु को काट रहा होता तो उस पशु की आवाज सुनकर मेरा पूरा शरीर काँप जाता था। पूरे शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ जाती थी। ऐसा लगता मैं उसे जाकर बचा लूँ। उस कसाई की खूब पिटाई करुँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। उन पशुओं के शरीर से गिरे हुए खून को देखकर मुझे और भी ज्यादा डर लगता। यह सच में बहुत

ही भयावह दृश्य होता था। बचपन में खेलने के क्रम में गिर जाने पर थोड़ी-बहुत खून की बूंदें निकलने पर हमारी माँ न जाने कितनी परेशान हो जाती थी। वह तुरंत हमें डॉक्टर के पास ले जाती थी या घर पर ही दवा लगाकर पट्टी कर देती थी। जब हम अपने लोगों के शरीर से निकला हुआ थोड़ा-सा खून देखकर इतने विचलित हो जाते हैं तो उन मासूम, बेजुबान पशुओं का खून देखकर क्यों नहीं? उन पशुओं के रक्त को बहाकर हम शौक से उनके माँस का भक्षण करते हैं। क्या उनके खून का कोई मोल नहीं? उन पशुओं का सृजन भी तो उसी प्रकृति ने किया है जिसने हम मानवों का। तो क्या उन जीवों को जीने का अधिकार नहीं?

प्रकृति ने हमारे भोजन के लिए विभिन्न प्रकार की शाक-सब्जियाँ, फल-फूल आदि प्रदान किए हैं ताकि हम अपना भरण-पोषण कर सकें। फिर भी हम मानव पशुओं और पक्षियों के माँस को खाने के लिए लालायित रहते हैं। नॉन-वेज के अत्यधिक सेवन करने की वजह से आजकल लोग युवावस्था में भी विभिन्न प्रकार की बीमारियों का शिकार होते जा रहे हैं। कहा जाता है कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। अतः अब ये हमारे ऊपर है कि हम स्वस्थ रहकर इन छोटे-छोटे पशु और पक्षियों को जीने दें या उनके माँस का सेवन कर विभिन्न प्रकार की बीमारियों को निमंत्रण दें।

देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है जिसका प्रारंभ 1000 ई. से माना जाता है। भारतीय संविधान की अष्टम् अनुसूची में वर्णित 22 भाषाओं में से 11 भाषाओं की लिपि देवनागरी है। वे हैं- कोंकणी, गुजराती, नेपाली, मराठी, संस्कृत, सिंधी, हिंदी, संथाली, मैथिली, बोडो तथा डोगरी।

माँ

आशीष कुमार गुप्ता,
एमटीएस

मेरे जीवन में यदि किसी ने मुझ पर सबसे ज्यादा प्रभाव डाला है, तो वो मेरी माँ है। उसने मेरे जीवन में मुझे कई सारी चीजें सिखाई हैं जो मेरे पूरे जीवन भर मेरे काम आयेंगी। मैं इस बात को काफी गर्व के साथ कह सकता हूँ कि मेरी माँ मेरी प्रेरणा, गुरु तथा आदर्श होने के साथ ही मेरे जीवन की प्रेरणा स्रोत भी हैं।

हमारे जीवन में प्रेरणा का महत्वः

प्रेरणा एक तरह की अनुभूति है जो हमें किसी चुनौती या फिर कार्य को सफलतापूर्वक प्राप्त करने में हमारी सहायता करती है। यह एक प्रकार की प्रवृत्ति है, जो हमारे शारीरिक तथा सामाजिक विकास में हमारी सहायता करती है। किसी व्यक्ति तथा घटना से प्राप्त प्रेरणा हमें इस बात का अहसास कराती है कि हम विकट परिस्थितियों में भी किसी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

हम अपनी क्षमताओं के विकास के लिए अन्य स्रोतों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं, जिसमें मुख्यतः विख्यात व्यक्ति या फिर हमारे आस-पास का विशेष व्यक्ति हमें इस बात के लिए प्रेरित करता है कि यदि उसके द्वारा विकट परिस्थितियों में भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है तो हमारे द्वारा भी यह कार्य अवश्य ही किया जा सकता है।

कई लोगों के जीवन में पौराणिक या ऐतिहासिक व्यक्ति उनके प्रेरणा स्रोत होते हैं, तो कई लोगों के जीवन में प्रसिद्ध व्यक्ति या फिर उनके माता-पिता उनके प्रेरणा स्रोत होते हैं। मायने यह नहीं रखता कि आपका

प्रेरणा स्रोत कौन है, मायने यह रखता है कि आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उसके विचारों और तरीकों से कितने ज्यादा प्रभावित हैं।

मेरी माँ मेरी प्रेरणा

हर एक के जीवन में कोई न कोई उसका प्रेरणा स्रोत अवश्य होता है और उसी से वह अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा ग्रहण करता है। किसी के जीवन में आगे उसके शिक्षक उसके प्रेरणा स्रोत हो सकते हैं, तो किसी के जीवन में कोई सफल व्यक्ति उसका प्रेरणा स्रोत हो सकता है लेकिन मेरे जीवन में मैं अपनी माँ को ही अपने सबसे बड़े प्रेरणा स्रोत के रूप में देखता हूँ। वही वह व्यक्ति है जिन्होंने मेरे जीवन में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।

आज तक के अपने जीवन में मैंने अपनी माँ को कभी विपत्तियों के आगे घुटने टेकते हुए नहीं देखा है। मेरी सुख-सुविधाओं के लिए उन्होंने कभी भी अपने दुखों की परवाह नहीं की। वास्तव में वह त्याग और प्रेम की प्रतिमूर्ति है, मेरी सफलताओं के लिये उन्होंने न जाने कितने कष्ट सहे हैं। उनका व्यवहार, रहन-सहन तथा इच्छाशक्ति मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा है।

मेरी माँ मेरी प्रेरणा स्रोत इसलिए भी है क्योंकि ज्यादातर लोग कार्य करते हैं कि उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हो और वह समाज में नाम कमा सके लेकिन एक माँ कभी भी यह नहीं सोचती है वह तो बस अपने बच्चों को उनके जीवन में सफल बनाना चाहती है। वह जो भी कार्य करती है, उसमें उसका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता है। यही कारण है कि मैं अपनी माँ को पृथ्वी पर ईश्वर का एक रूप मानता हूँ।

इस दुनिया में किसी भी चीज को माँ के सच्चे प्यार और परवरिश से नहीं तौला जा सकता। वो हमारे जीवन की एकमात्र ऐसी महिला है जो

बिना किसी मंशा के अपने बच्चे को ढेर सारा प्यार और परवरिश देती है। एक माँ के लिए बच्चा ही सब कुछ होता है। जब हम मजबूर होते हैं तो वो हमेशा जीवन के लिए प्रेरित करती है। वो एक अच्छी श्रोता होती है और हमारी हर अच्छी और बुरी बातों को सुनती है जो हम कहते हैं। वह हमें कभी रोकती नहीं और किसी हद में नहीं बाँधती। वह हमें अच्छे-बुरे का फर्क करना सिखाती है। सच्चे प्यार का दूसरा नाम माँ है जो केवल एक माँ हो सकती है। उस समय से जब हम उसकी कोख में आते हैं, जन्म लेते हैं और इस दुनिया में आते हैं। जीवन भर उसके साथ रहते हैं। वो हमें प्यार और परवरिश देती है। माँ से अनमोल कुछ भी नहीं है। वह भगवान के आशीर्वाद के समान होती है इसलिए हमें ईश्वर का आभारी होना चाहिए। वह सच्चे प्यार, परवरिश और बलिदान का अवतार होती हैं। माँ ऐसी होती है जो हमें जन्म देकर मकान को मधुर घर में बदल देती है।

वह वो होती है जो पहली बार हमारे स्कूल की शुरुआत घर में ही करती है। हमारे जीवन की सबसे पहली और प्यारी शिक्षक होती है। वो हमें जीवन का सच्चा दर्शन और व्यवहार करने का तरीका सिखाती है। इस दुनिया में हमारे जीवन के शुरु होते ही वो हमें प्यार करती है और हम पर ध्यान देती है अर्थात् उसकी कोख में आने से उसके जीवन तक। बहुत दुःख और पीड़ा सहकर वो हमें जन्म देती है लेकिन इसके बदले में वो हमेशा हमें प्यार देती है। इस दुनिया में कोई भी ऐसा प्यार नहीं है जो बहुत मजबूत, हमेशा के लिए निस्स्वार्थ, शुद्ध और समर्पित हो। वो आपके जीवन में अंधकार को दूर करके रोशनी भरती है।

हर रात को वह पौराणिक कथाएँ सुनाती है, देवी-देवताओं की कहानियाँ और दूसरे राजा-रानियों की ऐतिहासिक कहानियाँ सुनाती है। वो हमेशा हमारे स्वास्थ्य, शिक्षा, भविष्य और अजनबियों से हमारी सुरक्षा को लेकर बहुत चिंतित रहती है। वो हमेशा हमें जीवन में सही दिशा की ओर

आगे बढ़ाती है और सबसे खास बात कि वो हमारे जीवन में खुशियाँ फैलाती है। वो हमें छोटे और असमर्थ बच्चे से मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक मनुष्य बनाती है। वो हमेशा हमारा पक्ष लेती है और भगवान से हमारे स्वास्थ्य और अच्छे भविष्य के लिए जीवन भर प्रार्थना करती है। इसके बावजूद भी हम कई बार उनको दुःखी भी कर देते हैं। लेकिन हमेशा उसके मुस्कुराते चेहरे के पीछे एक दर्द होता है जिसे समझने की जरुरत है ध्यान रखने की जरुरत है।

निष्कर्ष

वैसे सबके जीवन में उसका कोई न कोई प्रेरणा स्रोत अवश्य होता है, जिसके कार्यों या बातों द्वारा वह प्रभावित होता है लेकिन मेरे जीवन में यदि कोई मेरा प्रेरणा स्रोत रहा है, वह मेरी माँ है। उनकी मेहनत, निस्स्वार्थ भाव, साहस तथा त्याग ने मुझे सदैव ही प्रेरित करने का कार्य किया है। उन्होंने मुझे सामाजिक व्यवहार से लेकर ईमानदारी तथा मेहनत जैसी महत्वपूर्ण शिक्षायें दी हैं। यही कारण है कि मैं उन्हें अपना सबसे अच्छा शिक्षक, मित्र तथा प्रेरक मानता हूँ।

कार्यालय प्रांगण में ज्ञान की देवी माँ सरस्वती की पूजा का आयोजन

चिंता और चिंतन

आशीष वर्मा,
लेखाकार

चिंता और चिंतन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अर्थात् मनुष्य के जीवन जीने के दो रास्ते होते हैं- पहला है कि मनुष्य चिंता का रास्ता चुने और दूसरा रास्ता है कि वह चिंतन का रास्ता चुने। आज के समाज में बहुत कम ही लोग हैं जो चिंतन का रास्ता चुनते हैं। वहीं इसके विपरीत हज़ारों लोग चिंता के रास्ते पर चलते हैं जो उनकी जीवन शैली को अत्यधिक प्रभावित करता है। आज मैं इन्हीं दो शब्दों- चिंता और चिंतन के विषय पर कुछ विचार आप सभी के साथ साझा कर रहा हूँ।

मनुष्य की इच्छाएँ जब अधूरी रह जाती हैं या किसी काम में देरी होने लगती है या कोई काम ठीक से नहीं हो पाता या परिवार में कोई समस्या होती है तो मन बहुत परेशान हो जाता है। इसे ही 'चिंता' कहते हैं। लेकिन जब मन में एकाग्रता, शांति, उत्साह और सकारात्मकता पैदा होने लगे तो उसे 'चिंतन' कहते हैं।

'चिंता' स्वयं में एक मुसीबत है और 'चिंतन' उसका समाधान। मनुष्य के जीवन में यदि कोई समस्या आती है तो मनुष्य चिंता करने लगता है तथा अपनी समस्या को और बढ़ा लेता है। जबकि समस्या आने पर यदि मनुष्य उस समस्या के बारे में चिंतन करे अर्थात् वह समस्या क्यों आई या उसका कारण क्या है, उसको किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है, उसका क्या हल हो सकता है। अपनी सोच सकारात्मक रखे तो समस्या को आसानी से हल किया जा सकता है।

मनुष्य अपने जीवन में इसलिए असफल नहीं होता कि कार्य बहुत बड़ा या कठिन था बल्कि इसलिए असफल होता है क्योंकि वह चिंता करने लगता है और चिंता मनुष्य के सोचने की क्षमता को अवरुद्ध कर देती है।

यही अवरोध मनुष्य की असफलता और दुःख का कारण बनता है। मनुष्य की सोच जितनी छोटी होगी, उसकी चिंता उतनी ही बड़ी होगी और सोच जितनी बड़ी एवं सुलझी हुई होगी, हमारे कार्य करने का स्तर भी उतना ही श्रेष्ठ होगा। चिंताग्रस्त व्यक्ति आजीवन विचलित एवं कुंठित रहता है।

आज के समय में जब हम अपने आसपास देखते हैं तो हमें दिखता है कि हर व्यक्ति चिंताग्रस्त है। लोग चिंतन करना भूल ही गए हैं। इससे लोगों में कई बीमारियों के लक्षण भी देखने को मिलते हैं जैसे उच्च रक्तचाप और हृदय रोग या दिल का दौरा पड़ने का खतरा भी बढ़ जाता है क्योंकि चिंता करने से व्यक्ति के हृदय की गति और साँसों में तेजी महसूस होने लगती है। चिंता विकार के कुछ प्रमुख लक्षण देखने को मिलते हैं, जैसे- घबराहट होना, नींद न आना, पसीना आना, हाथ-पैर में झनझनाहट होना आदि। लेकिन इसको कम किया जा सकता है चिंतन के माध्यम से। हमें अपनी सोच को सकारात्मक रखने की आवश्यकता है। कोई भी कार्य करने से पहले एक बार मन को शांत करके सोचना चाहिए। समस्याओं से दूर न भाग कर उसको हल करने का प्रयत्न करना चाहिए।

हम कह सकते हैं कि यदि हमें जीवन में चिंताओं को कम करना है तो अपनी बढ़ती इच्छाओं को कम करना होगा और चिंतन को बढ़ाना होगा क्योंकि जितना चिंतन बढ़ेगा, उतनी ही चिंता कम होती जाएगी। चिंतन हमें जीना सिखाता है, सही मार्ग दर्शाता है और चिंता पल-पल जीवन की आयु को अत्यधिक गति से घटाती चली जाती है।

चिंता करोगे तो भटक जाओगे,
चिंतन करोगे तो भटके हुए को रास्ता दिखाओगे।

-अज्ञात

भारतीय भाषाओं की लिपियाँ

ऊदल सिंह सोलंकी,
हिन्दी अधिकारी

भारत राष्ट्र प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक, भाषायी, सामाजिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और प्रभावशाली रहा है। इस देश में अनेक भाषाओं एवं संस्कृतियों का संगम दृष्टव्य होता है जो इसे अनूठी विविधता प्रदान करता है।

भाषा मूलतः ध्वनि पर आधारित होती है। ध्वनियाँ ही उच्चरित होती हैं और सुनी जाती हैं। अतः भाषा की काल और स्थान की दृष्टि से सीमा निश्चित होती है। वह केवल तभी सुनी जा सकती है जब वह बोली जाती है तथा वहीं तक सुनी जा सकती है जहाँ तक आवाज जा सकती है। काल और स्थान के इस सीमा बंधन से भाषा को निकालने के लिए लिपि की उत्पत्ति हुयी। निश्चय ही भाषा के विकास के उपरांत ही लिपि का विकास हुआ होगा।

भाषा और लिपि का यह संबंध है कि भाषा अपने मूल रूप में ध्वनियों पर आधारित होती है, लिपि में उन ध्वनियों को रेखाओं या शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है अर्थात् दोनों में माध्यम का अंतर होता है।

विद्वानों का मानना है कि विश्व में लिपि का विकास 10,000 ई. पू. और 4,000 ई. पू. के बीच लगभग 6,000 वर्षों में धीरे-धीरे होता रहा। भारत में पौराणिक काल से ही लिपिज्ञान होने के जीवंत साक्ष्य उपलब्ध हैं। इसके ज्वलंत उदाहरण हमारे ग्रंथ हैं। यथा- 'रामायणम्', 'महाभारत', 'ऋग्वेद', 'छांदोग्य उपनिषद्' और 'अष्टाध्यायी'। इसके अतिरिक्त, बहुत से विदेशी ग्रंथों में भी भारत में लिपिज्ञान की प्राचीनता के संबंध में प्रमाण मिलते हैं। एरियन ने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में सिकन्दर के सेनापति निआर्कस द्वारा

लिखित भारत के वृत्तांत को संक्षेप में दिया गया है। उससे यह स्पष्ट होता है कि यहाँ लिखने के लिए कागज निर्मित किया जाता था। मेगास्थनीज ने अपनी 'इण्डिका' में भारत में सड़कों पर मील के पत्थर के गड़े होने का उल्लेख किया है। इसके अलावा, चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारत में लिपि ज्ञान के अत्यंत प्राचीन काल में होने का वर्णन किया है। प्रसिद्ध चीनी विश्वकोश 'फावान-बान-शु-लिन' में ब्राह्मी लिपि का उल्लेख मिलता है जिसके अनुसार इस लिपि का आविष्कार ब्रह्मा ने किया। पत्थर पर लिखे शिलालेखों में अजमेर जिले का बडली गाँव तथा नेपाल का पिपरावा उल्लेखनीय हैं।

भारत की मुख्यतः तीन प्राचीन लिपियाँ हैं अर्थात् सिन्धुघाटी लिपि, खरोष्ठी लिपि तथा ब्राह्मी लिपि।

सिन्धुघाटी लिपिः भारत में लिखने की कला का ज्ञान लोगों को अत्यंत प्राचीन काल से है। इसके प्राचीनतम नमूने सिन्धुघाटी (हडप्पा एवं मोहनजोदड़ो) में प्राप्त हुए हैं। इस लिपि को हेरास, लैग्डन, स्मिथ, गैड तथा हंटर ने समझने और पढ़ने के प्रयास किये हैं, परंतु इसमें अभी तक कोई सफल नहीं हो पाया है। इस लिपि पर अभी भी शोध कार्य जारी है।

खरोष्ठी लिपिः खरोष्ठी लिपि के प्राचीनतम लेख शहबाजगढ़ी और मनेसरा में प्राप्त हुए हैं। इसकी प्राप्त सामग्री मोटे रूप से चौथी सदी ई. पू. से तीसरी सदी ई. पू. तक मिलती है। विदेशी राजाओं के सिक्कों और शिलालेखों में यह लिपि प्रयुक्त हुई थी। इसके अन्य और कई नाम भी हैं। जैसे- इण्डोबैक्ट्रियन, बैक्ट्रियन, काबुलियन, बैक्ट्रोपालि या आर्यन इत्यादि। परंतु सबसे अधिक प्रचलित नाम खरोष्ठी ही है जो चीनी साहित्य में सातवीं सदी तक मिलता है। यह लिपि सर्वप्रथम उर्दू लिपि की भाँति दायें से बायें लिखी जाती थी, पर तदनन्तर संभवतः ब्राह्मी लिपि के प्रभाव के कारण यह भी नागरी आदि लिपियों की भाँति बायें से दायें को लिखी जाने लगी। इस

लिपि में मूलतः स्वरों का अभाव था। अतः खरोष्ठी पूर्ण व वैज्ञानिक लिपि नहीं थी। जो समय के साथ तिरोहित हो गयी।

ब्राह्मी लिपिः ब्राह्मी प्राचीन काल में सर्वश्रेष्ठ लिपि रही है। यह जीवंत लिपि है। इसी लिपि से आधुनिक भारतीय भाषाओं की लगभग सभी लिपियाँ विकसित हुई हैं। इसके प्राचीनतम नमूने बस्ती जिले में प्राप्त पिपरावा के स्तूप में तथा अजमेर जिले के बडली (बर्ली) गाँव के शिलालेख में मिले हैं। श्री ओझाजी द्वारा इसका समय पाँचवीं सदी ईसा पूर्व माना गया है। उस समय से 350 ईस्वी तक इस लिपि का प्रयोग मिलता है। इस लिपि की 350 ईस्वी के बाद स्पष्ट रूप से दो शैलियाँ हो जाती हैं-

उत्तरी शैलीः इसका प्रचार प्रमुखतः उत्तरी भारत में था। इसके अंतर्गत मुख्यतः गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, प्राचीन नागरी लिपि तथा शारदा लिपि आती हैं जिनसे टाकरी, सिरमौरी, डोग्री, चमेआली, मंडेआली, जौनसारी, कोछी, कुल्लई, कश्टवारी, लअंदा, मुल्तानी, वानिको, गुरूमुखी, नागरी, गुजराती, महाजनी, मोड़ी, कैथी, मैथिली, बंगाली, असमिया, उड़िया, मनीपुरी और नेवारी।

दक्षिणी शैलीः इसका प्रचार प्रमुखतः दक्षिणी भारत में था। ग्रंथ लिपि से विकसित मलयालम और तुलु, तेलुगु, कन्नड़, कलिंग, तमिल और वट्टलुत्तु।

अतः स्पष्ट है कि भारत सदा ही लेखन, कला, साहित्य, संगीत, अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्रों में अग्रणी रहा है और इसने सदैव ही अपने ज्ञान और शोध से विश्व को एक नयी चेतना से आलोकित किया है। वर्तमान विश्व फिर से शांति और आर्थिक मोर्चों पर अगुवाई और मार्गदर्शन के लिए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अप्रतिम ज्ञान का आश्रय लेने की ओर अग्रसर है जोकि हम सभी भारतीयों के लिए अत्यंत गर्व का विषय है।

अस्तित्ववाद

कुलदीप,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रेने देकार्त ने कहा था- **'मैं सोचता हूँ, अंततः मैं हूँ।'**

अस्तित्ववाद का अर्थः- अस्तित्ववाद का मूल शब्द है- "अस्ति" जो कि संस्कृत के शब्द 'अस्' धातु से लिया है, जिसका अर्थ है "होना" और जिसका तात्पर्य अंग्रेजी के शब्द "Existence" से है।

अस्तित्ववाद और मानववाद एक दूसरे के सम्पूरक हैं। सीधी बात यह है कि मनुष्य है। वह अपने बारे में जैसा सोचता है, वैसा नहीं होता। बल्कि वैसा होता है, जैसा वह संकल्प करता है, अपने होने के बाद ही वह अपने बारे में सोचता है-वैसे ही अपने अस्तित्व की ओर बढ़ने के बाद ही वह अपने बारे में संकल्प करता है। मनुष्य सत्य का निर्माण करता है, इसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं है। यही अस्तित्ववाद का सिद्धांत है।

व्यक्तियों को अपने जीवन का अर्थ और उद्देश्य मिल सकता है, फिर भी बहुत कम लोग ही समझ पाते हैं कि वे करना क्या चाहते हैं और वे ऐसा क्यों करना चाहते हैं। मनुष्य के अंदर का यह आंतरिक संघर्ष उसे परेशान करता रहता है और तब तक परेशान करता है जब तक मनुष्य को नहीं लगता कि उसके जीवन में उसका कोई मतलब नहीं है। इस भावना के अनुभव को "अस्तित्ववाद संकट" कहते हैं।

लगभग हर मनुष्य आमतौर पर अपने उद्देश्य को जानने के लिए बहुत-सा समय बिताता है। मनुष्य यह जानने के लिए बहुत-सी गतिविधियों में भाग लेता है जैसे शिक्षा, यात्रा, खेल, कलात्मक अभियान। लेकिन मनुष्य का अस्तित्ववाद संकट जीवन भर चलता रहता है, क्योंकि बहुत से लोगों को

लक्ष्य की प्राप्ति ही नहीं होती, और जिनको लगता है कि उनका उद्देश्य तय है। जीवन के अलग-अलग पड़ाव पर उद्देश्य बदल सकता है कई बार ऐसा भी लगता है कि जो हम इतने वर्षों से कर रहे थे उसका कोई महत्व नहीं है।

संसार में दो तरह के दार्शनिक हैं:

पहले जिनका मानना है कि जीवन का उद्देश्य पूर्व निर्धारित है, जहाँ हम अपने अंतिम गंतव्य तक पहुँचने के लिए चल रहे हैं। सरल भाषा में कहें तो अध्यात्म की ओर। दूसरे वे, जिनका मानना है कि जीवन अर्थहीन है, और सबकुछ तर्कहीन है।

बहुत से लोगों का मानना है कि वे इन दो चुनावों में से एक का चयन कर उद्देश्य प्राप्ति एवं जीवन का मतलब समझ सकते हैं परंतु मेरा मानना है कि इस सदी में किसी एक का चुनाव कर उसपर तत्पर चलना बहुत मुश्किल है और हमें एक मिला-जुला रास्ता अपनाने की जरुरत है।

हमें यथार्थवादी तथा आदर्शवादी धारणा के संबंध जानने की जरुरत है। "व्यक्ति स्वतंत्र जन्मा है, पर सभी जगह वह बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।"

अस्तित्व की चेतना केवल मनुष्य में होती है अतः वह अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुरूप मूल तत्व का निर्माण करता है।

मनुष्य भौतिकवाद के अनुरूप अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य निश्चित करने लगा है, दूसरों की जीवनशैली से प्रभावित होता है, क्षणिक सुख खोजता है तथा सब तुरंत चाहता है जिसकी वजह से इंसान अपने दायरे को कम करता जा रहा है। हम अपने जीवन से बहुत-सी चीजें खोते जा रहे हैं जैसे संयम, इंद्रियों पर नियंत्रण, अपनी संस्कृति, आध्यात्मिकता। मनुष्य समझदार तो हो गया है लेकिन जिम्मेदारी से डरने लगा है, पुरानी रीतियों और रुढ़िवादी सोच को तोड़ तो रहा है लेकिन नई रुढ़ियाँ बना रहा है, आज हम खुश नहीं होते बल्कि प्रसन्नता को भोगते हैं, गर्व और अहंकार को समझ नहीं पा रहे,

भौतिक ज्ञान तो है लेकिन अध्यात्म नहीं, हमें सब कुछ मन भर कर चाहिए धीरे-धीरे लक्ष्यों की संख्या तो बढ़ा रहे हैं पर उद्देश्य भूलते जा रहे हैं। मेरा मानना है कि मनुष्य की उम्र के भिन्न पड़ावों पर लक्ष्य भी बदलते रहने चाहिए पर उद्देश्य हमेशा पॉजिटिव ऑरा फैलाना होना चाहिए।

क्योंकि आपका अस्तित्व केवल आपको ही नहीं बल्कि आपके परिवार, मित्रों तथा सभी जानने या न जानने वालों को भी प्रभावित करना चाहिए। आज के आधुनिक विज्ञान ने साबित किया है कि इस सृष्टि में सब कुछ शून्यता से आता है और शून्य में ही चला जाता है। एक विराट शून्यता ही इस अस्तित्व का आधार और संपूर्ण ब्रह्माण्ड का मौलिक गुण है। इसके अलावा हर जो चीज घटित हो रही है वह खालीपन है, जिसे शिव के नाम से जाना जाता है। शिव का शाब्दिक अर्थ है- "जो नहीं है।" अतः जब इस जगत के स्वयंभू का अर्थ ही "ना होने" से है, तो हम तो फिर भी इंसान है। मनुष्य को भौतिकवादी नदी के किनारे चलते हुए आध्यात्मिक मार्ग की ओर चलते रहना चाहिए। दूसरों से ईर्ष्या, अपनी क्षणिक सफलता पर घमंड, तथा अपनी संस्कृति और इतिहास को कम आंकना बंद कर देना चाहिए।

मनुष्य को अपने अस्तित्व की लड़ाई को चिंतन के तौर पर नहीं मंथन की तरह लेना चाहिए। आत्मसम्मानित रहते हुए सभी जिम्मेदारियों को निभाना चाहिए, अपने कर्मों का विश्लेषण करते हुए दूसरों की भलाई तथा भक्तिभाव को बरकरार रखना चाहिए। उद्देश्य और लक्ष्य की खोज में अस्तित्व को नहीं भूलना चाहिए। इंसान का जीवन क्षण मात्र है। अतः जीवन काटने के बजाय जीना चाहिए अस्तित्व जीने से ही है। अपने कर्मों, विचारों, भावनाओं का आंकलन कर अपनी संस्कृति, ज्ञान, मर्यादा को आगे बढ़ाना ही अस्तित्व का एक भाग है। लक्ष्य एवं उद्देश्य हमेशा हासिल करना नहीं होना चाहिए कभी-कभी त्याग करना भी हमें अपने अस्तित्व का अनुभव कराता है।

अतः अस्तित्ववाद न तो कोई विचारधारा है न ही कोई दर्शन। यह न तो कोई प्रजाति है और ना ही कोई पथ। यह मनुष्य जीवन को समझने का एक दृष्टिकोण है।

अस्तित्व की महत्ता हर इंसान के लिए है चाहे उसकी उम्र कुछ भी हो। जीवन को सार्थक मार्ग के साथ जोड़ना ईश्वर का काम नहीं है, यह निर्णय लेना और अपने लिए उपयुक्त रास्ता चुनना व्यक्ति पर निर्भर करता है।

जब व्यक्ति अस्तित्व संबंधी संकट महसूस करते हैं तो उन्हें स्वयं अपने जीवन का एक उद्देश्य निर्धारित करना चाहिए जो कोई और नहीं कर सकता। अंत में यह कहा जा सकता है कि यह व्यक्ति को उसकी मान्यता, उसकी विशेषता, उसकी गरिमा और सर्वोपरि उसकी पहचान की अनुभूति कराने वाली एक विचारधारा है।

"मैं आज जो कुछ हूँ उसके प्रति मेरी दृष्टि ही मेरा भविष्य बनाती है। मैं अपने भविष्य का निर्माता स्वयं हूँ।"

-साग के शब्द

मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित अंतर कार्यालयीन क्रिकेट प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

अब क्या करें!

कृष्ण कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

ऐसा अक्सर हमारे जीवन में होता है कि हम ऐसी स्थिति या ऐसे मुकाम पर पहुँच जाते हैं जहाँ से आगे सोच पाना या पीछे लौट पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। साथ ही लाख कोशिश करने के बाद उस स्थिति में खड़े रह पाना भी असंभव-सा प्रतीत होने लगता है। हमारे पैर लड़खड़ाने शुरू हो जाते हैं और दिमाग काम करना बंद कर देता है, दिल की धड़कनें अस्थिर हो जाती हैं, मन अशांत हो जाता है, और अवसाद से भर जाता है। हर तरफ सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा नजर आता है और हम चारों तरफ से निराशाओं से घिर जाते हैं। उस स्थिति में कुछ समझ नहीं आता है कि अब क्या किया जाए।

ऐसा हर किसी के जीवन में अवश्य हुआ होगा। जीवन को समझ पाना इतना आसान नहीं है। जीवन में जब कभी कुछ ऐसा घटित हो जहाँ से आपको यह समझना बहुत मुश्किल हो जाए कि आगे क्या करना है। तो इससे निकलने का मेरे पास एक सुझाव है, क्योंकि मैं भी ऐसे कई हालातों से गुजरा हूँ जहाँ पर कोई निर्णय लेना या किसी निर्णय के साथ खड़े रहने में कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा, कि ऐसे हालातों से आपको घबराना नहीं है, बस आपको एक काम करना है और वह है खुद को सँभालना और धैर्य रखना क्योंकि अगर आप जल्दबाजी में काम करेंगे तो चीजें सुधरने की बजाय और जटिल हो जाएंगी। यदि आप क्रोध में निर्णय लेते हैं तो चीजें कभी भी सुधर नहीं सकती हैं। हाँ, क्रोध से अगर जीवन में कुछ हो सकता है तो वह सिर्फ उथल-पुथल ही है। अगर आप धैर्य खोकर टूट कर बिखरने लगे तो भी आप उस परिस्थिति से बाहर नहीं आ सकते हैं। उस स्थिति में

आपको सिर्फ धैर्य रखना है। इस बात के समर्थन में मुझे रहीम जी का एक दोहा याद आता है-

"रहिमन चुप ही बैठिए, देख दिनन की फेर।
जब नीके दिन आईहैं, बनत बात नहीं देर।।"

धैर्य रखने से मनुष्य संकट पर विजय प्राप्त कर सकता है। यदि कठिन परिस्थितियाँ देखकर मनुष्य व्याकुल हो गया तो वह सही समय आने से पहले ही पूर्णतया हताश हो जाएगा।

हम सभी को ईश्वर ने एक नियति के साथ पृथ्वी पर भेजा है। आप जिस परिस्थिति से गुजर रहे हैं हो सकता है उस समय आपकी नियति में वही हो, और यह भी हो सकता है कि उन संघर्षों में तपा कर ईश्वर तुम्हें किसी बड़े कार्य के योग्य बनाना चाह रहे हों। परन्तु उस समय इस बात को समझ पाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है क्योंकि हम साधारण मनुष्यों को कर्म में प्रवृत्त न होकर उसके फल में ज्यादा प्रीति होती है और इसीलिए दृष्टि में दूरदर्शिता का अभाव हो जाता है और हमारे लिए धैर्य रखना संभव नहीं रह जाता है। यही कारण है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास बनकर रह जाता है। यदि आप उस स्थिति में खुद को यह समझाने में सक्षम हो जाते हैं कि यह समय धीरे-धीरे गुजर जाएगा और आप दोबारा इन हालातों से ऊपर उठ पाएंगे, तो आप निश्चित तौर पर उस स्थिति से बाहर आ सकते हैं। जब जीवन में आपको कुछ भी समझ न आए तो अपनी नियति को विपरीत परिस्थितियों की दिशा में अग्रसर होने दीजिए।

मैंने यह खुद अनुभव किया है कि जब कभी मेरा कोई महत्वपूर्ण काम बाधित हो जाता और हर संभव प्रयास करने के बाद भी उसका कोई समाधान न सूझता तो मैं विचलित हो जाता था, किंतु जब मुझे धीरे-धीरे एहसास हुआ कि विचलित या परेशान होने से उस परिस्थिति में कोई

परिवर्तन नहीं हो रहा है तो मन में यह विचार आया कि क्यों ना धैर्य के साथ उस परिस्थिति के गुजर जाने की प्रतीक्षा ही कर लें।

जब आपके सामने ऐसी कोई परिस्थिति आए तो उस परिस्थिति से एकदम निकलकर भागने का प्रयास करना आपको और कठिनाई में डाल सकता है। उसी परिस्थिति में रहकर आपको उन्हीं हालातों में से जिंदगी को कुछ आसान बनाने के तरीके खोजने चाहिए। जिस दिशा में परिस्थिति और नियति ले जा रही है आप उसी दिशा में कुछ समय तक उसके साथ चलने का प्रयास करें और धीरे-धीरे उसी परिस्थिति से संघर्ष करते हुए नए मार्ग की तलाश करें क्योंकि अगर आप एकदम इसके विपरीत होकर इससे बाहर निकलने की कोशिश करेंगे तो आप मुसीबत के भँवर में फँस सकते हैं।

इस बात को समझाने के लिए मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ, जिस प्रकार आप को तेज बहती हुई धारा के विपरीत तैर कर दूसरे किनारे पर जाना बहुत मुश्किल हो जाएगा परंतु यदि हम इस धारा के प्रवाह के साथ तिर्यक दिशा में तैरें तो थोड़ी लंबी दूरी तो जरूर तय करनी पड़ेगी लेकिन कम ऊर्जा खर्च करके किनारे पर आसानी से पहुँच सकते हैं। ठीक वैसे ही विपरीत परिस्थितियों से बाहर निकलने का प्रयास किया जा सकता है।

इसीलिए मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि जीवन में जब कुछ समझ न आए तो अपनी नियति को उसी दिशा में बढ़ने दिया जाए और समय के गुजरने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की जाए। यह सम्भव नहीं है कि हम जिंदगी के हर दांव-पेंच को समझ सकें। इसलिए यह बात बुद्धिमानी की होगी कि जिंदगी को समझने की बजाय जिया जाए। यह आवश्यक नहीं है कि जिंदगी सदैव अच्छी हो कभी-कभी हमें उन परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ता है, और करना भी चाहिए जिन परिस्थितियों में हमारी असली ताकत की पहचान होती है।

जीवन में धैर्य विकसित करने का मूल मंत्र स्वीकारना है। यह स्वीकार करना कि सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने की तुलना में प्रतिदिन सर्वोत्तम कार्य करना अधिक महत्वपूर्ण है। यह भी स्वीकार करना चाहिए कि आप कभी भी बहुत विलंब या समय से पहले नहीं होते हैं, जब भी आप अपना जीवन बदलने का निर्णय लेते हैं तो आप सदैव सही समय पर सही जगह पर होते हैं। इस बात की स्वीकृति आवश्यक है कि आपको खुश रहने के लिए महंगी चीजों की जरूरत नहीं है बल्कि अच्छी आदतों की जरूरत है।

एक बार जब आप अपने आसपास पनपे भ्रमों की बजाय जीवन की वास्तविकताओं को स्वीकार करना आरंभ कर देते हैं तभी तो आप अपनी जीवन रूपी यात्रा के लिए धैर्यवान और आभारी हो जाते हैं।

हिन्दी प्रतियोगितायें तथा हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह 2023 के आयोजन की कुछ झलकियाँ

मेरी रेल यात्रा

गौतम कुमार,
लेखाकार

नमस्कार, तो भैया हम हैं बिहार से और हमरी जो कहानी है बहुते मनोहर है, तो ध्यान से पढ़ियेगा क्योंकि हमने अपनी इस कहानी में हिन्दी के साथ-साथ बिहार की एक लोकल भाषा मगही का भी इस्तेमाल किया है। वैसे ट्रेन की कहानी हमेशा मेरे दादा जी सुनाया करते थे। जब मैं बहुत छोटा था वो कहा करते थे कि हमारे यहाँ ट्रेन रुकती नहीं थी। घर के सामने रोक ली जाती थी। पर अब वैसा नहीं है। ये उस समय की बात है जब मैं सात या आठ साल का रहा होऊँगा वैसे पूरी तरह तो याद नहीं है। मेरी रेल की पहली यात्रा की शुरुआत हुई। अपनी मम्मी के साथ बिहार में एक जगह है- राजगीर जिसे हम राजगृह के नाम से भी जानते हैं, यहाँ की एक मिठाई (खाजा) है जो कि काफी मशहूर है। तो घर से निकलते ही मैं बहुत ही ज्यादा उत्सुक था कि आज ट्रेन देखने के साथ-साथ सफर करने को भी मिलेगा। उसके बहुत सारे डिब्बे देखूँगा, उसमें लगे बहुत सारे पहिये देखूँगा क्योंकि ये भी सुना था कि उसके चक्के में चुम्बक लगे होते हैं, स्टेशन पर दो घंटे के लम्बे इंतजार के बाद बहुत दूर से उसकी सीटी की आवाज और उसकी धुक-धुक की आवाज जैसे मेरे कानों में कोई मधुर गीत सुना रही हो और फिर वह मेरे बहुत करीब आ गई। मैं उसे बस गौर से देख ही रहा था कि माँ ने जल्दी मेरा हाथ पकड़ कर ट्रेन में बिठा दिया, फिर मैंने सबसे पहले खिड़की वाली सीट पर कब्जा कर लिया और बैठ गया, कुछ मिनटों में ट्रेन धुक-धुक की प्यारी आवाज करते हुए आगे बढ़ी। मुझे बहुत ही आनन्द महसूस हो रहा था, कुछ देर बाद विभिन्न प्रकार के लोग, विभिन्न प्रकार का खाने का सामान, तरह-तरह की आवाजें निकाल कर बेचने आ गये, कभी चिनिया बादाम, तो कभी गरम चाय, तो कभी लाई तो कभी मिठाई। इन

सभी का मजा लेते हुए मैं आगे बढ़ रहा था कि अचानक मेरी नजर बाहर पेड़-पौधे, बाग-बगीचे इत्यादि पर पड़ी, नजारा कुछ ऐसा था कि मैं तो बिल्कुल ही स्थिर था पर सारे पेड़ पौधे, घर, बाग-बगीचे यहाँ तक कि लोग भी घूमते हुए नजर आ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि पूरी पृथ्वी घूम रही है। फिर मैं राजगृह घूमा, वहाँ के गरम झरनों में स्नान किया। पर्वतों तथा वहाँ के खूबसूरत बौद्ध मंदिर देखे और फिर घर वापस आ गया। लेकिन मेरे मन में एक सवाल हमेशा से चल रहा था कि मैं जब चलती ट्रेन में बैठा था तो बिल्कुल ही स्थिर था लेकिन बाहर की चीजें क्यों घूम रही थीं कि अचानक मेरी नजर गाँव के एक पंडित पर पड़ी, वे हमारे यहाँ अक्सर पूजा-पाठ कराने के लिए आया करते थे फिर हमारे मन में जो सवाल चल रहे थे वो उनसे पूछ लिये। सोचा पंडित जी हैं, संस्कृत में पूजा-पाठ करते ही हैं तो ज्ञानी भी होंगे ही। तो मैंने कहा पंडित जी जब हम स्कूटर से सफर करते हैं तो ऐसा महसूस नहीं होता है लेकिन ट्रेन से सफर करने में, मैं स्थिर और बाहर की सारी चीजें घूमती हुई नजर आईं? पंडित जी बोले देखिये जजमान ई जो तुमरी स्कुटरवा है न छोटा है इसलिए तुमको पता नहीं चलता है लेकिन जो ट्रेनमा जो होता है न ऊ बहुते बड़ा होता है इसलिए लगता है कि हमनी स्थिर हियै और सभी बाहर के पेड़वा पौधवा घूम रहा है।

फिर मैंने कहा हम संतुष्ट नहीं है पंडितजी, तो पंडितजी ने कहा- चार आना में हाथी खोजते हैं जजमान, खाली एक गिलास मट्ठा पिलाये हैं और सोचियेगा इतना में ही पूरा पृथ्वीये के जानकारी दे दें अरे कुछ दान उन दीजिए हमरी झोला भरिये तब न। पंडित जी से संतुष्ट न होने पर ये सवाल लेकर मैं अपने गुरुजी के पास पहुँचा और फिर पूछा तो गुरुजी ने कहा- गति हमेशा सापेक्षिक होती है, पृथ्वी घूमती है हम नहीं घूमते क्योंकि हमारे चारों ओर पायी जाने वाली वस्तुएं भी घूमती है। अतः हम घूमते हुए भी खुद को घूमते हुए महसूस नहीं करते, लेकिन जब हम रेल से सफर करते हैं

तो एक समान रफ्तार बिना किसी रफ्तार से चल रही होती है। अगर ट्रेन अपनी गति में बदलाव करे या रुक जाए तो सब कुछ रुका हुआ दिखाई देता है लेकिन जब ट्रेन एक समान चाल में चलती रहे तो हम स्थिर होते हैं और बाहर की सारी वस्तुएं घूमती हुई प्रतीत होती हैं। फिर क्या गुरुजी ने इतना घूमने की बात की, कि हमरा दिमाग भी घूम गया। इसके बाद तो न जाने कितनी बार रेल का सफर किया होगा लेकिन असली कहानी तो अब शुरु होती है।

एक समय की बात है। मैं साक्षात्कार देने दिल्ली जा रहा था, वैसे सामान्य प्रतिस्पर्धा की तैयारी करते समय परीक्षा देने न जाने कितनी बार गया होऊँगा कभी टिकट के साथ तो कभी बिना टिकट, ऐसा नहीं कि हमारे पिता जी पैसे नहीं देते थे वो तो जब भी परीक्षा देने जाता था तो 1000 माँगने पर 2000 दे कर भेजते थे और बोलते थे कि बाहर और कोई काम नहीं आता बाहर तो पैसे ही माँ और बाप होते हैं। दिल्ली जाने के लिए ट्रेन में तो बैठ गया लेकिन टिकट लेना ही भूल गया। फिर क्या ये मेरे लिए पुरानी बात नहीं थी। रास्ते में सात टी.टी. को मामू बनाते हुए दिल्ली पहुँचा और अपना काम खतम कर जब वापस लौटने की बारी आई सोचा कि मेट्रो का भी सफर कर ही लेते हैं फिर दिल्ली कश्मीरी गेट से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के लिए एक टिकट खरीदी और निकल पड़ा और जैसे ही मेट्रो से एक पैर नीचे बढ़ाया मेरा वजन 200 ग्राम कम महसूस हो रहा था फिर जब मैंने पीछे का पॉकेट चेक किया तो पर्स नहीं था। पॉकेटमार मेरा पॉकेट खाली कर चुके थे अब बस मेरे पास सौ-दो सौ रुपये ही बचे थे। अब जायें तो जायें कैसे उसी बीच कुछ दोस्तों का मेरे पास कॉल आया उनसे बात करने पर पता चला कि वो भी कोई परीक्षा देने आये थे और वापस लौट रहे हैं। फिर उनसे मेरे पैसे चोरी होने की कहानी बताई तो उसने बताया कि दिल्ली में ये कोई नई बात नहीं है।

अब हम लोग पाँच दोस्त दिल्ली से बिहार जाने वाली रेल पर सवार हो गये। फिर रास्ते में एक टी.टी. से रु-ब-रु हुआ। उन्होंने टिकट की माँग की लेकिन जैसे ही उन्हें बताया कि हम लोग विद्यार्थी हैं, वह वहाँ से चला गया और कुछ भी नहीं बोला, इसके बाद दूसरा टी.टी. आया, विद्यार्थी बोलने पर भी नहीं माना फिर एक दोस्त ने कहा मेरे मामा भी टी.टी हैं, उनकी पोस्टिंग अगले ही स्टेशन पर है फिर वे भी चले गए। फिर भाई साहब अब एक टी.टी. मिला उसे हम मामा नहीं बना पा रहे थे क्योंकि वो भी बिहार से ही था।

उन्होंने कहा अभी मजिस्ट्रेट चेकिंग चल रहा है, तो हम तो तुम लोगन को छोड़ब न। पैसा निकालो पॉकेट खाली करो नहीं तो जेल में चक्की पीसिंग-पीसिंग। बहुत बहस करने के बाद भी वो डटा रहा क्योंकि उन्हें भी पता था कि ऐसा भी नहीं है कि हम लोगों के पास पैसे नहीं हैं। बोला जो भी है सभी लोग अपना पॉकेट खाली करो उस पर भी बात न बनी तो बोला भाई पान नहीं तो पान की डंटी ही दे दो मतलब अब बात ₹500 नहीं ₹100 तक आ चुकी थी। फिर एक दोस्त ने कहा सर! मैं ट्रेन में हमेशा आपसे ही टिकट लेता हूँ तो 50% तो डिस्काउंट दे ही सकते हो और बाकी का डिस्काउंट विद्यार्थी समझ कर छोड़ दो, मतलब हो गये 100% डिस्काउंट। फिर हमारे कुछ दोस्तों ने कहा पैसे तो नहीं हैं। सर! एक काम करिये हमारे पास दो-तीन लिट्टी बची हुई हैं अगर चाहे तो यही खा लो और क्या। फिर टी.टी. ने गौर से सभी की तरफ देखा फिर उसे भी लगा कि ये सब पैसे नहीं देंगे फिर बोला लाओ भाई लिट्टिये दे दो। फिर वहीं लिट्टी पर डील फाइनल हो गई। फिर इतनी मुश्किल देखने के बाद भाई साहब फिर कभी भी बिना टिकट नहीं चला।

धनुषकोडी: एक परित्यक्त शहर

गौतम सरकार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं इस बात को मानता हूँ कि साल में एक बार किसी ऐसी जगह जाएँ, जहाँ आप पहले कभी नहीं गए हों।

इस वर्ष मैंने अपने एक मित्र तथा सहकर्मी के साथ तमिलनाडु राज्य के पंबन द्वीप के रामेश्वरम् के दक्षिण-पूर्व छोर पर स्थित एक परित्यक्त शहर धनुषकोडी की यात्रा करने की योजना बनाई।

योजना के अनुसार, हम दोनों ट्रेन से 28 सितंबर 2023 को सिलचर गए और उसी दिन रात 8 बजे सिलचर से तिरुवनंतपुरम् जाने वाली ट्रेन में चढ़े। तीन दिवसीय ट्रेन यात्रा यादगार थी। ट्रेन में बहुत सारे लोगों से मिले, वार्तालाप किया। हमने पूरी यात्रा के दौरान अपना-अपना खाना एक-दूसरे के साथ साझा किया। ट्रेन चार घंटे लेट थी और एक अक्टूबर की आधी रात को तिरुवनंतपुरम् पहुँची। तिरुवनंतपुरम् और फिर कन्याकुमारी में कुछ दिन बिता के हम 5 अक्टूबर 2023 की सुबह चार बजे ट्रेन से रामनाथपुरम् पहुँचे, जो रामेश्वरम् से 25 किमी दूर है। वहाँ से, हम सुबह पाँच बजे एक भीड़ भरी बस में चढ़े। सड़क, पुल तथा अन्नाई इंदिरा गांधी रोड ब्रिज के माध्यम से बंगाल की खाड़ी को पार करना एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला अनुभव था। रेलवे ब्रिज तथा पंबन सेतु, जिसका निर्माण 1914 में तत्कालीन सरकार द्वारा कराया गया था, पुराना हो जाने के कारण फरवरी 2023 से बंद कर दिया गया। एक नया रेलवे ब्रिज निर्माणाधीन है। बस सुबह छह बजे रामेश्वरम् पहुँची, हमने ऑटो लिया और बस स्टैण्ड से दो किलोमीटर दूर अपने होटल पहुँच गये।

रामेश्वरम् दक्षिण-पूर्व भारतीय राज्य तमिलनाडु में पंबन द्वीप पर एक शहर है। यह रामनाथस्वामी मंदिर के लिए जाना जाता है, जो अलंकृत गलियारों, विशाल नक्काशीदार स्तंभों और पवित्र जल टंकी वाला एक हिंदू तीर्थ स्थल है। भक्त अग्नि तीर्थम के पानी में स्नान करते हैं जो रामनाथस्वामी मंदिर के समुद्र तट के किनारे स्थित है। यह समुद्र तट एकदम शांत है। पहले दिन सुबह हमने रामनाथस्वामी मंदिर का दौरा किया और अग्नि तीर्थम में स्नान किया। शाम को अन्य पर्यटक आकर्षण जैसे भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के घर, राम तीर्थम, लक्ष्मण तीर्थम, पंचमुखी हनुमान मंदिर, पानी में तैरता हुआ पत्थर आदि जो हमारे होटल से पैदल दूरी पर थे, हमने दौरा किया। रामेश्वरम् में स्वादिष्ट साउथ इंडियन वेज थाली मिलती है जो हम दोनों को बहुत पसंद आयी।

अगले दिन हमने एक ऑटो किराए पर लिया और धनुषकोडी गए जो कि रामेश्वरम् से 15 किमी दूर स्थित है। धनुषकोडी पंबन द्वीप के दक्षिण-पूर्व में स्थित है और श्रीलंका के तलाईमन्नार से लगभग 24 किलोमीटर पश्चिम में है। रास्ते में, हमने विभीषण मंदिर तथा कुंठदरमार का दौरा किया जहाँ राम, सीता, हनुमान और विभीषण की मूर्तियाँ हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि इसी स्थान पर राम ने विभीषण का राज्याभिषेक किया था। धनुषकोडी को पाक जलसंधि द्वारा मुख्य भूमि से अलग किया गया है। जैसे ही हम धनुषकोडी की ओर आगे बढ़े, हमने रास्ते के दोनों ओर अंतहीन गहरा नीला समुद्र देखा जहाँ एक ओर हिंद महासागर है, वहीं दूसरी ओर बंगाल की खाड़ी है। दोनों के बीच का अंतर पूरी तरह से स्पष्ट है-समुद्र एक तरफ शांत और नीला है जबकि दूसरी तरफ उथले पानी से हरा है। धनुषकोडी शहर 1964 के रामेश्वरम् चक्रवात के दौरान नष्ट हो गया था और उसके बाद से निर्जन बना हुआ है। धनुषकोडी में नष्ट हुए चर्च, मकान, रेलवे स्टेशन के खण्डहर भी पड़े हुए हैं। 1964 की क्षेत्रव्यापी आपदा में 1800 से

अधिक लोगों की मृत्यु हुई थी जिसमें पंबन-धनुषकोडी पैसेन्जर ट्रेन के 115 यात्री भी थे। अभी दिन के दौरान धनुषकोडी में नष्ट हुए शहर के खण्डहरों के साथ-साथ केवल कुछ विक्रेता और खाने-पीने की दुकानें ही देखी जाती हैं। यह स्थान अपने पौराणिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। धनुषकोडी का मुख्य आकर्षण रामसेतु दृश्य बिंदु है, जिसे एडम ब्रिज के नाम से भी जाना जाता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि हिंदू किंवदंती के अनुसार इसका निर्माण भगवान राम के लिए वानरों (बंदरों) की सेना ने किया था। ऐसा कहा जाता है कि भगवान राम और उनकी वानर सेना ने, अपने भाई लक्ष्मण, हनुमान और रावण के भाई विभीषण के साथ मिलकर तैरते पत्थरों का उपयोग करके समुंदर के ऊपर पुल बनाया था। इस पुल ने उन्हें सीता को रावण से बचाने के लिए लंका तक पहुँचने में मदद की। लंका से विजयी होकर लौटने के बाद, नए राजा विभीषण ने राम से पुल को नष्ट करने के लिए कहा, इसीलिए, राम ने धनुष के एक सिरे का उपयोग करके पुल को तोड़ दिया, और उस स्थान को अपना नाम दिया। हमने धनुषकोडी में एक अद्भुत समय बिताया जो जब तक हम जीवित रहेंगे हमारे दिल और दिमाग में रहेगा।

गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर कार्यालय परिसर की साज-सज्जा का सायंकालीन दृश्य

मेघालय की यात्रा

नवदीप राय,
एमटीएस

यात्रा करना मुझे बहुत ही पसंद है। जब भी मुझे मौका मिलता है तो ज्यादा दूर ना सही पर आस-पास ही घूमने निकल पड़ता हूँ, कभी-कभी अकेले तो कभी दोस्तों के साथ। नयी जगहों पर जाना और नयी चीजों को देखने से मुझे बहुत ही सुकून और आनन्द मिलता है। नयी-नयी चीजों को देखने से अलग-अलग अनुभव मिलते हैं जो कि जीवन में बहुत काम आते हैं।

पिछले साल मुझे मेघालय जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दरअसल हुआ यूँ कि मेरा मित्र मेघालय की राजधानी शिलांग, जो कि गुवाहाटी से तकरीबन 100 किलोमीटर दूर है, में जॉब करता था। उसने कई बार मुझे अपने पास आने का आग्रह किया किन्तु समय ही नहीं मिल पाता था। परन्तु एक बार एक और मित्र के साथ वहाँ जाने का मौका मिल ही गया जिसे मैंने जाने नहीं दिया और तुरंत जाने की योजना बना कर निकल गए और पहुँच गए शिलांग।

दोस्त के साथ शाम तक हम दोनों उसके रूम पर पहुँच गए और अगले दिन कहाँ-कहाँ जाना है, योजना बनाने लगे, तो रात को यह तय हुआ कि अगले दिन चेरापूँजी घूमने जाएंगे और वापस आ जाएंगे और उसके अगले दिन "डावकी रिवर" जो कि एशिया की सबसे साफ नदियों में से एक है, वहाँ जाएंगे। उत्साह से भरे हुए हम लोगों को रात में नींद ही नहीं आ रही थी परन्तु बातें करते-करते देर रात हम लोग सो गए।

अगली सुबह जो गाड़ी हमने बुक की थी अपने नियत समय पर आ गयी और हम लोग चेरापूँजी के लिए निकल पड़े। गाड़ी वाले भैया मेघालय

से ही थे और आमतौर पर लोगों को चेरापूँजी घुमाया करते थे तो वे काफी जानते थे वहाँ के बारे में। हम सबने अपने-अपने सवालों के बाण उन पर चलाना शुरु कर दिए जिन्हें उन्होंने बड़ी ही कुशलता से सुलझा दिया। हमारे पास समय की कमी थी, क्योंकि हमने वापसी का टिकट दो दिन बाद का ही ले रखा था जो कि हमारी भूल थी, इसलिए गाड़ी में ही यह तय हुआ कि चेरापूँजी घूमने के बाद वापस शिलांग आना और अगले दिन "डावकी रिवर" जाने में ज्यादा समय नष्ट हो जाएगा। इसलिए हम लोग वापस ना आकर चेरापूँजी घूमने के बाद सीधा डावकी के लिए ही निकल जाएंगे, जो कि हमारी योजना बिल्कुल सही साबित हुई।

हम लोगों ने चेरापूँजी में बहुत सारी जगहें देखी जैसे कि "एलिफेंट फॉल्स", दो "साइट सीन", "वाह काबा फॉल्स", "नोहकलिकाइ फॉल्स", "इको पार्क", "सेवन सिस्टर फॉल्स", "मवसमाई गुफा" जैसी रोमांचक जगहें देखी। बहुत ही सुंदर नजारे थे जिन्हें शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं है, बस महसूस किया जा सकता है। सभी जगहों को देखने के बाद हम शाम को डावकी के लिए निकल गए। करीब तीन घंटे के बाद हम लोग "मौलिन्नोंग" नामक गाँव में पहुँच गए जो कि एशिया का सबसे साफ-सुथरा गाँव है। वहाँ पर हमने रात को रुक कर आराम किया परंतु थके होने के बाद भी अगले दिन के रोमांच में हमको नींद कहाँ आ रही थी। अगले दिन की योजना बनाते हुए हम सो गए।

अगले दिन हम सुबह जल्दी उठे और नहा-धोकर तैयार होकर गाँव में घूमे और जैसा सुना था बिल्कुल वैसा ही पाया। सचमुच बहुत ही सुंदर और साफ गाँव था और वहाँ रहने वाले सभी लोग सफाई का खास ध्यान रखते थे। गाँव घूमने के बाद हम लोग "रुट ब्रिज" पर आ गए जो कि नदी के दो तरफ के वृक्षों की जड़ों को जोड़ कर बनाया गया प्राकृतिक ब्रिज था। यह प्रकृति का अनूठा नजारा था जो हम अनुभव कर रहे थे। उसके बाद

हम डावकी के लिए निकल गए। करीब दो घंटे बाद हम डावकी आ गए। यहाँ पर नाव की सैर कराई जाती है जिसमें बैठ कर लोग साफ-सुथरी नदी और उसके आस-पास के नजारों का आनन्द लेते हैं। यह नदी भारत तथा बांग्लादेश में बहती है। हमने एक नाव बुक की और नाव में बैठ वहाँ के सौंदर्य का आनन्द लिया।

उसके बाद शिलांग की तरफ वापस आते समय हमने दो झरनों को देखा जो कि अपने आप में बेमिसाल थे। एक था "क्रांग सूरी फॉल्स" और दूसरा "फे-फे फॉल्स"। इनके बारे में जितना कहा जाए कम है। बहुत ही सुन्दर दृश्य थे दोनों के, हरे और नीले पानी का मिश्रण ऐसा लगता था मानो वह किसी भी व्यक्ति का मन जीत ले। हमारी यात्रा के समापन में इन दोनों ने चार चाँद लगा दिए और हमारे शिलांग वापस ना जाने किन्तु यात्रा में आगे बढ़कर रात में डावकी के पास रुकने के निर्णय को सही साबित कर दिया।

मुझे अफसोस इस बात का था कि हमने इतनी जल्दी वापसी की टिकट क्यों की। यदि और समय होता तो और जगह देख पाते और अनुभव ले पाते। मेघालय मेरी अपेक्षा से भी अधिक सुन्दर था, इसलिए मैंने वापस आने से पहले अपने मन में दुबारा एक बार फिर से आने का निर्णय लिया। मैं सभी को सलाह देता हूँ कि आपको भी एक बार मेघालय की यात्रा जरुर करनी चाहिए।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

विश्व परिप्रेक्ष्य में भारत में बर्डवॉचिंग का इतिहास

पार्थसारथी चक्रवर्ती,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

"पंछी बनूँ उड़ती फिरुँ, मस्त गगन में,
आज मैं आजाद हूँ दुनिया के चमन में।।"

हम बचपन से ही कविताओं, गीतों और परियों की कहानियों में विभिन्न तरीकों से पक्षियों को देखते और कल्पना करते आए हैं। कबूतरों से लेकर परी कथा में बंगमा-बंगामी तक, खेत में अंडे देने वाले हट्टिमेटम टिम से लेकर रामायण में जटायु तक, बचपन की काल्पनिक दुनिया में पक्षियों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। बाद में थोड़ी ऊँची कक्षा में पढ़ते समय मैंने पक्षियों के विभिन्न गुणों के बारे में पढ़ा। कौए को प्राकृतिक सफाईकर्मी तथा कोयल को वसंत का दूत कहा जाता है। मैं जानता हूँ कि बया, गोरैया की तरह के पक्षियों की एक प्रजाति है जो गोरैया की तरह मनुष्य के घरों में न रहकर पेड़ की टहनियों में लटकता हुआ सुन्दर घोंसला बनाकर रहती है। यदि हम पक्षियों की तरह उड़ सकें, तो यह विचार शायद हममें से प्रत्येक के बचपन का एक अधूरा सपना है। मुद्दा यह है कि पालतू जानवरों के अलावा पक्षी हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण जानवर हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से पक्षियों को देखना, चाहे शौक के लिए या वैज्ञानिक अवलोकन के लिए, उनके बारे में जानकारी एकत्र करना लंबे समय से चल रहा है।

दुनिया भर में बर्ड वॉचिंग का इतिहासः

बर्ड वॉचिंग या पक्षी-दर्शन का एक लंबा इतिहास है जो प्राचीन काल से लेकर आज तक फैला हुआ है। बर्डवॉचिंग या पक्षी-दर्शन को एक

गंभीर शौक के रूप में देखा जा सकता है। इसका भी एक लंबा इतिहास है। यहाँ दुनिया भर में पक्षियों का संक्षिप्त इतिहास दिया गया हैः

1) **अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दीः** "बर्डवॉचर" शब्द का प्रयोग संभवतः सबसे पहले 1901 में एडमंड सेल्स द्वारा किया गया था। हालाँकि बर्डिंग का मतलब आग्नेयास्त्रों से पक्षियों का शिकार करना था। हम शेक्सपियर के "द मैरी वाइव्स ऑफ विन्डसर" (1602) में भी बर्डिंग शब्द का उपयोग देखते हैं। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में प्रकृतिवादियों और संग्राहकों के बीच पक्षी देखना एक शौक के रूप में शुरु हुआ। इस अवधि के दौरान प्रारंभिक फील्ड गाइड और पक्षी विज्ञान संबंधी पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिससे पक्षियों की पहचान और अवलोकन में लोगों की रुचि जगी। संभवतः "नेटाल ऑर्निथोलॉजिकल क्लब" की स्थापना 1873 में उत्तरी अमेरिका में हुई थी, जो विश्व में पक्षी-पालन का प्रथम संगठन था। क्लब के लगभग 150 साल के इतिहास के दौरान, इसके सदस्यों ने पक्षीविज्ञान के क्षेत्र में महत्पवूर्ण योगदान दिया है।

2) **बीसवीं सदीः** बीसवीं सदी की शुरूआत में विशेष रूप से यूरोप और उत्तरी अमेरिका में कई और संगठित बर्डिंग क्लब बनाए गए। दूरबीन और स्पॉटिंग स्कोप जैसे बेहतर प्रकाशिकी के विकास ने उस समय के दौरान पक्षियों को देखने में काफी सुविधा प्रदान की।

   बीसवीं सदी के मध्य में, रोजर टॉरे पीटरसन जैसे व्यक्तियों के प्रयासों से उत्तरी अमेरिका में पक्षी-पालन लोकप्रिय हो गया, जिन्होंने उपयोगी फील्ड गाइड पेश किए। यही वह समय था जब पक्षियों के उत्सव और संगठित पक्षी गणना की शुरूआत के साथ, पक्षियों के बारे में जानकारी बड़े पैमाने पर दर्ज की जाने लगी।

3) **बीसवीं सदी के अंत से वर्तमान तकः** बर्डवॉचिंग का दुनिया भर में विस्तार जारी है, विभिन्न देशों के उत्साही लोग पक्षी विज्ञान अनुसंधान

और संरक्षण प्रयासों में योगदान दे रहे हैं। चूँकि पक्षियों की पहचान के लिए डिजिटल कैमरे और स्मार्टफोन ऐप सहित प्रौद्योगिकी के उपयोग ने पक्षी-दर्शन में क्रांति ला दी है, वर्तमान शताब्दी में एक शौक के रूप में "पक्षी फोटोग्राफी" बेहद लोकप्रिय हो गई है। युवाओं को कौन अंततः चिड़ियों के महत्व को समझने में सहायता कर रहा है।

भारत में बर्ड वॉचिंग का इतिहासः

दुनिया के साथ-साथ हमारे देश भारत में बर्ड वॉचिंग का एक समृद्ध इतिहास है। देश के विविध पक्षी जीवन और सांस्कृतिक विरासत के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं।

1) **प्राचीन कालः** सहस्त्राब्दियों से पक्षियों का भारत में सांस्कृतिक महत्व रहा है, प्राचीन कला, साहित्य और धार्मिक ग्रंथों में पक्षी विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। हम पक्षियों को देवताओं के वाहन, मिथकों और कहानियों के रूप में विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हुए देखते हैं। उदाहरण के लिए, लक्ष्मी देवी का वाहन उल्लू है, देव सेनापति कार्तिक का वाहन मोर है, शनिदेव का वाहन गिद्ध या कौवा है। इसके अलावा, हम सभी रामायण के जटायु पक्षी व नीलकंठ पक्षी के बारे में जानते हैं उस पक्षी ने विजयादशमी के दिन महादेव के पास जाकर माता पार्वती के आने की सूचना दी थी। इसका मतलब यह है कि पक्षियों का हमारे धर्म या पौराणिक कथाओं से गहरा संबंध है।

   हमारे हिंदू धर्म के साथ-साथ अन्य धर्मग्रंथों में भी पक्षियों का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए-मुस्लिम ['पृथ्वी पर चलने वाले सभी जानवर और दो पंखों के साथ उड़ने वाले सभी पक्षी, वे सभी आपकी तरह एक ही जाति के हैं।' (सूरह अनआम, आयत 38)], बौद्ध धर्म (शाक्य मुनि ने एक कबूतर को बाज से बचाने के लिए खुद का

बलिदान कर दिया) जानवरों के साथ-साथ इंसानों के अधिकारों की सुरक्षा की भी वकालत करता है।

2) **औपनिवेशिक कालः** औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश प्रकृतिवादियों और प्रशासकों ने भारत के पक्षियों पर डेटा के संग्रह में बहुत योगदान दिया। 1883 में बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) जैसी संस्थाओं की स्थापना ने पक्षीविज्ञान और संरक्षण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू की।

3) **स्वतंत्रता के बाद का युगः** भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद बीएनएचएस और अन्य संगठनों ने पक्षीविज्ञान अनुसंधान और संरक्षण के प्रयासों का नेतृत्व किया। सलीम अली जैसे प्रख्यात पक्षी विज्ञानी, जिन्हें 'भारत का पक्षी मानव' कहा जाता है उन्हें भारत में पक्षी अवलोकन और संरक्षण को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए अधिक जाना जाता है।

4) **बीसवीं सदी के अंत से वर्तमान तकः** समय के साथ भारत में पक्षी अवलोकन में तेजी आई है क्योंकि अधिक से अधिक लोग पक्षी देखने और अध्ययन में रुचि लेने लगे हैं। देश भर में स्थानीय पक्षी समूह और क्लब उभरे। द ग्रेट बैकयार्ड बर्ड काउंट, एक वैश्विक नागरिक विज्ञान पहल, भारत में भी बहुत लोकप्रिय हो गई है।

भारत की भौगोलिक विविधता पक्षियों की कई प्रजातियों को आकर्षित करती है। अतः हमारे देश की पक्षी अवलोकन के लिए स्वर्ग के रूप में कल्पना की जा सकती है। पक्षियों के प्रति सांस्कृतिक श्रद्धा, वैज्ञानिक अन्वेषण और अपनी पक्षी विरासत को संरक्षित करने के मिशन के बावजूद, देश का पक्षी इतिहास बेहद खराब स्थिति में है। इस साल अगस्त के आखिर में एक अखबार की एक खास खबर ने कई लोगों का ध्यान खींचा होगा। जहाँ 'स्टेट ऑफ इण्डियाज बर्ड्स' नाम की एक रिपोर्ट का हवाला दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि हमारे देश में पिछले तीस

सालों में पक्षियों की संख्या में साठ फीसदी की कमी आई है। तेरह सरकारी और निजी शोधकर्ताओं और तीस हजार पक्षी प्रेमियों ने इस जानकारी का सर्वेक्षण किया।

पक्षियों के लिए खतरे की घंटी बहुत पहले ही बज चुकी है, अगर हम लोग समर्पित आत्मा बनकर कार्रवाई नहीं करेंगे तो जिस तरह पक्षी सिर्फ तस्वीरों में नजर आएंगे, उसी तरह खाद्य श्रृंखला में व्यवधान के कारण इंसानों को भी नुकसान होगा।

1950 के दशक के अंत में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना में माओत्से तुंग के आदेश पर सभी गौरैया को मार दिया गया था। परिणामस्वरूप, कुछ ही वर्षों में उस देश में भयंकर अकाल पड़ गया, क्योंकि कीड़े बढ़ गये और खाद्यान्नों की भारी क्षति हुई। जिससे कम से कम साढ़े तीन लाख लोगों की मौत हो गई। हालाँकि कई लोगों का मानना है कि मरने वालों की वास्तविक संख्या कई गुना अधिक थी। हमें अपने अस्तित्व के कारण पक्षियों और अन्य जानवरों और पौधों की रक्षा करने की आवश्यकता है।

कार्यालय के प्रवेश द्वार पर स्थित हिन्दी, अंग्रेजी तथा बांग्ला भाषाओं के साहित्यकारों की मासिक प्रदर्शनी दीर्घा

राजस्थान और पर्यटन

प्रधान चौधरी,
एमटीएस

राजस्थान का नाम आते ही मन में थार का रेगिस्तान, ऊँचे-ऊँचे पर्वत, सूखा इत्यादि अनायास ही मन में आ जाते हैं। यह भारत के पश्चिम में फैला एक भौगोलिक प्रदेश है जिसे मरुस्थल अथवा थार का मरुस्थल कहते हैं। राजस्थान के थार में लगभग 60% भाग आता है। इसको पहले राजपूताना अर्थात् राजाओं के शासन की भूमि कहा जाता था। इसके अलावा, यह प्रदेश अपनी शानदार संस्कृति व गौरवमयी इतिहास के लिए भी जाना जाता है। एक तरफ यह अपनी भीषण गर्मी तपते रेगिस्तान के लिए मन में डर पैदा करता है, वहीं दूसरी तरफ अपने अद्भुत प्राचीन किले, स्मारक, शानदार हवेलियाँ तथा लोक-कला के माध्यम से सभी का मन मोह लेता है। यह प्रदेश प्राचीन लोक कथाओं के लिए भी प्रसिद्ध है। आज मैं आपको यहाँ के कुछ दार्शनिक लोक मेले व स्थानों के बारे में बता रहा हूँ।

1. रामदेवरा- भारत में कुंभ मेले के बाद दूसरा सबसे बड़ा मेला रामदेवरा में लगता है। जहाँ बाबा रामदेव का विशाल मन्दिर है। यहाँ श्रावण मास लगते ही यात्रा शुरु हो जाती है। राजस्थान के अलावा यहाँ गुजरात, उत्तर प्रदेश, हरियाणा से भी हजारों श्रद्धालु आते हैं। मान्यता है कि बाबा रामदेव का जन्म विक्रम संवत 1409 भाद्रपद तीज को बाड़मेर में हुआ। बाबा रामदेव एक समाज सुधारक थे। बाबा रामदेव ने अपने जीवन में कई चमत्कार किए, जिससे उनको पीरों के पीर रामापीर, रामाधणी जैसे नामों से पुकारा गया। उनके प्रिय घोड़े का नाम लीलण था। उन्होंने जात-पात छोड़कर मानवता को सर्वोपरि बताया। उनके मेले को प्रसिद्ध रुणीचा का मेला भी कहा जाता है। मात्र 33 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने समाधि ले ली

तथा उनकी प्रिय भक्त डालीबाई ने भी समाधि ले ली। वहाँ बाबा रामदेव ने अपने हाथों से तालाब खोदा। मान्यता है कि कुष्ठ रोगियों के वहाँ स्नान करने के उपरांत उनके कष्ट दूर हो जाते हैं।

2. तेजाजी का मेला- वैसे तो भारत में समय-समय पर अनेक वीर पैदा हुए जिन्होंने अपने देश के लिए बलिदान दिया। तेजाजी ने गायों की रक्षा हेतु अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। उनका जन्म नागौर में हुआ, वे जाट कुल के थे। उनके जन्मोत्सव दशमी के दिन सभी जगह मेला लगता है। उन्हें सबसे बड़ा गौ रक्षक माना गया है। गायों को छुड़ाने जाते हुए तेजाजी के मार्ग में एक भानक नाम का सर्प जल रहा होता है जिसे भाले की सहायता से तेजाजी बचा लेते हैं, किंतु सर्प उन पर नाराज हो जाते हैं तथा उनको डसने का प्रयास करते हैं। तेजाजी सर्प को वचन देते हैं कि गायों को छुड़ाने के उपरांत वो वापस बाम्बी आ जाएंगे। हुआ भी ऐसा ही सर्पदंश से उनकी मृत्यु हो गई तथा उनको वरदान मिला कि सर्पदंश से पीड़ित कोई भी व्यक्ति उनके नाम की ताती लगाएगा तो जहर उतर जाएगा। यह मेला पूरे भाद्रपद में चलता रहता है।

3. पुष्कर का मेला- यदि आपको राजस्थान को जानना है तो पुष्कर मेले में जाइए। यह हर वर्ष कार्तिक मास में लगता है। जहाँ बड़ी मात्रा में लोग अपने-अपने घोड़े, ऊँट व अन्य पशु लेकर आते हैं। यहाँ के स्थानीय लोगों का दावा है कि यह मेला 100 साल पहले से चला आ रहा है। इस मेले पर ग्रामीण धार्मिक अनुष्ठान, लोक संगीत तथा नृत्य करके यहाँ समृद्ध हिंदू संस्कृति का जश्न मनाते हैं। रेगिस्तान की वजह से पुष्कर मेले में ऊँट का महत्व बढ़ता जा रहा है। उनको बड़ी ही खूबसूरती के साथ सजाया जाता है। यहाँ ऊँटों की दौड़ का भी आयोजन करवाया जाता है। दुनिया का एकमात्र ब्रह्मा मंदिर भी अजमेर में ही है। अजमेर को राजस्थान का हृदय भी कहा जाता है। अजमेर में ही सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की

दरगाह भी है जिसको अजमेर शरीफ के नाम से जाना जाता है। यह पर्वत को काटकर बनायी गयी है। यहाँ तांबे के दो विशाल पात्र हैं। इनके साथ ही राजस्थान में कई रहस्यमयी जगह भी हैं जो यकायक ही पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं।

4. भानगढ़ का किला- राजस्थान की सबसे डरावनी जगह भानगढ़ का किला है। यह राजस्थान के अलवर जिले में है जो दिल्ली से थोड़ी ही दूरी पर है। माना जाता है कि इसमें रानी रत्नावती का शासन हुआ करता था। वहीं एक तांत्रिक भी रहता था जो रानी को पाना चाहता था। एक दिन उसने एक इत्र रानी को भिजवाया किंतु रानी जान गयी थी इसलिए उसने वो एक भारी पत्थर पर उड़ेल दिया। जब वो पत्थर तांत्रिक के पास गया तो उसने रानी समझकर अपने ऊपर ले लिया। मरते-मरते उसने वहाँ की जनता को श्राप दे दिया। माना जाता है कि आज भी रानी तथा उस तांत्रिक की आत्मा वहीं है। भारत सरकार ने 6 बजे के बाद वहाँ जाना निषेध कर रखा है। स्थानीय लोगों के अनुसार रात को वहाँ से बहुत आवाजें आती हैं।

5. राणा कुम्भा का महल- यह चित्तौड़गढ़ में स्थित है। यह राणा कुम्भा द्वारा बनाया गया था। जब वहाँ पर दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने हमला किया तो महारानी पद्मिनी ने 700 दासियों के साथ जौहर कर लिया। स्थानीय लोगों के अनुसार यहाँ अभी भी रात में चीखें सुनाई देती हैं तथा कुछ अपने साम्राज्य को बचाने हेतु मदद माँगती हैं। यहाँ भी सरकार ने सिर्फ 5 बजे तक ही प्रवेश की अनुमति दे रखी है।

6. कुलधरा गाँव- राजस्थान का सबसे डरावना गाँव कुलधरा राजस्थान की ऐसी जगह है जो करीब 200 सालों से वीरान पड़ा है। यह राजस्थान के जैसलमेर जिले में है। इसे भूतों का गाँव भी कहा जाता है। माना जाता है कि यहाँ पहले पालीवाल समुदाय के ब्राह्मण रहते थे। उस समय वहाँ के शासक सलीम सिंह के मंत्री की उस गाँव की एक लड़की

पर बुरी नजर थी। वो उसको पाना चाहता था। इसी कारण वो उस गाँव पर बहुत कर लगाता तथा उनको परेशान करता था जिससे सारे गाँव वाले एक ही रात में पता नहीं कहाँ चले गए। वहाँ जाने वाले बताते हैं कि अचानक ही उनके वाहन के सामने जैसे कोई आ गया तथा दिन में भी ऐसा प्रतीत होता है कि लोग कहीं जा रहे हैं। अभी वहाँ सिर्फ खंडहर ही बचा है।

राजस्थान में पर्यटकों के लिए कई और रुचिकर जगह भी हैं। जैसे इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए मेवाड़, आमेर महल, हल्दीघाटी, चित्तौड़ जैसे स्थान हैं। वहीं दूसरी तरफ धार्मिक रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए अजमेर, पुष्कर, आबू, महावीर जी, बाला जी के मंदिर दर्शनीय हैं। इन स्थानों पर न केवल विदेशी बल्कि देशी पर्यटकों का भी तांता लगा रहता है। शिल्प तथा संस्कृति में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए यहाँ प्राचीन हवेलियाँ, महल व दुर्ग हैं। जयपुर का हवा महल, आमेर महल, शीश महल, अपने आप में बहुत ही दर्शनीय हैं। नाहरगढ़ का किला भी अरावली पहाड़ियों में होने के कारण पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। यहाँ एक तरफ आपको जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर जैसे रेतीले प्रदेश मिलेंगे वहीं दूसरी तरफ बांसवाड़ा, उदयपुर भी है जिसे झीलों की नगरी भी कहते हैं जहाँ पानी प्रचुर मात्रा में है। राजस्थान में स्थित गोरम घाट की तुलना जम्मू-कश्मीर से की जाती है। ऊँची पहाड़ियाँ, बादलों का डेरा और ऊँचे झरनों में आप खो जाएंगे। फिल्मों की दृष्टि से भी राजस्थान सदैव अग्रणी रहा है। यहाँ का मंडावा जो कि झुंझुनू जिले में है, को दुनिया की सबसे बड़ी "ओपन आर्ट गैलरी" भी कहा जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमारी सिनेमा इंडस्ट्री के निर्माता निर्देशक इसकी तरफ आकर्षित होते आ रहे हैं। इसकी खासियत यहाँ इसके "हेरिटेज होटल" हैं जो सदियों पुरानी हवेलियों में बने हुए हैं। बॉलीवुड के अलावा पर्यटन ही मंडावा का प्रमुख कारोबार है। इस राज्य का राज्य पक्षी गोड़ावण है। यह शुतुरमुर्ग की

तरह दिखता है। यहाँ के लोग बहुत मिलनसार हैं तभी तो विदेशियों का स्वागत भी "पधारो म्हारो देश" गाकर किया जाता है। अत: किसी शायर ने कहा है:-

आओगे तो जानोगे कितना मनोहरता से लबालब स्थान है,
भारत का पेरिस गुलाबी नगर जयपुर जिसकी शान है।
हर तरह का रंग जहाँ की मिट्टी में विराजमान है,
ऐसा मेरा राजस्थान है। ऐसा मेरा राजस्थान है।।

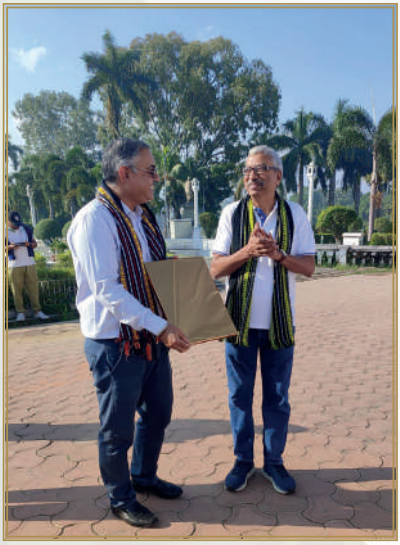

ऑडिट सप्ताह 2023 की पदयात्रा के दौरान स्मृति चिह्न भेंट करते हुए प्राधिकारी

जब अम्मा बीमार होती हैं

प्रियदर्शिनी सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी

जब अम्मा बीमार होती हैं
तो सारा घर बिखरा रहता है
जिस घर को वह
उठाए फिरती थी सर पर
बाबूजी भूल जाते हैं
चश्मा, रुमाल या घड़ी
घर पर ही।
कमरे में दिखने लगते हैं।
जाले मकड़ी के
शांत हो जाती है सबकी दिनचर्या
जब अम्मा बीमार होती हैं

तब सिल-बट्टा भूल जाता है
रगड़ अपनी।
आँगन में आने वाली गोरैया को
नहीं मिल पाते हैं चावल के दाने।
उदास होती है
आँगन की तुलसी
क्योंकि शाम को नहीं
दिखाता है बाती कोई।
और न ही गूँजती है
संध्या स्वर लहरी

जब अम्मा बीमार होती हैं।
बिस्तर पड़ा रहता है
जैसे के तैसे।
खो जाती है लाल, हरी
चूड़ियों की खनन-खनन।
बच्चे जाते हैं,
बिना टिफिन के स्कूल
जब अम्मा बीमार होती हैं।
महकने लगते हैं पैरों के मोजे,
शर्ट के कॉलर पर चढ़ जाती है।
एक परत धूल की
दादी दिन के चढ़ आने तक
बैठी रहती हैं अपनी खाट पर
जब अम्मा बीमार होती हैं।

जिंदगी सिमटने लगती है।
अपने पंखों में
बारिश में भीगे
कबूतरों की तरह
अम्मा का बीमार होना
जिंदगी का सिमट जाना
समझा जाता है धीरे से
अहमियत एक औरत की
जो दिन भर दौड़ा करती है
दो पैरों पर
पुरानी पायलों को पहने हुए।

भारतीय नारी

बिपाशा सरकार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समाज में पुरुष और नारी एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं। अगर एक भी पहिया खराब हुआ तो परिवार भी डगमगाने लगता है और अगर परिवार डगमगाने लगा तो समाज पर भी असर होता है। इससे एक स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं हो सकता और अस्वस्थ समाज एक विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता।

भारत में नारी को देवी के रूप में पूजा गया है। यहाँ राक्षसों को मारने के लिये देवी दुर्गा, धन के रूप में लक्ष्मी, विद्या के रूप में सरस्वती, काली इन देवियों को पूजा जाता है। इन्हें पुरुष भी पूजते हैं।

प्राचीन काल में नारियों का सम्मान किया जाता था तब अनेक विदुषियों ने इस भारत भूमि को अलंकृत किया। उस समय यह माना जाता था **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।"** उस समय नारी को उचित सम्मान दिया गया इसलिये तब समाज भी सुदृढ़ अवस्था में था।

समय परिवर्तित हुआ, भारत पर विदेशियों का आक्रमण शुरु हुआ विदेशियों के अत्याचारी स्वभाव के कारण महिलायें घर से निकलना बंद कर दीं और घर में कैद रहने लगीं। इससे यह हुआ कि उनके शिक्षण पर असर हुआ और समाज के प्रति हिस्सेदारी न के बराबर हो गयी और धीरे-धीरे पुरुष शासित समाज बन गया। इसके बाद राजा–महाराजा आये और नारी उपभोग की वस्तु बन गयी और उनका काम पुरुष की हर बात को मानना था। यहीं से समाज में कई कुप्रथाओं का जन्म हुआ। इसका सबसे

बड़ा उदाहरण है सती प्रथा, बाल विवाह। इन प्रथाओं ने नारी को एक मृत शरीर के रूप में खड़ा कर दिया। मृत शरीर एक अच्छे समाज का गठन नहीं कर सकता। यह समय नारी के लिए एक अभिशाप के रूप में आया।

इसके बाद, समय परिवर्तित हुआ। अब भारत में अंग्रेजों से आजादी का बिगुल बजा और 1857 क्रांति के रूप में धीरे-धीरे कई क्रांतियाँ हुईं। उसमें कई नारियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। इसे हम रानी लक्ष्मी बाई, रानी दुर्गावती के रूप में देख सकते हैं जिन्होंने अपनी अल्पायु में अपने जीवन को न्यौछावर कर दिया। इसके बाद समय के साथ कई समाज सुधारकों का जन्म हुआ जिसमें ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय थे। उन्होंने सती प्रथा को समाज से निकालने के लिए अंग्रेजों से बात की और कानून बनाया क्योंकि सती प्रथा समाज के लिए हानिकारक है। यह जघन्य अपराध है। विधवा विवाह को विद्यासागर ने प्रारंभ किया, ऐसे कई समाज सेवी हैं।

आधुनिक भारत में स्वतंत्रता संग्राम में बहुत-सी नारियों ने देश के लिये काम किया। जिसमें प्रमुख नामों में से एक हैं- भारत कोकिला सरोजनी नायडू।

इसके बाद देश आज़ाद हुआ और भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी बनीं। इससे महिलाओं को प्रोत्साहन मिला और महिलायें डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, पायलट, विभिन्न पेशों से जुड़ गयीं। निरंतर उनकी संख्या बढ़ने लगी। अब महिलाओं के लिए अलग से शिक्षण संस्थान खुले और महिलाओं की भागीदारी बढ़ने लगी। समय के साथ-साथ कई कुप्रथाओं ने जन्म लिया जैसे–दहेज प्रथा। यह प्रथा, वर्तमान समय में इतनी ज्यादा हो गयी कि इसके कारण कई वधुओं की हत्यायें होने लगीं और निरंतर हो रही हैं। यह एक सभ्य समाज के लिए धब्बा है। अभी भी गाँवों में इतने शिक्षण संस्थान नहीं हैं जहाँ नारी निर्भीक होकर जा सके।

इससे वे पढ़ाई बीच में छोड़ देती हैं जिससे वे दूसरों पर निर्भर हो जाती हैं और शोषित होती रहती हैं। कई कानून बनाये गये हैं पर वो काफी नहीं हैं।

वर्तमान समय में महिलाओं के लिये कई सरकारी योजनायें बनायी गयी हैं। इसमें कई केंद्रीय और राज्य स्तरीय योजनायें हैं। इसमें से कुछ ये हैं- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, समर्थ योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, राज्य स्तरीय में जैसे मध्य प्रदेश की लाडली लक्ष्मी योजना, लाडली बहना योजना।

महिला आरक्षण बिलः इसमें संसद और विधानसभा में 33% महिलाओं का आरक्षण होगा जो एक बहुत अच्छा कदम है। इसमें ये महिलायें नेतृत्व कर सकेंगी और महिलाओं की समस्याओं का निराकरण कर सकेंगी। इस बिल को नारी शक्ति वंदन अधिनियम का नाम दिया है।

हमें विकसित राष्ट्र बनाने के लिये नर-नारी दोनों का पहिया मजबूत करना पड़ेगा। दोनों को समान अवसर देना पड़ेगा। हर जगह दोनों की उपस्थिति होना जरुरी है। क्योंकि दोनों की आबादी 50-50 प्रतिशत है। दोनों की उपयोगिता विकसित राष्ट्र के लिये जरूरी है। नारी का सम्मान करें, उसे अबला न समझें।

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित 1987, 2007, 2011) के अनुसार भाषा के ज्ञान की दृष्टि से भारत को तीन क्षेत्रों में विभक्त किया गया है अर्थात् क्षेत्र 'क' क्षेत्र 'ख' तथा क्षेत्र 'ग'।

संगीतीय उपचार पद्धति

बिल्टू साहा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संगीतीय उपचार पद्धति (म्यूजिक थेरेपी) एक लोकप्रिय मनोवैज्ञानिक चिकित्सा है जिसको शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक स्थिति के सुधार के लिए कई वर्षों से प्रयोग किया जा रहा है। विशेषकर, ग्रीक दर्शन और अमेरिकन संस्कृतियों में यह थेरेपी बहुत लाभदायक मानी जाती है। प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अस्पतालों में भर्ती घायल सैन्य कर्मियों की शारीरिक वेदना तथा मानसिक तनावों को कम करने के लिए पेशेवर संगीतकार द्वारा यह थेरेपी प्रयोग की जाती थी। इससे घायल सैन्य कर्मियों का मनोरंजन तथा उनकी मनोदशा में सुधार और उनमें सकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगता था। आज भी यह थेरेपी विदेशी अस्पतालों में बच्चे और किशोर मरीज, जो कि कठोर बीमारी से जूझ रहे हैं उनके दिमागी आराम के लिए प्रयोग की जाती है। म्यूजिक थेरेपी में विशेष वाद्ययंत्र प्रयोग करके या गाना गाकर मरीजों को, खासतौर पर कैन्सर से पीड़ित मरीजों को मानसिक तौर पर एक सुखद अनुभव प्रदान किया जाता है।

आधुनिक जीवन में म्यूजिक थेरेपी एक लाभदायी प्रयोग है जिससे हम घर बैठे ही बहुत सारी मानसिक समस्याओं को कम कर सकते हैं। एक शोध के अनुसार भारतीय शास्त्रीय संगीत नियमित सुनने से किसी भी व्यक्ति की मानसिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कोई भी कहानी या कविताओं की ऑडियो बुक सुनकर बच्चों की मनोदशा में परिवर्तन किया जा सकता है। माँ अपने बच्चों को लोरी सुनाकर सुलाती

है, ये भी एक तरीके की म्यूजिक थेरेपी है। बहुत सारे होटल्स, रेस्टोरेंट तथा एयरोप्लेन के अन्दर मृदु संगीत बजाया जाता है, इससे वहाँ रहने वाले व्यक्तियों का मन लगा रहता है और वो परेशान महसूस नहीं करते हैं। इसके अलावा, योगा या ध्यान करते समय मृदु संगीत का प्रयोग किया जा सकता है। इससे एकाग्रता बढ़ती है। हमारे नित्य जीवनधारा में मानसिक तनाव एक आम बात है। प्रतिदिन कुछ समय के लिए अपने पसंदीदा संगीत सुनने से हमें रोज के भाग-दौड़ वाले जीवन से थोड़ी-सी राहत मिलती है। ये सुखद अनुभूति हमें मानसिक शांति और निश्चय प्रदान करती है।

मनोविज्ञान के अनुसार म्यूजिक थेरेपी के प्रयोग से विभिन्न मानसिक स्थितियों का इलाज हो सकता है, जैसेः

1. निद्राहीनता
2. घबराहट
3. एकाग्रता कम होना
4. क्रोध प्रबंधन
5. अवसाद
6. दीर्घ चिंतन

इसके अलावा, म्यूजिक थेरेपी से शारीरिक स्थितियों में भी सुधार लाया जा सकता है, जैसेः

1. श्वसन स्वाभाविक करना
2. रक्तचाप नियंत्रित करना
3. हृदय गति दर कम करना

प्राचीन भारत के ऋषि मुनियों ने भी संगीत द्वारा ईश्वर के नाम का जप किया है। इससे उन्हें सकारात्मक ऊर्जा मिलती थी। इसलिए, आध्यात्मिक दृष्टि से भी संगीत को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। हम इस विरासत को

एक लाभदायक प्रयोग में बदल सकते हैं। म्यूजिक थेरेपी किसी भी आयु की नारी या पुरुष के लिए उपयुक्त है। ये किसी भी व्यक्ति की मानसिक स्थिति में सुधार लाने का एक प्राकृतिक तथा मनोरंजक उपाय है। म्यूजिक थेरेपी का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि इसका कोई नकारात्मक असर नहीं है और ये आसानी से उपलब्ध है।

हिन्दी दिवस एवं पखवाड़ा समापन समारोह 2023 के दौरान हिन्दी पत्रिका 'नागकेसर' के प्रथम अंक (सितंबर 2023) का विमोचन करते हुए प्राधिकारी गण

उद्यमशीलताः समय की आवश्यकता

राकेश चंद्र श्रीवास्तव,
सहायक लेखा अधिकारी

"उद्यमेन हि सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।"

अर्थात् उद्यम से ही कार्य सफल होते हैं ना कि मनोरथों से। ठीक उसी प्रकार सोए हुए शेर के मुख में हिरण नहीं प्रवेश करता है।

भारत जैसे विशाल देश में जिसकी आबादी आज 1.4 अरब है, लोग रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं, भले ही उनकी शैक्षणिक योग्यता कितनी भी ऊँची क्यों न हो। आज के गतिशील परिदृश्य में उद्यमिता आर्थिक और सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण चालक के रूप में उभरी है। इसकी आवश्यकता वर्तमान युग से अधिक स्पष्ट कभी नहीं रही है।

उद्यमिता नवाचार को बढ़ावा देती है। उद्यमी परिवर्तन के वास्तुकार हैं जो मौजूदा समस्याओं के लिए नए समाधान खोजते रहते हैं। उद्यमशील व्यक्ति उत्पाद और सेवाएं देते हैं, और समाज को प्रगति की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। उद्यमी व्यक्ति किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझते हैं, वे सभी कार्यों को अत्यंत ही मेहनत और लगन के साथ करते हैं।

आज के दौर में उद्यमिता बढ़ने से और पारंपरिक नौकरी संरचनाओं में बदलाव के साथ नए उद्यम नौकरी के लिए इंजन के रूप में कार्य करते हैं। विशेष रूप से छोटे और मध्यम आकार के व्यवसाय विविध रोजगार विकल्प प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे बेरोजगारी दर कम होती है। लोग स्वचालन के कारण अपनी नौकरी जाने के भय से

नई टेक्नोलॉजी और मशीनों का विरोध करना भी शुरू कर देते हैं, इससे उत्पादन क्षमता में काफी गिरावट आती है।

उद्यमिता लचीलेपन का पोषण करती है। आर्थिक अनिश्चितता के समय उद्यमी चुनौतियों से निपटने और दृढ़ रहने की उल्लेखनीय क्षमता प्रदान करते हैं। आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण नौकरी करने वाले व्यक्ति अपना रोजगार खो सकते हैं और उनकी हालत कभी-कभी दयनीय भी हो जाती है; लेकिन दूसरी ओर उद्यमी व्यक्ति लचीलेपन के स्तंभ बन जाते हैं, उन्हें इन आर्थिक अनिश्चितताओं का भय नहीं होता है, बल्कि वे आर्थिक स्थिरता में योगदान करते हैं। समाज और समुदायों के भीतर आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ावा देते हैं। वे समुदायों में यह आत्मविश्वास पैदा करते हैं कि ये अल्पकालीन अनिश्चितताएँ उन्हें ज्यादा परेशान नहीं कर सकती हैं और वे इससे आसानी से उभर सकते हैं।

इसके अलावा, उद्यमिता संसाधन अनुकूलन को प्रोत्साहित करती है। दक्षता की इच्छा से प्रेरित उद्यमी अक्सर संसाधन के स्थायी उपयोग करने के लिए नवीन तरीके ढूँढते हैं। इससे संसाधन का बेहतर उपयोग हो पाता है और न केवल पर्यावरण को ही लाभ होता है बल्कि कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी पर बढ़ते जोर के साथ तालमेल बिठाते हुए व्यवसाय के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण को भी बढ़ावा मिलता है।

अतः निष्कर्ष यह है कि हमें समाज में ज्यादा से ज्यादा उद्यमिता को बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग नौकरी न मिलने की कुंठा से बचे रहें। देश और समाज में उद्यमी व्यक्तियों को प्रतिष्ठा और सत्कार मिल सके क्योंकि यही वे लोग हैं जो देश को तरक्की के सही रास्ते पर ले जा रहे हैं। व्यर्थ में नौकरी की तैयारी में लगने वाले समय और ऊर्जा की बचत हो सके और देश के लिए नौजवानों की ऊर्जा और उनका सबसे उत्पादक समय देश की भलाई और तरक्की में काम आ सके।

बदलते परिवेश में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की भूमिका

राजीव कुमार,
लेखाकार

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में 'शासन' शब्द इतना व्यापक हो गया है कि यह केवल सरकार तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अब यह कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका से विस्तारित होकर सिविल सोसाइटी, सामाजिक संगठन, मीडिया और जनता तक फैल गया है। सरकार के ये अंग पहले से कहीं अधिक सशक्त आवाज उठा रहे हैं और सरकार से बेहतर प्रदर्शन की अपेक्षा रखते हैं।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा जारी रिपोर्टें समय-समय पर चर्चा का विषय रही हैं। टूजी स्पैक्ट्रम, कॉमनवेल्थ गेम्स, कोल माइन्स संबंधी रिपोर्ट इत्यादि कई रिपोर्ट हैं जिन्होंने सरकार की नींव तक को हिला कर रख दिया है। भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की नियुक्ति, उनके अधिकार और कर्त्तव्यों को लेकर संसद में भी गूँज रहती है।

भारतीय संविधान के अध्याय-5, अनुच्छेद 148 (1) के अनुसार भारत का एक नियंत्रक-महालेखापरीक्षक होगा जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाएगी। वह अपने कार्यकाल में 6 वर्ष या 65 वर्ष (जो भी पहले हो) की आयु तक रहता है।

संविधान के अनुच्छेद 149 के अनुसार नियंत्रक-महालेखापरीक्षक संघ और राज्यों के तथा अन्य प्राधिकारी या निकाय के लेखाओं के संबंध में ऐसे कर्त्तव्यों का पालन करेगा जो संसद द्वारा निर्धारित अनुच्छेद 150 के अनुसार संघ एवं राज्यों के लेखाओं को राष्ट्रपति द्वारा महालेखापरीक्षक की सलाह पर संसद में रखा जाता है।

महालेखापरीक्षक रिपोर्ट

संविधान के अनुच्छेद 151 (1) के अनुसार संघ के लेखाओं को राष्ट्रपति द्वारा तथा राज्य के लेखाओं को राज्यपाल द्वारा प्रस्तुत करवाया जाएगा। संघ एवं राज्यों की इन रिपोर्टों को पहले संसद की लोक लेखा समिति के समक्ष रखते हैं।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की स्वायत्तता

वर्तमान परिवेश में जहाँ पारदर्शिता की उम्मीद पूरी लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनती जा रही है, वहीं इन संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता भी लोकतंत्र की सफलता का मार्गदर्शक सिद्धान्त साबित होगी। संविधान में महालेखापरीक्षक के परीक्षण से कहीं अधिक अपेक्षा रखी गई है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भी कहा था-"वह अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन उचित रूप से कर सके इसलिए यह ध्यान देना आवश्यक है कि इनका पद कार्यपालिका के नियंत्रण से बाहर होना चाहिए और उसके अधीनस्थ नहीं रहना चाहिए।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसे संवैधानिक पदों पर नियुक्ति का प्रावधान निष्पक्ष रूप से होना चाहिए जो किसी राजनैतिक दल का व्यक्ति न होकर अपनी संवैधानिक मर्यादाओं के हितों का संरक्षण कर सके तथा जनमानस की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सके।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की बदलती भूमिका

आज भारत में नागरिक समाज जागरुक व मुखर हो रहा है और सरकार को उसके फैसलों के लिए जवाबदेह बना रहा है। आज आम जनता सरकार के साथ वार्ता और फैसलों में भागीदारी चाहती है। देश के युवा वर्ग को अपेक्षा है कि देश के राजनेता संविधान द्वारा निर्मित प्रावधानों के अनुरूप चलें तथा सुशासन के लिए नैतिक ढाँचे का निर्माण करें। ऐसी स्थिति में लोकलेखा परीक्षण को भी अपने लक्ष्यों और जन आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है।

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक ने सकारात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के साथ-साथ उन बिन्दुओं की ओर भी ध्यान दिया है जिससे अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकें। इसकी रिपोर्टों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को व्यापकता प्रदान करने के लिए छोटी पुस्तिकाएं और रिपोर्ट भी तैयार की जाती हैं, जिससे जनमानस को महत्वपूर्ण संदर्भ की जानकारी मिल सके और उनकी जागरुकता बढ़े। इसके अतिरिक्त बेहतर अन्तर्दृष्टि और सामाजिक क्षेत्र की व्यापकता को बढ़ावा दिया जाता है।

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की परम्परागत भूमिका वित्तीय लेन-देन की वैधता की जाँच पड़ताल करना है, क्योंकि सामान्य जनमानस की इससे अपेक्षा है कि सरकार जनता के धन को कैसे खर्च करती है। बदलते सामाजिक परिवेश में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। अब समय आ गया है कि संविधान में इस प्रकार का संशोधन किया जाए कि नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की स्वायत्तता अक्षुण्ण रहे तथा जनता के धन पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित हो सके।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

क्र. सं.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री वी. नरहरि राव	1948-1954
2.	श्री ए. के. चन्दा	1954-1960
3.	श्री ए. के. रॉय	1960-1966
4.	श्री एस. रंगनाथन	1966-1972
5.	श्री ए. बख्शी	1972-1978
6.	श्री ज्ञान प्रकाश	1978-1984
7.	श्री टी. एन. चतुर्वेदी	1984-1990
8.	श्री सी. जी. सोमैया	1990-1996
9.	श्री वी. के. शुंगलू	1996-2002
10.	श्री वी. एन. कौल	2002-2008
11.	श्री विनोद राय	2008-2013
12.	श्री शशि कान्त शर्मा	2013-2017
13.	श्री राजीव महर्षि	2017-2020
14.	श्री गिरीश चंद्र मुर्मू	2020 से अब तक

बचपन की यादें

रोहित कुमार,
एमटीएस

सभी को बचपन की यादें अच्छी लगती हैं और सभी सोचते हैं कि काश वे सभी अपने बचपन में वापस जा पाते और फिर से अपने उस बचपन को जी पाते और वो सब कुछ कर पाते जो उस समय नहीं कर पाए किंतु अब करने का मन करता है। एक शाम को बैठे हुए यूँ ही सोचते-सोचते बचपन की कुछ बातें याद आ गईं।

जब हम छोटे थे तो किसी बात की कोई चिंता या फिक्र नहीं रहती थी जो मन में आता था करते थे क्योंकि बचपन होता ही ऐसा है, दुनिया के सभी रीति-रिवाजों, परंपराओं, बंधनों से आज़ाद और आज़ाद रहना भला किसको अच्छा नहीं लगता।

उन दिनों मनपसंद खाना होता था माँ के हाथों का बना खाना जो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ आज भी हम सभी का मनपसंद होगा। माँ का हमें सुलाते समय गाया जाने वाला गाना या लोरी सभी का आज भी मनपसंद गाना होगा और सोने के लिए माँ की गोद से अच्छा बिछौना दुनिया में कोई नहीं हो सकता। माँ से जुड़ी चीज़ों की बराबरी दुनिया की कोई भी वस्तु नहीं कर सकती।

बचपन में सर्दी के मौसम में रविवार के दिन मम्मी नहला धुला कर धूप में बैठा देती थी और फिर बालों में तेल लगाकर जब कंघे से मेरे बाल बनाती थी तो वो मेरे लिए सबसे सुंदर माँग हुआ करती थी, और बाद में किसी की नज़र ना लगे इसके लिए चुपके से अपनी आँख के कोने से थोड़ा-सा काजल अपनी उँगली में लेकर एक काला टीका मेरे माथे पर लगा देती थी। कभी-कभी रविवार के दिन मम्मी खिचड़ी बनाती थी जो कि हम

सभी लोग साथ बैठकर सर्दी की धूप का आनंद लेते हुए खाया करते थे। सर्दी के रविवार की धूप में सभी के साथ में बैठकर वो खिचड़ी खाना आज भी बहुत याद आता है।

गर्मियों में जब स्कूल की छुट्टियाँ पड़ती थीं तो पड़ोस के सारे बच्चे मिलकर तरह-तरह के खेल खेला करते थे और खूब मौज-मस्ती किया करते थे। गर्मियों में शाम के समय सभी बच्चे बिजली जाने पर मायूस होकर घरों से बाहर आ जाते थे परंतु जैसे ही एक दूसरे को साथ में देखते सबकी मायूसी दूर भाग जाया करती थी और जैसे ही बिजली वापस आती थी सभी बच्चे खुशी से नाचते और ज़ोर से चिल्लाते "लाइट आ गई", "लाइट आ गई"। एक अलग ही उत्साह और खुशी महसूस होती थी बिजली के आने पर। हालांकि बात छोटी-सी ही है पर इन्हीं छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ थी। गली में आइसक्रीम वाले के आ जाने पर सभी बच्चे उसे घेर लेते और अपनी-अपनी मनपसंद आइसक्रीम उससे माँगने लगते और बारिश के मौसम में जब बरसात होती थी तो मम्मी चाय और पकौड़े बना देती थीं जो हम बड़े मजे से खाते थे और सारे बच्चे मिलकर कागज़ की नाव बना कर बरसात के पानी में चलाते थे और रेस लगाते थे कि किसकी नाव सबसे आगे रहेगी और कौन जीतेगा। बरसों बाद आज भी जब कभी बरसात होती है तो वही चाय-पकौड़े याद आते हैं।

माँ का पल्लू भी याद आता है। जब शाम को खेल कर घर वापस आते थे तो मम्मी हाथ मुँह धोकर अपने पल्लू से ही मुँह पोंछ देती थी और जब कभी ज्यादा गर्मी लगती थी तो उसी पल्लू को पंखे की तरह झलना बना के हवा करने लगती थी और रात को सोते समय अगर मच्छर परेशान करते थे तो वही पल्लू वो हमें उढ़ा दिया करती थी और जब हम कहते थे मम्मी कुछ खाने के लिए पैसे दे दो तो पल्लू के छोर में बँधे पैसे खोल कर वो हमें दे देती थी।

जब छुट्टियों में दादा-दादी या नाना-नानी के घर जाते थे तो उनके पास ही सोने की ज़िद किया करते थे क्योंकि उनके पास रात को सोते समय सुनाने के लिए कहानियों का पिटारा हुआ करता था और वे सभी कहानियाँ हमें बहुत रोमांचित करती थी। बूढ़े-बुजुर्ग लोगों के पास साझा करने के लिए बहुत से किस्से व अनुभव होते हैं इसलिए उनके पास जरूर बैठना चाहिए और उनके जीवन के अनुभवों को सुनना चाहिए और उनसे सीख लेनी चाहिए और अपने जीवन में अच्छी बातों को उतारना चाहिए। बड़ों का आशीर्वाद भी अतुल्य होता है इसलिए जब भी अवसर मिले अपने से बड़ों का प्यार और आशीर्वाद जरूर लेना चाहिए।

जब छोटे थे तो ऐसी ही छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ थीं, अभी बड़े हो गए हैं और बड़ी खुशियों की आशा लगाए बैठे हैं जबकि खुशियां अभी भी छोटी-छोटी बातों में ही हैं। मैं तो कहता हूँ कि हर इंसान को अपने अंदर बचपने को जिंदा रखना चाहिए ताकि उसे बाहर की दुनिया में खुशियाँ न तलाश करनी पड़े, क्योंकि खुशियाँ तो मन के अंदर ही हैं हमें बस उसे दूसरे नजरिए से देखने की जरूरत है।

पारिभाषिक शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अनुवाद
Landmark	सीमा चिह्न
Lay off	छंटनी
Liquidation of debt	ऋण का समापन
Modus Operandi	कार्य प्रणाली

बुढ़ापे की विपदा

विशाखा,
लेखाकार

बढ़ती उम्र के कारण अब,
कम हो रहा आँखों से दिखना,
रही नहीं फुर्ती बदन में,
न रहा कोई अब सपना।

झुर्रियाँ उभर रहीं चेहरे पर,
शरीर में है दुर्बलता आई,
चिंता की रेखा माथे पर,
क्यों नहीं दी बच्चों को दिखाई?

उड़ गए पंछी बन बच्चे,
माँ-बाप को तनहा छोड़ गए,
उनका सहारा बनने की उम्र में,
अपना रुख वो मोड़ गए।

अनुभवों का समंदर हो कर भी,
उन्हें, उनके अपने छोड़ गए हैं,
न जाने अब दुनिया में क्यों,
माँ-बाप, बच्चों पर बोझ हो गए हैं।

आँखें भरी रहती अब उनकी,
अपने बच्चों की आस में,
चाहे कितना भी ढूँढ़ें वो,
दिखता नहीं कोई पास में,

दफनाई ख़्वाइशें जिनकी खातिर,
सुख-चैन भी त्यागा है,
रातों को जागे जिनके लिए,
उन्होंने ही उन्हें ठुकराया है।

एक ही कामना रहती अब उनकी,
खुशहाल रहे उनका परिवार,
रहें सब साथ में मिल-जुल कर,
बने सभी जिम्मेवार।

आखरी पड़ाव पर जीवन के,
एक सहारा काफी है,
आएँ वो एक बार सब छोड़ कर वापिस,
गिनी हुई साँसें बाकी हैं।

कार्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन

चैट जीपीटी

शान्तनु कुमार,
डीईओ

दुनिया में हमेशा कुछ न कुछ नई टेक्नोलॉजी आती रहती है, जिसके बारे में लोगों के बीच खूब चर्चा होती है। उसी तरह इन दिनों लोगों के बीच यह चर्चा हो रही है कि **चैट जीपीटी क्या है?** या यह काम कैसे करता है? लोगों के मन में इससे संबंधित बहुत सारे सवाल चल रहे होंगे, क्योंकि फ़िलहाल इसके बारे में अधिकतर लोगों को कोई जानकारी नहीं है।

चैट जीपीटी को लेकर तरह-तरह की बातें कही जा रही हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह इंसानों की नौकरी खा जाएगी। इसके अलावा कुछ लोग यह भी दावा कर रहे हैं कि यह टेक्नोलॉजी दुनिया की सबसे बड़ी सर्च इंजन गूगल को भी कड़ी टक्कर देगा। लोगों के बीच चैट जीपीटी को लेकर बहुत सारे दावे किए जा रहे हैं।

इस लेख में आपको चैट जीपीटी से संबंधित बहुत सारे सवालों का जवाब मिलने वाला है जैसे– **चैट जीपीटी क्या है?** चैट जीपीटी कैसे काम करता है? Open AI, **चैट जीपीटी in Hindi** तथा चैट जीपीटी का फुल फॉर्म क्या है? इस तरह और भी कई महत्वपूर्ण प्रश्नों के जवाब आपको इस लेख में जानने को मिलेंगे।

चैट जीपीटी क्या है?

चैट जीपीटी एक तरह का Artificial Intelligence है, जिसे हिंदी भाषा में कृत्रिम मेधा कहा जाता है। चैट जीपीटी का पूरा नाम Generative Pre-trained Transformer है। इसकी मदद से हम अपने सवालों का उत्तर जान सकते हैं, लेकिन आपको ताजा जानकारी नहीं मिल सकती है। क्योंकि यह आपको उन्हीं प्रश्नों का उत्तर देगा जो इसमें फिक्स किये गये हैं।

चैट जीपीटी को हम चैटबॉट भी कह सकते हैं, क्योंकि जब हमें किसी सवाल का जवाब जानना होता है तब हम वहाँ पर चैट करते हैं फिर हमें उसकी तरफ से इसका जवाब मिल जाता है। बहुत सारे लोग इसे सर्च इंजन भी बता रहे हैं, लेकिन गूगल की तरह इनके पास रियल टाइम डेटा नहीं है। चैट जीपीटी के पास साल 2022 के बाद का कोई भी डेटा नहीं है, इस वजह से जब इसे अपडेट किया जाएगा तब हम इसकी मदद से 2022 के बाद की कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। चैट जीपीटी की सबसे अच्छी बात यह है कि जब हम वहाँ पर किसी सवाल का जवाब प्राप्त करने के लिए कुछ चैट करते हैं तो उसके बारे में हमें तुरंत जानकारी मिल जाती है। लेकिन गूगल पर सर्च करने के बाद हमारे सामने बहुत सारी वेबसाइट आ जाती हैं फिर हम उन वेबसाइटों को खोलकर देखते हैं कि उसमें से कौन सी जानकारी हमारे काम की है। इस वजह से अगर आप अपना समय बचाना चाहते हैं तो चैट जीपीटी बेहतर है।

चैट जीपीटी का फुल फॉर्म क्या है?

चैट जीपीटी का पूरा नाम यानी फुल फॉर्म **Chat Generative Pre-Trained Transformer** है, जिसका काम हमारे सवालों का जवाब देना है। गूगल और चैट जीपीटी में बहुत अंतर है जैसे– हम गूगल पर किसी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए कुछ सर्च करते हैं तो हमारे सामने बहुत सारी वेबसाइट आ जाती हैं, फिर हम किसी साइट को खोलकर जानकारी प्राप्त करते हैं। लेकिन इस मामले में चैट जीपीटी बिल्कुल अलग है, क्योंकि वो हमें सीधा उस प्रश्न का उत्तर दे देता है जिस तरह कोई हमसे WhatsApp पर चैट कर रहा हो। इस वजह से हमारा बहुत सारा समय बच जाता है। लेकिन जब हमें कोई लेटेस्ट जानकारी चाहिए होती है तब चैट जीपीटी के पास उसका कोई उत्तर नहीं होता है।

चैट जीपीटी का इतिहास क्या है?

चैट जीपीटी के इतिहास की बात करें तो इसकी शुरुआत अमेरिकन प्रोग्रामर Sam Altman ने वहाँ के बहुत बड़े बिजनेसमैन एलन मस्क के साथ मिलकर साल 2015 में की थी, लेकिन उस समय यह एक ऐसी कंपनी थी, जिससे कोई मुनाफा नहीं हो रहा था। इस वजह से एलन मस्क ने इस प्रोजेक्ट को बीच में ही छोड़ दिया। फिर इस प्रोजेक्ट में माइक्रोसॉफ्ट के ऑनर बिल गेट्स की एंट्री हुई और इसमें उन्होंने बहुत सारा पैसा निवेश किया।

माइक्रोसॉफ्ट के मालिक बिल गेट्स की वजह से चैट जीपीटी का प्रोजेक्ट आगे बढ़ा और 30 नवम्बर 2022 को इसे लॉन्च कर दिया गया। चैट जीपीटी के बारे में Sam Altman का कहना है कि बहुत कम समय में इसके 20 मिलियन यानी दो करोड़ से अधिक यूजर हो चुके हैं और अभी भी इसके यूजरों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है।

चैट जीपीटी किस तरह काम करता है?

चैट जीपीटी को बनाते समय डेवलपर ने उस डाटा का इस्तेमाल किया है जो इंटरनेट पर उपलब्ध है। जब हम चैट जीपीटी की वेबसाइट पर जाकर कुछ सर्च करते हैं तो हमारे सवाल का जवाब चैट जीपीटी उसी डाटा से निकालकर देता है। उस दौरान वो किसी भी सवाल का उत्तर देने से पहले उसे अपनी भाषा में बनाता है फिर उसकी सारी जानकारी हमारे सामने आ जाती है।

जब चैट जीपीटी किसी भी सवाल का जवाब देता है तब डिस्प्ले पर एक यह भी विकल्प आता है कि आप उसकी जानकारी से संतुष्ट हैं या नहीं। जब हम उसके इस प्रश्न का उत्तर दे देते हैं फिर चैट जीपीटी अपने डाटा को अपडेट करता है। मैं आपको यहाँ पर एक चीज क्लियर कर देना चाहता

हूँ इसके पास साल 2022 तक का डाटा है, इसके बाद की जानकारी ये आपको सही ढंग से नहीं दे पाएगा।

चैट जीपीटी का उद्देश्य क्या है?

अब एक सवाल उठता है कि चैट जीपीटी का उद्देश्य क्या है? या इसे क्यों बनाया गया है? तो मैं आपको बता दूँ कि चैट जीपीटी बनाने का सबसे बड़ा उद्देश्य इसकी मदद से लोगों के किसी भी सवाल का जवाब कुछ ही समय में प्रदान करना है। चैट जीपीटी आपके सवालों का उत्तर अपने डाटा में ढूँढ़ता है फिर उसे अपनी भाषा में बदलने के बाद डिस्प्ले पर दिखाता है। तो अब आपको यह समझ में आ गया है कि चैट जीपीटी बनाने का उद्देश्य लोगों को उसके सवालों का जवाब कुछ ही समय में प्रदान करना है।

क्या चैट जीपीटी गूगल को भी पछाड़ देगा?

इन दिनों चैट जीपीटी की तुलना गूगल से की जा रही है, क्योंकि लोगों को लग रहा है कि इस पर जो जानकारी दी जा रही है वो कुछ ही मिनटों में मिल जाती है। वहीं गूगल पर हमें कई वेबसाइटों को खोलना पड़ता है। इस वजह से वो गूगल को पीछे छोड़ देगा, लेकिन मैं आपको बता दूँ कि चैट जीपीटी के लिए गूगल को पीछे छोड़ना बहुत ही मुश्किल काम है, क्योंकि उनके पास बहुत कम डाटा मौजूद है।

गूगल दुनिया की बहुत सारी भाषाओं को समझता है, इस वजह से आपको वहाँ पर किसी भी भाषा में उत्तर मिल जाएगा। लेकिन चैट जीपीटी के साथ ऐसा नहीं है, क्योंकि वो कुछ ही भाषाओं में उत्तर देता है। चैट जीपीटी सिर्फ उतनी जानकारी दे सकता है जितनी के लिए उसे प्रशिक्षित किया गया है। अगर गूगल की बात करें वो इन्फोर्मेशन का भंडार है, इस वजह से उसे पीछे छोड़ना मुश्किल है।

चैट जीपीटी हमें सिर्फ टेक्स्ट में जानकारी देता है, इस वजह से जब हमें किसी इमेज या वीडियो की जरुरत पड़ती है तो नहीं देता है, क्योंकि ये सब उनके पास मौजूद नहीं है। वहीं गूगल के पास टेक्स्ट, वीडियो तथा इमेज भी मौजूद हैं, इस वजह से उसे पीछे छोड़ना आसान नहीं है। गूगल एक सर्च इंजन है, लेकिन चैट जीपीटी एक प्रकार का चैट बोट है।

गूगल दुनिया का सबसे बड़ा सर्च इंजन है, इस वजह से उनके पास लेटेस्ट टेक्नोलॉजी है तथा वो हर प्रकार की ताजा जानकारी देता है। लेकिन चैट जीपीटी के पास ऐसा नहीं है, इस वजह से वो ताजा जानकारी देने में सक्षम नहीं है। चैट जीपीटी के पास फिलहाल मार्च 2022 की जानकारी है, वहीं गूगल के पास आज तक की जानकारी मौजूद है। तो अब इससे साफ हो गया कि गूगल को पीछे छोड़ना आसान काम नहीं है।

चैट जीपीटी की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं :-

चैट जीपीटी की बहुत सारी विशेषताएं हैं, जिसके बारे में फिलहाल बहुत कम लोगों को जानकारी होगी। इसी वजह से हमने नीचे इसकी कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में बताया है जो इस प्रकार हैं:-

- चैट जीपीटी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आपको इसके माध्यम से कोई भी जानकारी विस्तार से मिलेगी।
- जब हमें किसी तरह का कंटेन्ट तैयार करना होता है तब हम इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।
- जब हम कोई भी सवाल इससे पूछते हैं तब हमें उसका जवाब कुछ मिनटों के अंदर मिल जाता है।
- चैट जीपीटी में गूगल की तरह बहुत सारी वेबसाइटें नहीं आती हैं, क्योंकि वो हमें सीधा उत्तर देता है।
- चैट जीपीटी का इस्तेमाल करते समय यह लगता है कि सामने वाला हमसे कोई व्यक्ति या दोस्त की तरह चैट कर रहा है।

- इसकी मदद से किसी भी विषय पर आर्टिकल लिखवा सकते हो और वो आपको कुछ ही मिनटों में तैयार करके दे देगा।

चैट जीपीटी इस्तेमाल करने का सबसे बड़ा फायदा क्या है?

जिस तरह चैट जीपीटी की कई विशेषताएं हैं बिल्कुल उसी तरह इसके कई फायदे भी हैं, जिसके बारे में हर किसी को मालूम होना चाहिए। इसी वजह से हमने इसके बारे में नीचे बताया है तो चलिए अब हम चैट जीपीटी इस्तेमाल करने के फायदों के बारे में जानते हैं:-

- चैट जीपीटी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि वो हमारे सवाल का सीधा जवाब देता है, इस वजह से हमारा बहुत समय बच जाता है।
- गूगल हमारे सवाल का जवाब देने के लिए अलग-अलग वेबसाइट दिखाता है, उसके बाद हमें उत्तर जानने के लिए कई वेबसाइट खोलनी पड़ती हैं। इस वजह से हमारा वहाँ पर अधिक समय बर्बाद होता है। लेकिन चैट जीपीटी में ऐसा नहीं है।
- जब आप चैट जीपीटी से कोई सवाल पूछते हो तो उसके उत्तर आने के बाद आपके सामने एक विकल्प आता है कि आप उसके जवाब से संतुष्ट हैं या नहीं।
- जब चैट जीपीटी यह पूछता है कि आप उसके जवाब से संतुष्ट हैं या नहीं। फिर आप उसका उत्तर देते हैं, उसके बाद वो अपने डाटा में बेहतर परिणाम दिखाने के लिए अपडेट करता है।
- चैट जीपीटी की सबसे बड़ी बात यह है कि वो यूजर को किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए एक भी रुपया नहीं लेता है। इसका मतलब वो हर किसी के प्रश्नों का जवाब मुफ्त में देता है।
- जब हम चैट जीपीटी पर कोई सवाल पूछते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि सामने वाला कोई व्यक्ति या दोस्त की तरह हमसे बात कर रहा है तथा वो हमारे सवालों का जवाब दे रहा है।

- जब हम कभी अकेले में होते हैं और हमारा मन नहीं लग रहा होता है तो उस दौरान हम चैट जीपीटी से सवाल पूछ कर अकेलापन दूर कर सकते हैं। क्योंकि इससे ऐसा लगता है कि सामने से कोई व्यक्ति हमारे सवालों का उत्तर दे रहा है।

चैट जीपीटी के क्या-क्या नुकसान हैं?

दुनिया के लगभग सभी चीजों के कुछ फायदे तो उसके कुछ नुकसान भी हैं। इसी तरह चैट जीपीटी का भी है। आपने ऊपर चैट जीपीटी की विशेषताएं तथा इसके फायदों के बारे में पढ़ा है, लेकिन अब हमने नीचे इसके कुछ नुकसानों के बारे में बताया है:-

- चैट जीपीटी फिलहाल अंग्रेजी तथा हिंदी के अलावा कुछ ही भाषाओं को समझता है, इस वजह से लोकल भाषा में आप अपने सवाल का जवाब नहीं जान सकते हैं। भविष्य में जब इसमें अन्य भाषाओं को जोड़ा जाएगा, फिर आप उस लैंग्वेज में अपने सवालों का उत्तर जान सकते हैं।
- चैट जीपीटी के डाटा में जो जानकारी स्टोर की गई है वो सिर्फ मार्च 2022 तक की है। इस वजह से उसके बाद की जानकारी आपको नहीं मिलेगी।
- वर्तमान में ऐसे कई बहुत सारे सवाल मौजूद हैं जिसका जवाब चैट जीपीटी के पास नहीं है। इस वजह से वहाँ पर आपको कई महत्वपूर्ण सवालों का जवाब नहीं मिलेगा।
- चैट जीपीटी फ़िलहाल पूरी तरह से फ्री है, क्योंकि अभी भी इस पर काम चल रहा है। जब इसका काम पूरा हो जाएगा, फिर इसका इस्तेमाल करने के लिए पैसों का भुगतान करना होगा। लेकिन अभी यह जानकारी सामने नहीं आई है कि इस के लिए यूजर को कितना पैसा देना होगा।

चैट जीपीटी का इस्तेमाल कैसे करें?

अब आपके मन में एक सवाल अवश्य चल रहा होगा कि चैट जीपीटी का इस्तेमाल कैसे करें? क्योंकि अभी तक अधिक लोगों ने इसका इस्तेमाल नहीं किया है, इस वजह से हर किसी को इसकी जानकारी होनी चाहिए। इसके बारे में नीचे पूरी जानकारी दी है जो इस प्रकार हैः

- इसके लिए सबसे पहले आपको Chat.openai.com पर जाना होगा।
- फिर आप चैट जीपीटी की ऑफिशियल वेबसाइट पर चले जाएंगे।
- वहाँ पर जाने के बाद आपको सबसे पहले अपना अकाउंट बनाना होगा।
- जब आपका अकाउंट बन जाएगा, उसके बाद आप लॉग-इन कीजिए।
- जब आप लॉग-इन कर लेंगे उसके बाद आप अपना प्रश्न पूछ सकते हैं।
- इसके लिए आपको नीचे चैट बॉक्स में अपना सवाल लिखना है।
- अपना प्रश्न लिखने के बाद आपको एंटर बटन दबा देना है।
- फिर आपके सामने आपके सवाल का जवाब आ जाएगा।

पारिभाषिक शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अनुवाद
Par value	सम मूल्य
Per mensem	प्रतिमास
Proviso	परन्तुक
Proxy	परोक्षी
Prudence	प्रज्ञा

राजस्थान के मंदिर

सुनिल बगड़िया,
लिपिक

राजस्थान जिसे राजघरानों की भूमि भी कहा जाता है, वहाँ ज्यादातर किलों, महलों, राजाओं और रानियों की बात होती है। इसके साथ ही यह राज्य धार्मिक स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ पर हजारों की संख्या में धार्मिक स्थल हैं। अगर आप कभी राजस्थान की यात्रा करते हैं, तो आपको इन मंदिरों की सुंदरता की प्रशंसा करने के लिए भ्रमण करना चाहिए। यहाँ कुछ ऐसे धार्मिक स्थल हैं जहाँ आपको अवश्य जाना चाहिए। इन्हीं धार्मिक स्थलों में से कुछ स्थलों पर मुझे भी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिनकी थोड़ी बहुत जानकारी साझा करना चाहता हूँ।

1. सालासर बालाजी धाम, सालासर (चूरू)

राजस्थान के चूरू जिले के सालासर कस्बे में स्थित है- वीर हनुमान मंदिर जिसे सालासर बालाजी धाम के नाम से जाना जाता है। सालासर बालाजी धाम मंदिर, हिंदू भगवान हनुमान के भक्तों के लिए एक धार्मिक स्थान है। संभवतः यह देश का अकेला ऐसा मंदिर है, जहाँ हनुमान जी की प्रतिमा दाढ़ी-मूँछों वाली है। हनुमान मंदिर सालासर शहर के ठीक मध्य में स्थित है। इस मंदिर में हर साल राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और देश के हर कोने से लाखों भक्तगण आते हैं।

इस मंदिर के संदर्भ में एक मान्यता प्रचलित है कि सालासर निवासी संत शिरोमणि, सिद्धपुरूष, भक्त प्रवर श्री मोहनदास जी महाराज की असीम भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं रामदूत श्री हनुमान जी ने मूर्ति रूप में विक्रम संवत् 1811 (सन् 1755) श्रावण शुक्ल नवमी शनिवार को असोटा गाँव में

प्रकट होकर अपने परम भक्त मोहनदास जी महाराज की मनोकामना पूर्ण की। वहाँ के स्थानीय निवासी बताते हैं कि एक दिन असोटा गाँव के जागीरदार मोहनदास जी के दर्शन के लिए आये। जागीरदार को मोहनदास जी ने कहा कि 'आपके यहाँ कोई मूर्तिकार हैं क्या? अगर हैं तो मुझे भगवान हनुमान जी की मूर्ति बनवाकर भिजवायें'। जागीरदार ने उन्हें मूर्ति अतिशीघ्र भिजवाने का विश्वास दिया।

कुछ समय बाद असोटा गाँव के एक जाट किसान द्वारा खेत की जुताई करते समय उसका हल किसी वस्तु में अटक गया, बैलों को रोककर उस स्थान की खुदाई करने पर उसे श्री हनुमान जी महाराज की मूर्ति मिली। किसान ने श्रद्धापूर्वक मूर्ति साफ कर अपनी पत्नी को दिखाई। किसान की पत्नी ने बहुत ही भक्ति-भाव से मूर्ति को खेजड़ी के नीचे रखकर बाजरे की रोटी के चूरमे का भोग लगाया और तब से लेकर अब तक श्री बालाजी महाराज को चूरमे का भोग लगाया जाता है। यह बात गाँव के जागीरदार को बतायी जाती है। जागीरदार मूर्ति को ससम्मान घर ले आये। जागीरदार को विश्राम के समय निद्रावस्था में आवाज सुनाई दी कि 'मैं भक्त मोहनदास के लिये प्रकट हुआ हूँ, मुझे तुरन्त सालासर पहुँचाओ'|

जागीरदार को तुरन्त ही मोहनदास जी द्वारा बोली गयी बात याद आ गयी। इसके बाद जागीरदार गाँववासियों के साथ बैलगाड़ी में मूर्ति को रख कर सालासर के लिये निकले। इधर अपने आराध्य की कृपा से मोहनदास जी को यह सब ज्ञात हो गया तो अपने प्रभु की आगवानी करने के लिए उन्होंने सालासर से प्रस्थान किया। मूर्ति सम्मानपूर्वक लायी गई। महात्मा मोहनदास जी ने बताया कि "बैल जहाँ पर भी रुकेंगे, वहीं पर मूर्ति की स्थापना होगी"। कुछ समय बाद बैल रेत के टीले पर जाकर रूक गये तो उसी पावन-पवित्र स्थान पर विक्रम संवत् 1811 श्रावण शुक्ल नवमी

(सन् 1755) शनिवार के दिन श्री बालाजी महाराज की मूर्ति की स्थापना की गयी। जिस बैलगाड़ी में मूर्ति लायी गयी वो गाड़ी आज भी मंदिर में रखी हुई है।

सालासर मंदिर तक आप ट्रेन और सड़क दोनों मार्गों से आसानी से पहुँच सकते हैं। मंदिर का निकटतम रेलवे स्टेशन सुजानगढ़ है जो कि मंदिर से 32 किलोमीटर दूर है, वहाँ से आप बस या कार से मंदिर पहुँच सकते हो। जयपुर से मंदिर तक आने के लिए आपको जयपुर बस डिपो से सीधी सालासर धाम की बस मिल जाएगी।

2. करणी माता मंदिर, देशनोक (बीकानेर)

करणी माता मंदिर के नाम से मशहूर यह मंदिर बीकानेर में पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण का केंद्र है। यह मंदिर बीकानेर से 30 किलोमीटर दूर देशनोक गाँव में स्थित है। यह मंदिर करणी माता को समर्पित है, जिन्हें स्थानीय लोग देवी दुर्गा का अवतार मानते हैं, जो हिंदू धर्म की सुरक्षा की देवी हैं। करणी माता चारण जाति की एक शक्ति स्वरूपा देवी हैं, जो चौदहवीं शताब्दी में रहती थीं। एक तपस्वी का जीवन जीते हुए, करणी माता स्थानीय लोगों द्वारा अत्यधिक पूजनीय थीं और उनके कई अनुयायी भी थे।

इस मंदिर के परिसर में प्रवेश करते ही आपको चारों तरफ़ हज़ारो की संख्या में चूहे (काबा) दिखायी देंगे। इसीलिए इस मंदिर को मूषकों (चूहों) का मंदिर भी कहा जाता है, स्थानीय भाषा में इन चूहों को काबा कहा जाता है। आश्चर्य की बात है कि 25 हजार से भी ज्यादा चूहे होने के बाद भी इस मंदिर में किसी भी प्रकार की दुर्गंध नहीं आती है। वहीं आज तक इस मंदिर में चूहों से कोई बीमारी भी नहीं फैली है। इन काबों में सफ़ेद काबा के दर्शन को बहुत ही शुभ माना जाता है। इन काबों के बारे में मान्यता है

कि एक बार चारण वंश की कुलदेवी माता करणी जी (रिद्धि बाई) की बहन गुलाब बाई का प्रिय पुत्र लाखन अपने दोस्तों के साथ वार्षिक कार्तिक मेले में कोलायत (बीकानेर) के पास के गाँव गया, लेकिन वह कपिल सरोवर में डूब गया और उसकी मृत्यु हो गई। जब उसके मृत शरीर को देखा तो करणीजी की बहन अर्थात् लाखन की माँ रोने लगी, तो करणी माता उसके शरीर को एक कमरे में ले गई और खुद को बंद कर लिया। जब वह बाहर आई, तो वह लाखन के साथ बाहर आई जो जीवित था। लोग मानते हैं कि वह मृत्यु के देवता धर्मराज जी के पास गई और लाखन को जीवित करने की माँग की। तब धर्मराज जी ने प्रश्न किया, "यदि इनको जीवित कर दिया तो पुनर्जन्म का चक्र कैसे चलेगा? और यह किस नियम के अनुसार चलेगा?" तब करणी माता ने धर्मराज जी को बोला कि उनके परिवार का कोई भी सदस्य मृत्यु के बाद आप के पास नहीं आएगा। "मैं जहाँ भी रहूँगी, वे वहीं रहेंगे। जब वे मरेंगे, तो भी वे मेरे साथ ही रहेंगे।" फिर, करणी माता ने काबा का मूर्त रूप चुना-ताकि जब उनके चारण वंश के किसी भी मनुष्य की मृत्यु हो तो वे काबा के रूप में पुनर्जन्म लें और मंदिर के भीतर उनके पास रहें और जब किसी काबा की मृत्यु हो तो वे फिर से चारण वंश में मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लें। इसलिए देशनोक का मंदिर 'काबों के मंदिर' के रूप में भी प्रसिद्ध है।

देशनोक मंदिर तक आप सड़क और ट्रेन दोनों मार्गों से आसानी से पहुँच सकते हैं। निकटतम रेलवे स्टेशन देशनोक है जो मंदिर से बमुश्किल एक से दो किमी दूर होगा। अगर आपको सड़क से यात्रा करनी है तो बीकानेर से बहुत सारी बसें या कारें मिल जाती हैं।

3. खाटूश्याम बाबा मंदिर, खाटूश्याम (सीकर)

राजस्थान के सीकर जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर दूरी पर स्थित खाटूश्याम जी का मंदिर केवल भारत में ही नहीं बल्कि

विदेश में भी प्रसिद्ध है। यहाँ हर दिन लाखों भक्तगण बाबा के दर्शन के लिए आते हैं। मान्यताओं के अनुसार खाटूश्याम जी को भगवान कृष्ण का कलियुगी अवतार कहा जाता है। खाटूश्याम जी का जन्मोत्सव हर साल कार्तिक शुक्ल पक्ष की देवउठनी एकादशी को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। खाटूश्याम जी को लखदातार भी कहा जाता है। इस मंदिर में श्री कृष्ण जी के शीश की पूजा की जाती है।

इस मंदिर के होने के पीछे का कारण बताया जाता है कि वनवास के दौरान, जब पांडव अपनी जान बचाते हुए इधर-उधर घूम रहे थे, तब भीम का विवाह हिडिम्बा से हुआ। हिडिम्बा ने भीम से एक पुत्र को जन्म दिया जिसे घटोत्कच कहा जाता था। घटोत्कच के पुत्र हुआ जिसका नाम बर्बरीक था। जब कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध हो रहा था, तब बर्बरीक ने युद्ध देखने का निर्णय लिया था। जब श्री कृष्ण ने उनसे पूछा कि वो युद्ध में किसकी तरफ हैं, तब उन्होंने कहा था कि जो पक्ष उस समय हार रहा होगा वो उसकी तरफ से लड़ेंगे। उस समय पांडव युद्ध में जीत रहे थे और ये बात श्री कृष्ण जानते थे और उन्हें डर था कि ये कहीं पांडवों के लिए उल्टा न पड़ जाए। ऐसे में कृष्ण जी ने बर्बरीक को रोकने के लिए दान की माँग की। दान में उन्होंने उनसे शीश माँग लिया। दान में बर्बरीक ने उनको शीश दे दिया, लेकिन आखिर तक उन्होंने अपनी आंखों से युद्ध देखने की इच्छा जाहिर की।

श्री कृष्ण ने इच्छा स्वीकार करते हुए उनका सिर युद्ध वाली जगह पर एक पहाड़ी पर रख दिया। युद्ध के बाद पांडव लड़ने लगे कि जीत का श्रेय किसको जाता है, इसमें बर्बरीक से जब पूछा गया तो उसने कहा कि श्री कृष्ण की वजह से उन्हें जीत हासिल हुई है। इस बलिदान से श्री कृष्ण काफी खुश हुए और उन्होंने बर्बरीक को कलियुग में श्याम के नाम से पूजे जाने का वरदान दे दिया। ऐसा माना जाता है कि कलियुग की शुरुआत में

राजस्थान के खाटू गाँव में उनका सिर मिला था। कहते हैं ये अद्भुत घटना तब घटी जब वहाँ खड़ी एक गाय के थनों से अपने आप दूध बहने लगा था। इस घटनास्थल को जब खोदा गया तो यहाँ खाटूश्याम जी का सिर मिला। अब लोगों के बीच में ये दुविधा शुरू हो गई कि इस सिर का क्या किया जाए। बाद में उन्होंने सर्वसम्मति से एक पुजारी को सिर सौंपने का फैसला किया। इसी बीच क्षेत्र के तत्कालीन शासक रूप सिंह को मंदिर बनवाने का सपना आया। इस प्रकार रूप सिंह चौहान के कहने पर इस जगह पर मंदिर निर्माण शुरू किया गया और खाटूश्याम की मूर्ति स्थापित की गई।

खाटूश्याम मंदिर तक सड़क और ट्रेन मार्गों के माध्यम से आसानी से पहुँचा जा सकता है। मंदिर का निकटतम रेलवे स्टेशन रींगस जंक्शन (आरजीएस) है, जो मंदिर से लगभग 17 किमी दूर है। आपको कई कैब और जीपें मिल जायेंगी, जो आपको मंदिर तक ले जाने के लिए स्टेशन के ठीक बाहर इंतजार कर रही होती हैं। निकटतम हवाई अड्डा जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, जो मंदिर से लगभग 80 किमी दूर है, जहाँ से आप सड़क मार्ग से मंदिर तक यात्रा कर सकते हैं। जयपुर और खाटू के बीच कई निजी और सरकारी बसें भी चलती हैं।

ये कुछ धार्मिक स्थल हैं जहाँ मुझे जाने का अवसर मिला है मैंने उनकी संक्षिप्त में जानकारी साझा की है। जीवन में आपको भी कभी मौक़ा मिले तो इन स्थलों पर अवश्य जाकर आयें।

शिक्षा का उद्देश्य

सूरज किशोर,
सहायक लेखा अधिकारी

बच्चों की शिक्षा एक ऐसा विषय है जो प्रत्येक घर में चर्चा का विषय रहता है। खासकर बच्चों के माता-पिता अपने बच्चे की शिक्षा को लेकर ज्यादा ही चिंतित रहते हैं। जब एक शिशु जन्म लेता है, तब से उसके माता-पिता चाहे गरीब हों, या अमीर उसके वर्तमान, भविष्य सबको लेकर काफी चिंतित रहते हैं। ज्यों-ज्यों बच्चा थोड़ा बड़ा होता है, घर का वातावरण भी बच्चों के हिसाब से बनाना पड़ता है। बच्चों का मन बहुत कोमल होता है। उन्हें अच्छे-बुरे की समझ नहीं होती है। बच्चों की पहली पाठशाला घर है। शिक्षा ग्रहण करने की पहली समझ घर से ही, माता-पिता या जो भी बड़े घर में साथ में रहते हैं, मिलती है। जब बच्चे का दाखिला स्कूल में होता है, तो वह स्कूली शिक्षा ग्रहण करने का पहला कदम होता है। प्रत्येक माता-पिता चाहते हैं उनके बच्चे की शिक्षा अच्छे-से-अच्छे स्कूल में हो। इस कारण वे महंगे प्राइवेट स्कूलों में भी अपने बच्चे का दाखिला करवाते हैं। परंतु केवल अच्छे स्कूल में दाखिला ही बच्चों का भविष्य तय नहीं करता अपितु उनके दोस्त कैसे हैं, उनका घर का परिवेश कैसा है, इन सब का बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में हम बच्चों की शिक्षा को सीधे तौर पर रोजगार से जोड़ कर देखते हैं, जो कि बिल्कुल भी सही नहीं है। शिक्षा का संबंध केवल रोजगार से नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए होनी चाहिए।

दुर्भाग्य से आज जितने भी शिक्षा के केन्द्र बने हुए हैं, उनका ज्यादा ध्यान बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान देने तक ही सीमित रह गया है, बच्चों को नैतिक शिक्षा, सामाजिक लोकाचार की शिक्षा तथा समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों का अहसास दिलाना भी शिक्षा का ध्येय होना चाहिए।

हमें शिक्षा के माध्यम से बच्चों में मानवीय गुणों को उभारने की कोशिश करनी चाहिए। हमें चाहिए कि हम उन्हें पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों तथा समाज के सभी लोगों के प्रति संवेदनापूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित करें तथा उनमें सभी के प्रति सम्मान एवं सहयोग की भावना जाग्रत करें। यही वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

अगर कोई व्यक्ति शिक्षित होते हुए भी अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरुक नहीं है, उसे अपनी सीमाओं का अहसास नहीं है, तो उसकी शिक्षा को अधूरा ही माना जाएगा। यदि कोई व्यक्ति सड़क पर चलते हुए सड़क को गंदा करता है, या किसी निरीह पशु-पक्षी को चोट पहुँचाता है, या किसी गरीब या असहाय व्यक्ति से दुर्व्यवहार करता है, तो क्या उसे शिक्षित कहलाने का हक है? क्या समाज को ऐसे ही शिक्षित लोगों की आवश्यकता है।

आज हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में भी सुधार की जरुरत है, ताकि शिक्षा के माध्यम से हम एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें। आज के समय में शिक्षा, अंकों द्वारा आंकी जाती है। जिसके जितने ज्यादा अंक आते हैं, उसे उतना ही ज्यादा शिक्षित माना जाता है, लेकिन इन अंकों में केवल पुस्तकीय ज्ञान ही परिलक्षित होता है। उस व्यक्ति के मानवीय और नैतिक गुणों का आंकलन आज की शिक्षा पद्धति में नहीं किया जाता है। न ही उनको कोई महत्त्व दिया जाता है। यही कारण है कि लोग भी केवल पुस्तकीय ज्ञान अर्जित करने पर ही ध्यान देते हैं।

यदि हमारी शिक्षा पद्धति में मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वहन के आधार पर भी अंक दिये जाने लगे तथा इन अंकों का आगे रोजगार प्राप्त करने में भी महत्व हो तो निश्चय ही हम सही मायनों में शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे।

कुशल मंगल

स्वाती कुमारी,
कनिष्ठ अनुवादक

एक राज्य था मंगलपुर। वहाँ के राजा थे- महाराज मंगल किशोर जी। महाराज मंगल किशोर जी बहुत ही कुशल शासक थे। उनके राज्य में चहुँओर खुशहाली व्याप्त थी। महाराज अपने राजमहल में महारानी चंद्रप्रभा, उनकी दो बेटियों व राजमाता सुशीला के साथ रहते थे। महाराज मंगल किशोर जी अपनी प्रजा को भी अपनी संतानों की भाँति ही मानते थे। उनके लिए तो दोनों ही समान थे। वे न तो अपने बच्चों की आँखों में आँसू देख सकते थे और न ही अपनी प्रजा की। वहाँ की प्रजा को अपने महाराज पर बहुत विश्वास था। उन्हें लगता था कि मानो उनके महाराज के रहते हुए उनके राज्य में गम के बादल कभी नहीं मँडरायेंगे।

एक बार की बात है कि महाराज सपरिवार अपने राज्यभ्रमण के लिए निकले थे, तभी अचानक उन्हें किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। उन लोगों ने आस-पास देखा मगर कोई नजर नहीं आया। महाराज ने तुरंत अपने सैनिकों को आदेश दिया कि उस व्यक्ति को तत्काल उनके समक्ष प्रस्तुत किया जाए। फौरन सैनिक आवाज की दिशा में भागे क्योंकि महाराज के आदेशानुसार उन्हें उस व्यक्ति का पता लगाना था तथा महाराज के समक्ष प्रस्तुत करना था, तभी उनकी दृष्टि एक महिला पर पड़ी। वह बिल्कुल दहाड़ें मार–मार कर रोए जा रही थी। सैनिकों ने उस महिला से विनती की कि वह शांत हो जाए। वे लोग उसके दुःख के निवारण हेतु ही उसे महाराज के पास ले जाने आए हैं, पर वह लगातार रोए ही जा रही थी।

महाराज के समक्ष उस महिला को पेश किया गया। अब तक उसकी आँखों से आँसू निरंतर बहे जा रहे थे। महाराज ने सर्वप्रथम उसे ढाढ़स बँधाया कि उसके दुःख का तत्काल निवारण किया जाएगा। महाराज

के कथनानुसार उसे पहले एक गिलास ठण्डा पानी पिलाया गया ताकि वह कुछ शांत हो तथा अपनी बात कह पाने की स्थिति में आ जाए। जब उस महिला ने कहना शुरू किया तो सभी भाव-विह्वल हो गए। दरअसल उस महिला का अब इस दुनिया में कोई नहीं था। उसका इकलौता बेटा भी मृत्यु की भेंट चढ़ चुका था।

वह अपने दोस्तों के साथ सुदूर देशों में व्यापार करता था। उसके सभी साथी आज अपने-अपने घर लौट आए, परंतु वह नहीं आया। जब उस महिला ने उन लोगों से अपने बेटे का हाल पूछा तो वे लोग उससे माफी माँगने लगे। उन्हें बहुत अफसोस था कि वे लोग मिलकर भी उसके बेटे को नहीं बचा पाए। उस महिला के बार-बार पूछने पर उन लोगों ने सारा हाल बताया। वे लोग समुद्री मार्ग से अपने–अपने घर लौट रहे थे। अचानक बीच समुद्र में ऊँची–ऊँची लहरें उठने लगी। अचानक आए इस भयंकर तूफान ने तो सबके लिए मुसीबतें खड़ी कर दी थीं।

उस महिला का बेटा जिसका नाम पवनदीप था, वह जिस जहाज में सवार था उसी में सबके कमाए धन भी लदे थे। पवनदीप के साथ उसके दो अन्य मित्र भी उसी जहाज में सवार थे। उसका जहाज उस भयंकर तूफान में बाकी साथियों से बिछड़ गया तथा वह लहरों के बीच थपेड़े खाते-खाते अलग ही दिशा में पहुँच गया। देखते ही देखते सब कुछ उनकी आँखों से ओझल हो गया। अंततः वहाँ चारों तरफ सिर्फ पानी ही पानी नजर आ रहा था। अब उस समुद्र में एक मात्र जहाज बचा था जिसमें कि वे चार लोग सवार थे। उन लोगों ने अपनी आप बीती कह सुनाई कि जैसे–तैसे करके वे लोग अपनी जान बचा कर वहाँ से भागे।

उस भयंकर तूफान के बाद से ही पवनदीप व उनके दो साथियों का कुछ पता न चल पाया। इतना सुनते ही उस महिला के पैरों तले जमीन खिसक गई। मानो उसकी तो पूरी दुनिया ही लुट गई। उसके बाद से ही

उस महिला के आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। उसकी व्यथा सुनकर महाराज ने अपनी नम आँखों से उस महिला को उसकी इस मुसीबत की घड़ी में साथ देने का वचन दिया।

महाराज ने उस महिला को बताया कि हम सब एक ही ईश्वर की संतानें हैं। कुदरत के बनाए नियमों के अनुसार ही हमें चलना पड़ता है। यहाँ सब कुछ अपने हाथ में नहीं होता है। आना और जाना तो दुनिया का दस्तूर है। सब लोग एक दिन आते हैं और फिर एक दिन चले भी जाते हैं। महाराज ने उस महिला को ढाढ़स बँधाते हुए कहा कि एक बार महात्मा बुद्ध के पास उसी की भाँति एक महिला आई। उसका पुत्र भी अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ था। उसने महात्मा बुद्ध की बहुत तारीफें सुन रखी थीं। लोगों का मानना था कि उनके पास अद्वितीय शक्तियाँ हैं। उस महिला के मन में भी आस जगी कि भगवान बुद्ध अपनी चमत्कारी शक्तियों से उसके पुत्र को जीवित कर देंगे। जब वह भगवान बुद्ध के पास पहुँची तो गिड़गिड़ा कर अपने पुत्र के जीवन की भीख माँगने लगी।

महात्मा बुद्ध ने उस महिला से कहा कि ठीक है मैं ऐसा करने को तैयार हूँ पर उसके लिए तुम्हें एक काम करना होगा। महिला ने उत्सुकतावश पूछा कि क्या करना होगा तो उन्होंने कहा कि तुम्हें सिर्फ एक मुट्ठी राई लानी है। इतना सुनते ही वह महिला बहुत प्रसन्न हो गई कि यह तो बस एक छोटा सा काम है। वह तो बेकार ही इतना डर रही थी कि उसे तो कोई बहुत मुश्किल कार्य करना होगा। वह महिला जैसे ही वहाँ से जाने को मुड़ी, भगवान बुद्ध ने उसे आवाज लगाते हुए कहा कि इस बात का पूरा ध्यान रखना कि राई सिर्फ ऐसे घर से ही लाना जहाँ पर कभी किसी की मौत न हुई हो।

वह महिला वहाँ से भागी–भागी लोगों की बस्ती में पहुँची। वह घर-घर जाकर एक मुट्ठी राई देने के लिए मिन्नतें करने लगी। लोग उसे राई देने

को तैयार भी थे परंतु जैसे ही उनसे यह पूछा जाता कि उनके घर कहीं किसी की मौत तो नहीं हुई है, लोग अपना-अपना दुखड़ा रोने लगते। सबके घरों में ऐसे लोगों की लंबी सूची है। दुनिया में ऐसे घनघोर गम से कोई भी अछूता नहीं है। यहाँ सभी लोग गम से घिरे हैं। परंतु जैसे-तैसे करके खुद को संभालना पड़ता है तथा गम से खुद को उबारना पड़ता है।

अंत में थक-हार कर वह महात्मा बुद्ध के पास पहुँची। उनसे सारा हाल कह सुनाया। तब उसे यह शिक्षा मिली कि इस दुःखद स्थिति से सभी को गुजरना पड़ता है। कुदरत के विरुद्ध कुछ भी नहीं चलता। जीवन में अत्यंत दुःख तथा सुख की घड़ियाँ भी आती हैं। सब कुछ इंसान को सहना पड़ता है। जिस प्रकार धूप तथा छाँव आते-जाते रहते हैं ठीक उसी प्रकार हमें सुख व दुःख का भी सामना करना है।

महाराज के मुख से इन बातों को सुनकर उस महिला को कुछ हिम्मत मिली। महाराज ने यह भी घोषणा की कि उस महिला का पूरा खर्च राजकोष से उठाया जाएगा। महाराज की इस उदारता को देखकर महिला ने अपने दोनों हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना की कि महाराज मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। मेरे पास जमीन का जो भी भाग है उसी में मैं मेहनत करके अपना गुजारा कर लूँगी। महाराज भी उसकी बातों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। उन्होंने तुरंत खजांची को आदेश दिया कि उस महिला को सौ सोने की मुहरें भेंट स्वरूप दी जाएं। साथ ही महाराज ने उससे यह वादा भी किया कि जब भी उसे किसी चीज की जरूरत हो, वो बेझिझक उनके पास आ सकती है। महाराज ने उसके पुत्र वियोग का बहुत अफसोस भी जाहिर किया।

धीरे-धीरे दिन बीतते गए। कई वर्षों बाद एक बार महाराज मंगल किशोर जी अपने मंत्री व सैनिकों के साथ शिकार करने जंगल गए थे। वहीं शाम हो गई तथा अँधेरा छाने लगा। महाराज ने समय को देखते हुए

अपने सैनिकों को आदेश दिया कि तत्काल वापसी की जाए। सभी तेजी से राजमहल की ओर निकले। इसी क्रम में महाराज बाकी लोगों से बिछड़ गए। चूँकि उनका घोड़ा तेजी से दौड़े जा रहा था इसलिए वे बाकी सब से काफी आगे निकल गए।

जब मंत्री को पता चला कि महाराज तो कहीं नजर नहीं आ रहे हैं। उन्होंने सैनिकों को आदेश दिया कि महाराज का पता लगाया जाए। सभी सैनिक महाराज की खोज में लग गए। परंतु उनका कहीं पता न चल पाया। अंततः थक हार कर सभी आधी रात को राजमहल पहुँचे, मगर महाराज राजमहल में भी नहीं थे।

सुबह तक यह खबर दावानल की भाँति पूरे राज्य में फैल चुकी थी। सभी महाराज मंगल किशोर जी की कुशलता हेतु भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। सबकी हार्दिक इच्छा यही थी कि महाराज जल्द से जल्द अपने राज्य लौट आयें। पूरा राज-परिवार भी शोक से व्याकुल था। किसी अनहोनी की आशंका से सबके मन त्रस्त थे।

तभी अचानक एक दरबान दौड़ता हुआ राजमहल पहुँचा। उसने सबको यह खबर दी कि महाराज राज्य की सीमा के अंदर प्रवेश कर चुके हैं। वे राजमहल की ओर ही आ रहे हैं। उनके साथ दो व्यक्ति और भी हैं। यह खबर सुनते ही पूरे राजमहल में खुशियों की लहर दौड़ गई। सबके चेहरे पर मुस्कान थी। लोग महाराज के स्वागत की तैयारियाँ करने लगे।

महाराज के आगमन की खुशी में उनका भव्य स्वागत हुआ। महाराज ने सबको यह सूचना दी कि वे पवनदीप व उसके एक साथी को समुद्री लुटेरों के चंगुल से सकुशल आजाद करा कर लाये हैं। हालांकि यह उतना आसान कार्य नहीं था। लेकिन महाराज ने स्वयं अकेले ही यह जोखिम उठाया। अब तो पूरे राज्य में महाराज मंगल किशोर की जय-जयकार गूँजने लगी।

जैसे ही यह खबर उस महिला के कानों में पड़ी, वह तो खुशी से फूली न समा रही थी। उसे तो ऐसा लग रहा था मानो संसार की सबसे बड़ी दौलत उसे ही मिल गई हो। वह भागी-भागी महाराज का जयघोष करते हुए उनके समक्ष उपस्थित हुई। उसने अपने बेटे को गले से लगा लिया। आँसू तो उसकी आँखों में अब भी थे परंतु ये तो खुशी के आँसू थे। महाराज ने तो उसे उसकी पूरी दुनिया ही लौटा दी थी। जिस चीज के लिए उसने उम्मीद ही छोड़ दी थी, वह उसे आज मिल चुकी थी।

शिक्षा: रख भरोसा, ना हार हिम्मत, होगा वही जो खुदा की रहमत, उसी ने बख्शी है हमें ये नेमत, है ये सब तो बस उसी की अमानत।

ऑडिट सप्ताह 2023 के दौरान पदयात्रा के आयोजन की एक झलकी

मेरी ख़ुशी: खिड़की पर दस्तक

हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी,
प्रधान महालेखाकर

अक्टूबर 2022:

अगरतला के नये कार्यालय में प्रवेश किया। अहमदाबाद की खुली हवादार जगहों की तुलना में मुझे अपने नये कमरे में बहुत अँधेरा लगा। कमरे की सारी लाइटें जल रही हैं, लेकिन खिड़की के पर्दे बंद हैं और उसके ऊपर के वेंटिलेशन को लकड़ी के तख्ते से पूरी तरह से बंद किया है। एक तो बिल्कुल अनजान जगह है और दूसरा न तो बाहर से हवा अंदर आती है और न ही रोशनी। अगर बाहर की दुनिया दिखाई न दे तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी जेल में बंद हूँ। ऐसा महसूस होता है जैसे कोई फंदे में फँस गया हो।

सबसे पहले मैंने पर्दे हटाये और सालों बाद कमरे में प्राकृतिक रोशनी आई। मेरी मेज़ के पास वाली खिड़की के बाहर एक आम का पेड़ फैलकर सारी रोशनी और हवा को खिड़की के बाहर रोक कर खड़ा है। मुझे पेड़ काटना कतई पसंद नहीं है।

मेरे लिए धर्मसंकट खड़ा हो गया। फिर उसकी एक शाखा कटवाई। अब रौशनी और हवा दोनों के लिए रास्ता खुला है। बाहर आँगन में बहुत सारे पेड़ हैं। कमरा भी थोड़ा खाली करवाया और अब खिड़की से बाहर देखने पर अच्छा लगा।

दिसंबर 2022:

इसी महीने एक दिन एक चमत्कार हुआ।

उस कटी हुई डाल पर एक छोटी-सी चिड़िया आकर बैठ गयी। क्या खिड़की के कोने में किनारे पर पुराने मकड़ी के जाल में खाने के

लिए कुछ ढूँढ रही है? ऐसा लगा कि रह-रह कर वहाँ उड़कर कुछ खाने की कोशिश कर रही है। काफी देर तक बैठी, उड़ जाती और वापस आ जाती। कांच की वजह से उसे अंदर नहीं दिख रहा है। मुझे उसे देखने और पहचानने का अच्छा मौका मिल गया। घर से कैमरा लाया और शानदार तस्वीरें लीं और फिर पता चला, अरे हाँ, यह एक Taiga flycatcher (माखीमार) है। यह छोटी-सी चिड़िया चीन के उत्तरी प्रदेश, पूर्वी साइबेरिया या तैगा क्षेत्र से अगरतला तक, एक लम्बा सफ़र तय करके आयी है।

यह काली और सफेद पूँछ वाला एक छोटा-सा पक्षी है। प्रजनन के दौरान नर की गर्दन पर नारंगी रंग का पैच होता है, जो हल्के भूरे रंग की धारी से घिरा होता है। मादायें ऊपर से भूरे और नीचे से मटमैली सफेद रंग की होती हैं। तैगा का गाना सीटी बजाने और किलकारी के साथ बहुत जटिल है। ये जंगली इलाकों में घोंसले बनाते हैं। यह विशेष रूप से शंकुद्रूम और मिश्रित पर्णपाती और पानी वाले क्षेत्रों को पसंद करता है। वह दिन भर खिड़की पर आती-जाती रहती है और हल्की-सी सीटी बजाती रहती है। मेरे मन में यह भी विचार आया कि यदि यह छोटी-सी चिड़िया साइबेरिया से इतनी दूर आ रही है, तो मैं तो अपने ही देश में हूँ, बहुत दूर नहीं आया हूँ। मेरा दिन आलोकित हो गया।

अगली सुबह वह फिर आई लेकिन ज्यादा देर तक नहीं रुकी। मैंने सोचा कि वह यहीं कहीं आसपास में होगी। लेकिन फिर वह दिखाई नहीं दी। शायद अगले साल वह फिर मुझसे मिलने आएगी। दिसंबर-2023, मैंने तैगा माखीमार के लिए काफी समय तक इंतजार किया। लेकिन वो फिर नजर नहीं आई।

फरवरी 2024:

पिछले कुछ दिनों से फिर खिड़की किसी चिड़िये की चहचहाहट से भरी हुई है। आवाज जानी पहचानी है और इसमें विभिन्न स्वर जुड़े हुए हैं। खिड़की में देखा तो जैसे एक पीली किरण। ओह, यह पीलक है। काले सिर वाला पीलक। इसका रंग अभी गहरा नहीं हुआ है, वह अपनी तरुण अवस्था में है। दोपहर से शाम तक वह एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक चक्कर लगाता रहता है। फोन से तस्वीरें बहुत अच्छी नहीं आतीं, तो अगले दिन मैंने कैमरे से कुछ फोटो खींच लिये। जैसा कि नाम से ही पता चलता है, इसका ऊपरी शरीर पीला है। सर पर काली टोपी और लाल चोंच है। इसका पंख सादा, हरे और काले रंग का होता है, जिसके मुख्य किनारे पर एक छोटी-सी सफेद पट्टी होती है। पीलक विशेष रूप से कम और मध्यम ऊँचाई वाले वर्षा वनों में पाया जाता है। दूसरे दिन, तीसरे दिन और

चौथे दिन भी पीलक आ गया। कितना अच्छा हो अगर इसका आना-जाना हमेशा चलता रहे।

खिड़की के शीशे ऐसे हैं कि दिन के समय बाहर से इसके अंदर दिखाई नहीं देता है, लेकिन बाहर से प्रतिबिंबित दिखाई पड़ता है। शायद यही कारण है कि वह शीशे में दिख रहे प्रतिबिम्ब को अपना प्रतिस्पर्धी समझकर चोंच मार रहा होगा। अजीब है ना? एक चिड़िया अपने ही प्रतिबिम्ब को नहीं पहचान सकती। वैसे हम लोग खुद को आईने में तो जरूर पहचानते हैं, लेकिन क्या हम सच में खुद को जानते हैं? क्या पता, किसे ख़बर है इसकी। लगातार काम के बोझ से थका हुआ मेरा हृदय एक अजीब-सी शांति से भर जाता है, जैसे रेगिस्तान में झरने से निकला मीठा पानी। कवि गुरु रवीन्द्रनाथ कहते हैं;

'तुमि सुखो जो दी नहीं पाओ, जाओ सुखेरो शोंधाने जाओ'

यदि तुम्हें ख़ुशी नहीं मिल रही है, तो ख़ुशी की तलाश में जाओ। कितनी सरल और आसान बात कह दी। हमारी समस्या यह है कि हम लोग हमेशा ख़ुशी का दरवाज़ा तलाशते रहते हैं और ख़ुशी हमारी खिड़की पर आकर दस्तक देती रहती है। लेकिन दरवाज़े के खटखटाने की आवाज के इंतजार में हमें खिड़की पर हुई दस्तक सुनाई नहीं देती। हमारी कल्पना में खुशियों की नदी बहती रहती है। लेकिन खुशी कहाँ नदी की तरह है? ख़ुशी तो है झरने जैसी। जैसे कभी-कभी झरना पहाड़ों और जंगलों के बीच कहीं दिखाई देता है और फिर गायब हो जाता है। जरूरत है ज़िंदगी के रास्ते में मिलने वाले झरनों के किनारे खुशियाँ बटोर लेने की।

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी,1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम,1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजातः

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियमः

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी में दिया जानाः हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोगः अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि की भाषाः कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)– सेवा संबंधी आदेश या सूचनाः यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्तिः

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी।
2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल

तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणताः यदि किसी कर्मचारी ने

1 मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

2 स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

3 यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञानः

यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई

अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

3. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए

जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण,प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदिः

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्वः

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-
   i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

राजभाषा संबंधी भारतीय संविधान के अनुच्छेदों का संक्षिप्त परिचयः

अनुच्छेद 343- संघ की भाषा

अनुच्छेद 344- राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

अनुच्छेद 345- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347- किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियम, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

अनुच्छेद 350- व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 351- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

अनुच्छेद 120- संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 210- विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

जाने वो कौन सा देस, जहाँ तुम चले गए

प्रियदर्शिनी सिंह,
हिन्दी अधिकारी

6 जून, 2023 का दिन था। कार्यालय में सब कुछ रोज की तरह ही चल रहा था। दोपहर का समय था। कार्यालय के पुस्तकालय में हम सभी हिन्दी कर्मी अपने काम में लगे हुये थे। अचानक ही एक हाई पिच की आवाज़ हम सभी के कानों में गूँजी। एक खुशमिजाज महिला किसी के साथ पुस्तकालय में आई और कुछ पूछने लगीं। थोड़ी देर में समझ आया कि ये सुश्री आरती हैं जिनका दिल्ली से अगरतला कार्यालय में वरिष्ठ अनुवादक के पद पर पदोन्नति के आधार पर ट्रांसफर हुआ है।

सुश्री आरती अपने भाई के साथ आईं थी। थोड़ी देर के पश्चात् मैं पुनः अपने अनुभाग में वापस आ गई। अगले दिन मेरे पास एक फोन आया और मुझे पुस्तकालय में आने को कहा गया। मैं जैसे ही वहाँ पहुँची, मुझे किसी ने बड़े प्यार से हँसते हुये एक मिठाई मेरे हाथ पर रख दी। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। फिर सामने वाले ने कहा, "मैडम, मेरा नाम आरती है। मेरा दिल्ली से स्थानांतरण हुआ है। मैं अपने शहर से सबके लिए मिठाई लाई हूँ।" मेरे लिए यह एक नया अनुभव था। 13 साल की अपनी नौकरी में मैंने किसी को भी अपने ट्रांसफर पर मिठाई खिलाते नहीं देखा था। मिठाई बहुत ही स्वादिष्ट थी। मैंने बड़े चाव से मिठाई खाई और मुस्कुराते हुये आरती की ओर देखने लगी। आरती पूरे जोश के साथ सबसे बात कर रही थी। उन्हें देखकर ऐसा लग ही नहीं रहा था कि उनका ट्रांसफर अपने घर से दूर हुआ है। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वो घर लौट आई हों। मन ही मन

मैं इसी सोच में डूबी रही कि ये लड़की इमोशनली कितनी स्ट्रॉन्ग है। किसी भी तरह की कोई शिकन उनके चेहरे पर नहीं थी।

मेरा रोज उनके साथ बातचीत का कोई नाता नहीं था पर हम जब भी मिलते ऐसा लगता कि पता नहीं कितनी पुरानी जान-पहचान है। अपने परिवार, अपनी बेटी से दूर होने का ख्याल हमेशा मेरे मन में रहता था। आरती, लाइब्रेरी में ही बैठती थी, इसलिए जब भी मैं वहाँ जाती, उनके साथ मेरी मुलाक़ात हो जाया करती थी और फिर शुरू होता था बातों का सिलसिला। उन्हें देखकर लगता ही नहीं था कि वो इतनी बड़ी हैं। एक दिन बातों ही बातों में उन्होंने मुझ से कहा कि, "मैडम, मैं आपसे भी बड़ी हूँ। मेरी नौकरी देरी से लगी है।" मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। आश्चर्य इसलिए क्योंकि उनका एनर्जी लेवल देखकर मैं सोच भी नहीं सकती थी कि वो मुझसे उम्र में बड़ी हैं। बातें करना उन्हें बहुत पसंद था। इस कोने में बात करती थीं तो उस कोने तक उनकी आवाज़ सुनाई देती थी। हमेशा हँसना और मज़ाक करना उनका एक अंदाज़ था। अपने इन्हीं गुणों के कारण बहुत ही कम समय में पूरे ऑफिस के लोगों के साथ उनकी जान-पहचान हो गई थी।

उनकी तत्परता के कारण उन्हें ऑफिस की किसी भी कमिटी में तुरंत शामिल कर लिया जाता था, और हर कमिटी में उन्होंने बखूबी अपने रोल को निभाया। चाहे स्वाधीनता दिवस के अवसर पर गीत गाना हो या ऑफिस के कैंटीन के लिए चीजें खरीदनी हों। वो तो जैसे थकती ही नहीं थीं।

अपने घर में आने का न्यौता भी दिया था पर कभी जा ही नहीं पाई। घर से जब भी खाना बनाकर लाती तो दोपहर के समय कैन्टीन में, जितना हो सके, लेडीज़ के साथ शेयर भी करती थीं। मुझे अपने हाथों का बना राजमा खिलाना चाहती थीं। इतनी खुशमिजाज़ थी कि हमेशा उनको उसी मोड में देखा है। अपने घरवालों की जब भी बातें करती तो खूब एक्साइटेड हो जाती थीं। अपनी बहन के बच्चों को बहुत प्यार करती थीं। हमेशा कहतीं

कि अगर दिल्ली का कोई भी प्रशिक्षण आए तो जरूर चलिएगा, मैं आपको अपना शहर घुमाऊँगी। जब भी घर जाती तो हम सबके लिए मिठाइयाँ और कुछ ना कुछ खाने को जरूर लाती थी।

कभी भी कोई उनके सामने निराश होता तो सबका मनोबल बढ़ाती थीं। उनकी एक आदत थी जो मैं हमेशा गौर करती थी। जब भी कोई अच्छी बात होती या हो सकती थी, वो हमेशा "टच वुड" कहकर अपने सिर पर हाथ लगाकर, हाथ को चूमती थीं। इसका मतलब था कि 'किसी की नजर ना लगे'। दिसंबर, 2023 के अंत में मेरा ट्रांसफर आने वाला था। अगरतला कार्यालय में तीन साल पूरे होने वाले थे। सबको कहती कि देखते हैं क्या होता है, पर मन के किसी कोने में चिंता खाये जा रही थी कि घर वापसी ना हुई तो? आरती मैडम हमेशा पूरे विश्वास के साथ कहतीं कि, "आप बिल्कुल निश्चिंत रहिए। इस बार आपकी पदोन्नति पश्चात् ट्रांसफर कोलकाता ही होगा। आप फिर से अपने परिवार, अपनी बेटी के साथ रह पायेंगी। उनके साथ समय बिता पायेंगी। उनके साथ ढेर-सारी नई यादें बनाइएगा।" मैं उनकी बातें सुनकर अपना सिर हिलाते हुये कहती कि, "भगवान करे आपकी बात सच हो। मैं आपको मिठाई खिलाऊँगी।"

दिसंबर, 2023 के अंत पर वे छुट्टी पर अपने घर चली गईं परंतु जाने से पहले मुझसे कह कर गई कि उन्हें पता है मेरा ट्रांसफर कोलकाता ही होगा, वो छुट्टी पर रहेंगी पर उनके हिस्से की चॉकलेट मैं देकर जाऊँ। 29 दिसंबर, 2023 को हमारा ऑर्डर आया और उनकी बात सच हुई। मेरा ट्रांसफर कोलकाता हो गया था। भगवान ने मेरी सुन ली थी। मैंने आरती मैडम को मैसेज किया। तुरंत ही उनका रिप्लाई आया। उन्होंने मुझे ढेरों बधाईयाँ दीं। अगरतला से आने से पहले उनसे मिलना नहीं हो पाया पर उनके हिस्से की चॉकलेट मैंने उनके हिन्दी अधिकारी को दे दी और कहा कि वे इन्हें आरती मैडम को दे दें। चॉकलेट मिलने की खुशी उन्होंने मुझसे जाहिर की थी।

बातें कम से कमतर होती गईं। अभी हाल ही में पूर्व एवं पूर्वोत्तर भारत के लिए राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 8 मार्च, 2024 को सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल) में होना है। इसी संदर्भ में मेरी और आरती मैडम की आखिरी बातचीत हुई थी। आरती मैडम सिलीगुड़ी आने के लिए बहुत उत्सुक थीं। मैं भी उक्त सम्मेलन में भाग लेने के लिए जा रही थी। हम सब खुश थे कि पुन: हमारा मिलना होगा, और फिर अचानक 23 फरवरी, 2024 को मेरे पास फोन आया कि आरती मैडम इस दुनिया में नहीं रहीं। मैं खबर सुनते ही सुन्न रह गई। कुछ क्षण के लिए तो कानों के सुने पर विश्वास ही नहीं हुआ, और फिर शुरू हुआ फोन का तांता। पता नहीं कितने लोगों ने फोन करके इस घटना की सत्यता जाननी चाही। क्या बताती मैं! मैं खुद शॉक में थी।

दिल इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं हो रहा था। उस दिन ऑफिस से घर जल्दी चली गई। घर जाकर खूब रोई। पता ही नहीं चल रहा था कि इतनी ज्यादा तकलीफ क्यों हो रही है। हम घनिष्ठ मित्र नहीं थे, ना ही हमारी बहुत बात होती थी। सही माइनों में हम सिर्फ सहकर्मी थे। जितनी बातें होनी चाहिए थीं, बस उतनी होती थी। अपनी तकलीफ का कारण जानने की बहुत कोशिश की। खुद से ही प्रश्न पूछा, बार-बार पूछा। कहाँ से लाऊँ उन अनगिनत प्रश्नों के उत्तर जिन्हें आप अपने साथ ले गईं। आप हमेशा याद आओगी। जाने वो कौन सा देस, जहाँ तुम चले गए।

ऑडिट सप्ताह 2023 के दौरान ड्रॉइंग प्रतियोगिता का आयोजन

भावभीनी श्रद्धांजलि

नाम: स्व. संजय सेनगुप्ता
पदनाम: वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म: 30 अगस्त 1964
मृत्यु: 09 फरवरी 2024

स्वर्गीय संजय जी का अचानक ही इस दुनिया को अलविदा कह देना सचमुच एक बड़ा आश्चर्य है, वे जीवन के अंतिम क्षणों तक कार्यालय में कार्य करते रहे और अचानक हृदयाघात होने से उनकी मृत्यु हो गई। यह हम सब के लिए तथा उनके शोक संतप्त परिवार के लिए बहुत बड़ी क्षति है। संजय सेनगुप्ता जी को हम सभी की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

नाम: स्व. जीवन दास
पदनाम: वरिष्ठ लेखाकार
जन्म: 05 जनवरी 1975
मृत्यु: 23 अगस्त 2023

जीवन दास, वरिष्ठ लेखाकार जो अब हमारे बीच में नहीं हैं, 48 वर्ष की उम्र में हम सभी को छोड़ कर चले गए। यह हम सभी और कार्यालय के लिए बहुत बड़ी क्षति है। वे काफ़ी दिनों से एक लम्बी बीमारी से ग्रसित थे। हम सभी उनकी असामयिक मृत्यु पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

नाम: स्व. आरती
पदनाम: वरिष्ठ अनुवादक
जन्म: 05 जुलाई 1983
मृत्यु: 22 फरवरी 2024

ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो इस दुनिया से रुखसत होने के बाद अपने पीछे प्रभावी इतिहास छोड़ जाते हैं और उनकी यादें हमेशा दिलोदिमाग में घर कर जाती हैं। आरती ने अल्पायु में इस संसार को अलविदा कह दिया। उनका असामयिक निधन हम सब के लिए तथा उनके परिवार के लिए बहुत बड़ी क्षति है हम सबकी ओर से आरती को अश्रुपूरित तथा भावभीनी श्रद्धांजलि।

आरती के साथ मेरा कार्य करने का अनुभव सिर्फ़ आठ महीने का ही रहा लेकिन इतने अल्पावधि में वह हमारे दिल तथा मस्तिष्क पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़कर चली गयी। उनका हँसता, मुस्कुराता व्यक्तित्व हमारी आँखों के सामने आ जाता है और मैं विश्वास ही नहीं कर पाता कि वह हमारे बीच में नहीं हैं। उनकी नेतृत्व क्षमता अद्भुत थी वो चाहे कार्यस्थल पर हो या उसके बाहर जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, हिन्दी पखवाड़ा, सरस्वती पूजा या अन्य राष्ट्रीय पर्व या कार्यक्रम हों, सभी में बढ़-चढ़ कर सहभागिता

करती थीं। अभी पिछले दिनों 26 जनवरी 2024 के अवसर पर हमारे साथ मिलकर उन्होंने बच्चों तथा महिलाओं के खेलकूद कार्यक्रमों को सक्रिय रूप से आयोजित करवाया।

मेरा मन यह सोचकर उद्वेलित हो उठता है कि ऐसा खुशमिजाज व्यक्तित्व अन्दर से कितना टूटा हुआ और दुःखी था। कोई भी व्यक्ति मानसिक रूप से किस दौर से गुजर रहा है, पता ही नहीं चल पाता है। उनकी इस मनःस्थिति को देखते हुए जगजीत सिंह की ये पंक्तियाँ याद आती हैं

तुम इतना जो, मुस्कुरा रहे हो
क्या ग़म है, जिसको छुपा रहे हो
आँखों में नमी, हँसी लबों पर
क्या हाल है, क्या दिखा रहे हो।।

-श्री अनिल कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

सहकर्मी आरती, वरिष्ठ अनुवादक के साथ कार्य करने का मेरा अनुभव महज सात महीने का ही रहा है। किन्तु इस अल्पावधि में ही वह हमारे जीवन में अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व की छाप छोड़कर पंचतत्व में विलीन हो गईं। वह कार्यालय के प्रति समर्पित, निष्ठावान एवं उदार हृदय वाली महिला थीं। उनके कार्य करने की शैली बहुत ही प्रशंसनीय थी, चाहे वह कार्यालयीन कार्य हो या कोई सांस्कृतिक अथवा राष्ट्रीय कार्यक्रम हो। हर प्रकार की गतिविधि या कार्यक्रम में वह बढ़-चढ़ कर सहभागिता सुनिश्चित करती थीं। वह स्वभाव से बहुत ही मृदु, आपसी सहयोग की भावना से परिपूर्ण एवं स्नेहशील थीं। मैंने जब से उनके साथ कार्य किया है, उन्होंने हर कार्य में मेरा मार्गदर्शन व उत्साहवर्धन किया। मुझे बहुत कुछ उनसे सीखने

का अवसर मिला, फिर चाहे वो कार्यालयी जीवन हो या दैनिक जीवन। मेरे साथ सदैव वह एक परिवार के सदस्य की तरह व्यवहार करती थीं न कि एक सहकर्मी की तरह। अपने स्वास्थ्य से ज्यादा वह हम लोगों के स्वास्थ्य के बारे में चिंतित रहती थीं।

यह सोचकर मेरा मन व्यथित हो उठता है कि इतना साहसी, बेबाक और प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व अन्दर से कितने अवसाद से भरा हुआ था कि किसी को भी उनके अवसाद का अनुभव नहीं हुआ। इससे यह समझ आता है कि किसी व्यक्ति के आन्तरिक मन:स्थिति को समझ पाना बहुत मुश्किल है।

आज एक सहकर्मी की सीट खाली पड़ी है। उनकी हँसी आज पुस्तकालय में नहीं गूँजती है। जब भी किसी कार्य को लेकर मैं जरा भी परेशान दिखता था, तो उनके यही शब्द होते थे-"किशन, तुम टेन्शन क्यों ले रहे हो, मैं हूँ न"। इससे मुझे एक प्रकार की स्फूर्ति प्राप्त होती थी। ऐसी स्थिति को देखकर मुझे ये पंक्तियाँ याद आती हैं-

"वह बिछड़ा कुछ इस अदा से कि ऋतु ही बदल गई,
इक शख्स सारे शहर को वीरान कर गया"।

आपका यह महान व्यक्तित्व अप्रत्यक्ष रूप से सदैव हम लोगों के बीच में मौजूदगी का अहसास कराता रहेगा और आप हम लोगों की यादों में सदैव रहेंगी।

आरती, वरिष्ठ अनुवादक को मेरी तरफ से अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि।

-श्री कृष्ण कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

आरती मैम, एक कुशल, कोमल हृदय और कार्यालयीन कार्यों में सदैव अग्रसक्रिय रहने वाली जिन्दादिल सहकर्मी थी। उन्होंने सदैव अनुभाग

में नारी शक्ति को सक्रिय एवं जीवंत रखा। मुझे हृदय से बहुत दुःख है कि आज वह हमारे बीच नहीं है। इस हृदय विदारक घटना को भुला देना शायद संभव नहीं हो पाएगा। उनकी स्मृतियाँ हमारे जहन में सदा यूँ ही बनी रहेंगी। आरती को भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित।

-ऊदल सिंह सोलंकी,
हिन्दी अधिकारी

'आरती,' यह नाम पिछले आठ महीनों से हमारे लिए उद्दीपन बना हुआ था। हम उस दर्द को महसूस ही नहीं कर पाए जो उसने अपने दिल में छुपाए रखा था। सभी के प्रति उसके आदर-सम्मान की कोई सीमा नहीं थी। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इतनी अच्छी आत्मा को समय से पहले क्यों चले जाना पड़ा। बस हम तो एक जिंदादिल लड़की को याद करेंगे। सारी उम्र भर जो अपने काम, अपने व्यवहार और अपने व्यक्तित्व से इतने कम समय में हमारी इतनी पसंदीदा बन गई थी। जब हमें यह बुरी खबर मिली तो हममें से किसी को भी इस पर यकीन नहीं हुआ था। हालाँकि उसके बारे में कहने के लिए समुद्र की तरह बातों की लहरें हैं तो भी मैं उनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं कह सकता क्योंकि मेरा गला दुःख से रुँध गया है।

आज भी मुझे अचानक ऐसा लगता है कि वह अपनी निर्मल मुस्कान और चमकती आँखों के साथ मेरा दरवाजा खटखटाएगी और पूछेगी, सर, आप कैसे हैं? मैं घर गयी थी, आपके लिये ये मिठाइयाँ लायी, लेकिन इन्हें अकेले न खाएं, ज्यादा मिठाइयाँ आपको नहीं खानी चाहिए, और फिर वह दूसरों को मिठाइयाँ देने के लिए दौड़ पड़ती थी।

पार्थसारथी चक्रवर्ती,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय में आयोजित पिकनिक की झलकियाँ

Shot on OnePlus

ALLEN SOLY

रियांग

रियांग, भारत की एक प्रमुख जनजाति है। यह त्रिपुरा में दूसरी सबसे अधिक आबादी वाली जनजाति है। अलग-अलग स्थानों पर इस समुदाय को ब्रू, रियांग अथवा ब्रू-रियांग नाम से संबोधित किया जाता है। रियांग समाज कट्टर वैष्णव हिन्दू है। ये अत्यन्त राष्ट्रवादी हैं, इनकी संस्कृति काफी उन्नत एवं परिष्कृत है। मतान्तरण, पश्चिमीकरण तथा मीजोकरण एवं भारतवर्ष के खिलाफ चर्च प्रायोजित षड्यंत्र का ये विरोध करते हैं। इस कारण चर्च के पादरी इनके खिलाफ रहते हैं।

वर्ष 1997 में जातीय तनाव के कारण बड़ी संख्या में ब्रू परिवारों ने मिज़ोरम से भागकर त्रिपुरा में शरण ली थी। त्रिपुरा में इन परिवारों को स्थायी शिविरों में रखा गया और उस समय इनकी संख्या लगभग 30 हज़ार थी।

बक्सनगर (त्रिपुरा)

त्रिपुरा के बक्सनगर में पाए गए बौद्ध वास्तुकला के अवशेषों को कई इतिहासकार 'हरिकेला' सभ्यता का संकेत मानते हैं। हरिकेला या हरकुला भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग में बंगाल क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन साम्राज्य था। मूलतः यह प्राचीन पूर्वी बंगाल का एक स्वतंत्र राज्य था, जिसका लगभग 500 वर्षों तक निर्बाध अस्तित्व रहा। यह पुरातन साम्राज्य वर्तमान बांग्लादेश के बड़े सिलहट क्षेत्र और चटगांव डिवीजन, चटगांव, कॉक्स बाजार, रंगमती, बंदरबन और खगराचारी और भारत के त्रिपुरा राज्य में फैला हुआ था।